हे बुक फुलवेटर पेपर
शिवाय होणार नाही.

ALANKARRUTNAKAR.

अलंकाररत्नाकर

वार्ता संबंधी अलंकारोंके
विषयमें

श्रीमन्महाराणा धीरवीर परमोदार
[illegible]ारता सागर गुण ग्राहक मेद
पाटेश्वर यावदार्य कुलकमल
दिवाकर श्री १०८ श्री
सज्जनसिंह अधीश
की आज्ञानुसार

पंडित वंशीधर वाजपेयीके अधिकार
से संवत् १९३८ विक्रम में

राजयन्त्रालय उदयपुरमें मुद्रित हुआ

पहलीवार ☞ ☜ फी जिल्द
५०० कपी ☞ ☜ मो ल१॥)

अलङ्काररत्नाकरकासूचीपत्र

—***—

भूमिका

—०—

ईश्वरने जगतमें नानाप्रकार के पदार्थ और भांति २ की सृष्टि बनाई है जिनके बरताव और सुभीते के निमित्त न्यारे २ कार्य रचेहैं जो उन पदार्थ और सृष्टि से संबंध रखते हैं जिनके गुण प्रभाव और स्वभाव भिन्न २ नियत हैं

उनके जाननेके निमित्त अनेक विषय और व्यवहार की विद्या और गुणोंके नानाप्रकार केग्रंथ बुद्धिमान लोगोंने परीक्षा और अनुभव के साथ बड़े परिश्रमसे बनाये हैं

जिनको अवलोकन और पढ़कर मनुष्य सब भेदोंसे भेदू होजाते हैं

इस लिये लोग उन ग्रंथोंके द्वारा विद्या और शास्त्रों में अभ्यास कर बुद्धि के विस्तार को दिनों दिन बढ़ाते हैं उस ज्ञान के विस्तार से जगत की संपूर्ण वस्तुके गुण दोषका ज्ञान और लिखने पढ़ने की शक्ति होजाती है

इस कारण सब लोग नवीन और दूसरे प्राचीन ग्रंथों के पठन पाठन में तत्पर रहते हैं और जो ग्रंथ लुप्त होरहे हैं उनके प्रचार और प्रकट करने में अति रुचि रखते हैं पर इस कार्य में धन बल और बुद्धि बल और उत्साह तीनों अपेक्षित हैं

जहां धन बल है वहां बुद्धिबल नहीं और जहां दोनों हैं तो उत्साह नहीं इसीहेतु यह ग्रन्थ कई पीढ़ियों से चला आता है इसके प्रचार को चाहते रहे पर प्रचार न होसका

अब श्री आर्य कुल कमल दिवाकर में तीनों बल विद्यमान हैं जिनकी दृष्टि इस अपूर्व ग्रन्थ में पड़ी उसी समय मुद्रित कराने में श्री स्वामी गणेशपुरीजी और मुख्याधिकारी कविराजा श्री श्यामलदासजी ने रुचि कराई जिस रुचिमें बुद्धिबल धनबल और उत्साहशक्ति सदा रहती है वहांसब काम बड़ी शीघ्रताके साथ पूर्णता को पहुंचते हैं

इसी लिये सब प्रकारके विद्यावान और गुणी जनोंके संचय करने में श्रीअधीश मेदपाटेश्वर को पूरा उत्साह रहता है फिर विद्या और गुणके व्यसनके निमित्त श्रीमुखसे ऐसी शिचा निकलती है कि साहित्य विद्याके बिना मनुष्य में मनुष्यता नहीं आती और साहित्य विद्या भी बिना अलङ्कार के सब अंगोंसे नग्न और भग्न रहती है

इसकारण अलङ्काररत्नाकर ग्रन्थके मुद्रित होनेके निमित्त श्री अधीशने सब प्रकार की सहायता राज यंत्रालय उदयपुर में बड़ी शीघ्रताके साथ दी जिससे यह ग्रन्थ बहुत शीघ्र छपा है

जिसका वर्णन संक्षेपसे कुछ करते हैं

श्रीसर्व शक्तिमान एकलिंगेश्वर के शरणागत महाराणा श्रीजगतसिंहजी के अधिकारके समय में जोधपुरके अगले महाराजा धिराज श्रीजसवन्तसिंहजी हुए जिनसे १० पीढ़ी पर महाराजा धिराज जसवन्तसिंहजी जो अब सुशोभित हैं ।

उन्होंने भाषा भूषण यह ग्रन्थ कुवलयानन्द आदि ग्रन्थोंके अनुसार रचा था जिसमें कवि वंशीधर व दलपतिराय ने श्रीमहाराणा जगतसिंहजीकी आज्ञानुसार प्राचीन कवियोंके कृतवा अपनी बुद्धिके अनुसार कवित्त सवैया वार्ता आदि उदाहरण रखकर माघशुक्ला पंचमी सम्वत् १७९८ विक्रमी में यह ग्रन्थ प्रकट किया जिसका नाम अलङ्काररत्नाकर रक्खा

उस समय में झगड़े बखेड़े बड़े रहते थे दूसरे यंत्रालय आदि के न होनेसे प्रसिद्ध न होने पाया

इसी प्रकार दस पीढ़ियों तक कोई हेतु प्रसिद्धता का न हुआ श्री महाराणा बैकुंठवासी श्री शम्भूसिंहजीसे आशा थी कि श्री जी इस अनमोल रत्नको प्रसिद्ध करेंगे परन्तु श्रीशंभूसिंहजी शंभूकासा बिहार संसार को दिखा कर जलदीही कैलाशको सिधार गये इस कारण अबतक मंजूषा के मध्यवर्ती मणि के समान यह ग्रन्थ छिपा रहा

अब अहो भाग्य इस मेदपाट देशके हैं कि जिस के स्वामी श्रीआर्यकुल कमल दिवाकर श्री१०८ श्रीसज्जनसिंह धीरवीर इस विचारमें रहते हैं कि जो वस्तु या विद्या उत्तम लाभ कारी और लुप्त हैं उनको अन्वेषण कर प्रसिद्ध करें इसी विचारसे नगर और ग्रामोंमें पाटशाला पुस्तकशाला और चिकित्साशाला आदि नियत हुई और होती जाती है

और इसी हेतु हरएक विद्याकी न्यारी २ सभा नियत हैं तिनमें पण्डित और कविजनों सहित बिराजमान हो महाराजा विक्रम के तुल्य गुण ग्राहकता करते हैं और सभ्य सुभटों को अपने २ उचित कृत्योंके उपरान्त विद्या अध्ययन और वृद्धिकी शिक्षा देते हैं जिसके विषय का पूर्ण सूचक निम्नलिखित कवित्त है

कवित्त

सङ्कर के सङ्कर ने सङ्ग समशत्रुनकों संगि सों सुवाए छ्वैसजाती जनछन्द सों। पीनरान पत्तानेउड़ाये अरिपत्ता सम प्रीतिपतभारखाना खान सुखकन्दसों। लोक कुलवेदलोक लूककाल व्याधा लखि उझत अनेक उन्हें उझत अनन्दसों। सज्जनबचाय रह्यो अज्जनको अज्ज ताकों विदितसजातिन विजातिन के वृन्दसों ॥ १ ॥

श्रीस्वामीजी महाराज व कविराजाजी ने साहित्यसभा के प्रबंधसे इस ग्रन्थमें जो अशुद्ध ताथी उसको शोधकर शुद्धकिया सो यहग्रन्थ श्रीजीहुज़ूर धीरवीर की आज्ञासे छपकर कविताके रसिक लोगोंको अलंकारकी सूक्ष्मता और कविताकी रचना का अधिक बोधक होगा

०—÷+÷—०

द: लाला सोहनलाल

अलंकाररत्नाकर

—०—

श्रीगणेशायनमः

अथ अलंकाररत्नाकर लिख्यते

दोहा

———

नमत सुरासुर मुकटमहिं प्रतिबिंबित अलिमाल। कियेरत सव नीलमनि सोगनेश प्रतिपाल ॥

॥ १ अथदेशाधिपवर्नर्नम् ॥

उदयापुर सुरपुर मनौं सुरपति श्रीजगतेस। जिन की छाया छत्रवस कीनौं ग्रंथ असेस॥ २

कबित्त

———

सकल महीपन के राजैं सिरताज राज पर उपकारी हारी भारी दुखदंद के। देव जगतेश धीर गुरुता गंभीर धरैं भंजन विपच्छ पच्छ दच्छ फौज फंद के। प्रभुता प्रकास अति रूप के निवास सोहैं प्रगट प्रताप ताप मेटैं जनव्रन्दके। मेघ से समुंदर से पारथ पुरंदर से रति पति सुंदर समान सूर चंद के ॥ ३

दोहा

———

जदपि नार सुंदर सुघर दिपत न भूषन

हीन। त्यौंन अलंकृति बिनु लसैं कविता सरस प्रवीन ॥ ४ ॥ कोने रस मय रसिक कवि सरस बढाय विवेक। छाया लहि गिरिवांन की भाषाग्रंथ अनेक ॥ ५ ॥ तदपि अलंकृति ग्रंथ कौंकाहू कवि नहिंकीन। भाषा भूषन है जऊ कहूंक लच्छन हीन ॥ ६ ॥ यातैं ताहि सुधारिकैं देख कुवलयानंद। अलंकार रत्नाकरसु किय कवि आनँदकंद ॥ ७ ॥ कहूं २ पहिले धरे उदाहरन सरसाय। कहूं नये करिकैं धरे लच्छन लच्छ जताय ॥ ८ ॥ अरथकुवलयानंद कौ बांच्यौ दलपतिराय। बंसी-धर कवि पैंधरे कहुं २ कवित बनाय ॥ ९ ॥ मेदपाट श्रीमालकुल बिप्र महाजन काय। बासी अमदाबाद के बंसी दलपतिराय ॥ १० ॥ करौं कविन सौं बीनती कविता जदपि अनूप। जऊ त्रिविक्रम हरित ज धर्यौ सुबा-मन रूप ॥ ११ ॥ याहि सुधारहु बुद्धि बल दोष हमैं जिनदेहु। धरे कविन के कवित बहु तिनहीं कौ गुन लेहु ॥ १२ ॥ कहुं सिंगार कहुं हास्यरस कहूं बीर कहुं भीति। कहूं रुद्र करुनां कहुंक कहुं अद्भुत कहुं नीति ॥ १३ ॥ इनैं आदिदै रस सकल बरने कविता अंग। कहूं २ क्रम बिनु धरे सोसो पाय प्रसंग ॥ १४ ॥ अलंकाररत्नाकरजु दयो नांम यह हेतु। च्यार तरंगन कौ रच्यौ अलंकार संकेतु ॥ १५ ॥ प्रथम पीठिका दूसरैं अलंकार सत-

जांन। रस प्रमांन तीजैं धरै चौथैं संकर मांन ॥ १६ ॥ जैसें नग को जोति मिलि कुंदन तें अधिकाय। अलंकार कहि कबित की यौं छबि दई बढ़ाय ॥ १७ ॥ जैसें रीझ जवाहरी लेत जवाहर पेखि। त्यौं कबि कोबिद रीझहैं अति अद्भुत श्रम देखि ॥ १८ ॥ गर्भ लोभ जस कौं न किय नहिं बिचार उपकार। अपुनें चित्त बिनोद कौं कीनौं यहै प्रकार ॥ १९ ॥ सतरैसै अठ्यानवैं माह पच्छ सितवार। सुभ बसंत पांचैं भयो यहै ग्रंथ अवतार ॥ २० ॥

इतिश्री मद्खिल बिद्वद्वृन्द पादार-बिंद मकरंद मलिंद दलपतिराय बिरचिते बंसीधर कवि कृतोपपुष्टा-वलंकार रत्नाकरे ग्रंथ पीठिका निरूपणो नाम प्रथमस्तरंग: ॥ १ ॥

दोहा

जिन प्रभुको सुमरन किये कटत पापकी रास। तिनके पद चित धरकहौं अलंकार परकास ॥ १ ॥

अथ उपमा अलंकार

उपमेय रु उपमांन कौ सो है धरम समान ॥ उपमा वाचक पद मिलैं उपमा होहिं सुजांन ॥ २ ॥

भौंहैंकुटिल कमांनसी सरसेपैंने नैंन ।
बेधत ब्रजबाला मनहिं बंसीधर दिन
रैंन ॥ ३ ॥

कवित्त

आछीके सुधाधर सौ लसत बिसाल भाल मंगलसो लालतामैं टीकोछबि भारीको। चाप सी कुटलभौंहैं नैंनपैंने सायकसे सुकसो उतंग नासा मोहैं मन प्यारीको । विंबसे अरुन बंसीधर रदछद सोहैं पेखप्रेम पास पखो चित्त ब्रज नारीको । चन्दसौ प्रकास कारी कंजसौ सुबासधारी सब दुख नासहारी आंनन बिहारीको ॥ ४ ॥

अथलुप्तोपमाअलंकार

दोहा

वाचक धर्म रु वर्ननिय अरु चौथो उपमांन ।इक विनु द्वै विनु तीन विनु लुप्तोपमा प्रमांन ॥ ५ ॥

काव्यछन्द

वाचकलुप्तएक १ धर्मलुप्तपुनिजानहु २ धर्मरुवाचकलुप्त ३ वाच्यउपमेयनठांनहु ४ उपमां नहीं पुनिलुपहु ५ वाच्य उप मांननराखहु ६ लुप्योधर्मउपमांन ७

एक उपमेय हि भाखहु ८ ॥ ६ ॥

दोहा

गज गामिनि मुखचंद सम कंजनयनि इक नारि। छबिसौं रति भजवति भई तर लइकंतनिहारि ॥ ७ ॥ वाको मिलन इकंतको रति सुख लाभ अपार। मयोकाक तालीय यह विनुदीनेंकु विचार ॥ ८ ॥

वारता

लुप्तोपमां के आठ भेद बाचकलुप्ता, १ धर्मलुप्ता २ उपमानलुप्ता ३ बाचक धर्मलुप्ता ४ बाचकोपमेय लुप्ता ५ बाचकोपमान लुप्ता ६ धर्मोपमान लुप्ता ७ धर्मोपमान बाचक लुप्ता ८ दूसरे तीसरे दोहानमैं उदाहरन गज गामिनि यहै बाचकलुप्ता नायकाउपमेय गज उपमान गतिधरम येतीनलीने हैं एक बाचक नहीं लीनों यातैं बाचक लुप्ता १ मुख चन्द सम यह धर्म लुप्ता मुख उपमेय चंद उपमान सम बाचक येतीन लीनेहैं उद्योत आल्हाद वर्तुलतादि धर्म मांझतैं कोउ धर्म नहीं लीनो यातें धर्म लुप्ता २ कंजनयनि यह बाचक धर्मलुप्ता प्रफुल्लता धर्म औरसें इत्यादिका बाचकको लोपहैं ३ छबिसौं रति भजवति इहां बाचकोपमेय लुप्ता क्योंकि इहां छबि पद करकैं अपनें आत्माकों छबिसौं रतिज्यों भज

वति ऐसो अर्थ होतु है सोइहां आत्मा उपमेय अरुज्यों वाचक इन दुहुन को लोप है याते वाचकोपमेय लुप्ता ४ काकतालीय इहां सेष ग्यारहु लुप्तोपमा है सो लिखियें हैं इहांकाक ताल शब्द क्रिया वाची हैं ज्यों काकको आव नो अरु ताल फलको गिरनों इनको अलग २ मूल अर्थ पाछे काक के आयबे सदृश्य अरु ताल फल के गिरबे सदृश्य ऐसें समास बाच कके लोपसों होयकें अकेठो काकताल शब्द ठहयो याते यहां नायका को तो जानो अरु तहांई नायक को आवनो ये उपमेय सो तो प्रतच्छ दोहा में लीनेई हैं अरु काक को तो जानो अरु ताल फल को गिरनो ये उपमान तिनको तो लोप हैं अरु सदृश्य २ इन दो वाचकन को तो समासमें लोप कीनो हैं अरु अंतके पदमें बिलुहोनेकु विचार ऐसो साधारण धर्म लीनों हैं सो लीजियें तो बाच कोपमान लुप्ता ५ अरु न लीजियें तो धर्मोप मान वाचकलुप्ता ६ अब काकताल शब्द सों आगे उपमार्थ छः प्रत्यय आयकें काकतालीय शब्द भयो इतनें काकताल सदृश्य ताकों काकतालीय कहियें जैसें गिरवेतें फयोताल फल कौवानें भख्यो तैसें एकांत लखि क्षुभित मैं नें नायका कों भुगती इतनों अर्थ निकस्यो याते इहां नायकनें नायकासों संभोग कीनो सो उपमेय सुतो रति सुख लाभ अपार या

पद करि कैं लीनौंहो हैं अरु काकनैं जो ताल फल भख्यौ सो उपमान ताको तो लोप क्यो हैं अरु बाचक तो छः प्रत्यय धर्योहो हैं अरु धर्म अंत के चरणमैं बिनुस्यो नेकु बिचार ऐसो धर्यो हैं सो लीजियैं तो उपमान लुप्ता न लीजियैं तो धर्मोपमान लुप्ता याठौर बहुत तोच्छन बुद्धि कर बिचार लीजियैं यद्यपि प्रस्तार सौं लुप्तोपमा के १४ भेद अरु एक भेद रूपकातिशयोक्ति को शेष पांच भेद शून्य या को प्रस्तारसूत्र

दोहा

गुरुकरि अंत लघूतलैं पहिलैं सोस समान। अंकान्विति क्रम भंग नहिं अंक प्रसर अभिधान ॥ १ ॥

अथ एक द्वादिक अंकक्रिया सूत्र

दोहा

क्रम उत् क्रम इक आदि दै तरऊपर दै अंक। अगले उत् क्रम अंक सौं गुनहरि क्रमहिं निसंक ॥ २ ॥ इहिबिधि आए अंकइक द्वैअं कादिकमांन। बुधि बल लेहु बिचारि कैं एहोजान सुजांन ॥ ३ ॥

अथ रचनाभेद

दोहा

एकआदिक क्रम अंक के ऊपर दुगुने अंक। धरिकैं सबनि मिलायकैं भेदकह्यो निहसंक ॥४॥

अथ मेरुसूचना

दोहा

एकादिक पंक्तिप्रथम इक २ अंकजुअंत ॥
पूरि और सिरअंकजुग अंकमेरु लहितंत॥५॥

उपमा ऽऽऽऽ

१	२	३	४
४	३	२	१
४	६	४	६

१ १ वाचक लुप्ता
२ २ धर्म लुप्ता
३ ३ उपमेय लुप्ता
४ ४ उपमान लुप्ता
५ १२ वाचक धर्म लुप्ता
६ १३ वाचकोपमेय लुप्ता
७ १४ वाचकोपमान लुप्ता
८ २३ धर्मोपमेय लुप्ता
९ २४ धर्मोपमान लुप्ता
१० ३४ उपमेयोपमान लुप्ता
११ १२३ वाचक धर्मोपमेय लुप्ता
१२ १२४ वाचक धर्मोप मान लुप्ता
१३ १३४ वाचकोप मे योपमान लुप्ता
१४ २,३४ धर्मोपमे योपमान लुप्ता
१५ १२३४

१			
२	१		
३	३	१	
४	६	४	१

मेरुर्जन्मिदम्

१	२	४	८	१५
१	२	३	४	

लुप्ता १ गज गामिनि

लु २ मुख चंद्रसम

० ०

लु ३ काक तालीय

लु ४ कंजनयनि

लु ५ छबिसोंरतिभजवति

लु ६ काक ताल

०

लु ७ काक ताल

०

० रूपकातिशयोक्ति

लु ८ काक ताल मृगनैनो

० ०

० ०

० ०

दोहा

—※—

कमल बदन सुंदर लसैं सखीकमल से पांय
धनुभ्रकुटी तिय की दिपैं कंचन वेलि
सुहाय ॥ ८ ॥

वार्ता

—+—

भाषा में नवमोंभेद उपमेय लुप्ताभी कहते हैं

विहारी

दोहा

पियबिछुरनकौ दुसह दुख हरख जात प्यौसार
दुरजोधन लौं देखियैं तजत प्रांन यहबार ॥ १०

टीका

—×—

दुरजोधनउपमान लौं वाचक प्रांन छोड़वो
साधारण धर्म कहेंहैं उपमेय नायका नहीं हैं
उपमेय लुप्ता भयो

दोहा

—+—

कोकिल कंठरु गजगवन सुंदर हैं
मृगनैंन ऐसैं उपमाजानियैं कहत
सुकबि रस ऐंन ॥ ११ ॥

टीका

पिक कंठकी उपमांन नहीं पिक कौ कंठ

२ को उपमान हैं सो यहां नही हैं पिक कंठीमें जो कंठ हैं सो उपमेय हैं उपमान जो पिक को कंठ ताको लोप हैं उपमा वाचो सो शब्द नहीं हैं मनोहर धर्म यहां नहीं हैं नायका विशेष हैं नायका उपमेय नहीं यहां केवल कंठ उपमेय हैं धर्म उपमान वाचकलुप्ता सुंदर हैं मृगनैन मृगके नैनसे याकेनैन सुंदर हैं मृग उपमान नहीं हैं मृगके नैन उपमान हैं वे इहां नहीं हैं मृग हीकों कोई उपमान नेत्रन के कहते हैं तहां या बिहारी के दोहासों बिरोध होय हरिनी के नैनानतें हरिनी केएनैन ॥ १ ॥ बाचक नहीं हैं सुंदर धर्म हैं उपमान बाचक लुप्ता यह श्रौतीहैं

अथआर्थी

दोहा

जो अर्थहिसों होत हैं आर्थी उपमा ऐन। चंद्रसत्रु मुख बांमतुव सुधा बंधुहैं बैन ॥ १२ ॥

टीका

बरोबर को शत्रु होतु हैं चंद्रमाको शत्रु मुख हैं बरोबर को यह अर्थ सों निकरतु हैं ऐसें बचनसुधा को बंधु २ बरोबर को होतु हैं मित्र वादी बराबर का जानियैं

बिहारी

दोहा

नीचहियैं हरखेरहैं गहैंगैंदकी पीत । जेती माथे मारिये तेती ऊंचो होत ॥ १३ ॥

टीका

—※—

गैंदकी तरह साहश्य गहैं हैं अर्थात् गैंद से जानियैं यहां श्रौती हैं जहां साहश्य शब्दमैं आवैं तहां श्रौती जहां साहश्य शब्द मैं न आवैं लच्छनां करनी परैं तहां आर्थी उपमा ॥ १ ॥

मालोपमाअलंकार

दोहा

—※—

दूजकी उपमा बहुत जहं मालोप महैं ऐंन । सफरी खंजन कंजसे हैं प्यारीके नैंन ॥ १४ ॥ रसनोपम जहां वन्य हो होत जात उपमांन । कुलसी मति २ सौजुमन मनहो सौ गुरु दांन ॥ १५ ॥

अथअनन्वयअलंकार

दोहा

उपमेही उपमांन जब कहत अनन्वय

ताहि। तेरे सुखकी ओरिको लेरोकी
मुख आहि ॥ १६ ॥

कवित्त

—※—

पंकज सछिद्र तज रज लपटाने रहैं कंटक के संगी अति भ्रंगी पांन धारोई दोषा कर छीनरोगी राहुनैं उगल डार्यो कालिमा कलं को अंकीतपन तैंहारोई एतो मुख अमल अनूप सदा बिकसत बंशीधर कवि कहैं रमां मांन टारोई सुनियैं सुजांन वृषभांन को दुलहारी प्यारी आनन तिहारे सम आनन तिहारोई ॥ १७ ॥

उपमेयोपमांअलंकार

दोहा

उपमालागैंपरस्पर सोउपमाउपमेय
खंजनहैंतुवनैंन से तुवदृगखंजनसेय
॥ १८ ॥

दोहा

—※—

सुधावैंनसीसंतके वैंनसुधासममांन । वैंन खलन के विषहि से बिष खल वैंनसमान ॥१९॥

प्रतीपअलंकार

दोहा

सोप्रतीप उपमेय कौं जबकीजैं उप·

मांन । लोयन से अंबुजबने मुख सौ चन्द्र बखांन ॥ २० ॥

सवैया

तुव नैंनन से नव नीरज हे तिनकौ कुल लै जल मांझ डुबायौ । तुव आंनन सौ रज नी करही सु चहौं दिस घेरि घनाघन छायौ । तुव चालसे बाल मराल जु हे तज या वनकौं वन और वसायौ । तुव अंगनकौ अनुहार निहारिहौं जीवत सौ विधिकौं नहिं भायौ ।२१।

इतिवंसीधरस्य

दोहा

उपमेकौ उपमांनतैं आदर जबैंन होय । गरब करत मुखकौं कहा चन्दहि नीकौं जोय ॥ २२ ॥

कवित्त

बार सुकुमार औलिलार भौंहैं नैंन नासा दंतन की दमकन कीजे एती तेहरी । अधर सुधर कंठ कठिन उरोज नाभि लंक कौनकौजै सुरमेट नैंन नेहरी । प्यारी ऐसे अंगनि गुमांन करैं काहे ऐसैं और ह्र अनेक छवि धरत अछेहरी । केकी कलानायक कमांन कंज कीर कुंद कुसुम किंदूरी कंबु कोक कूपके हरी ॥ २३ ॥

दोहा

अन आदर उपमेयतें जब पावें उप मांन। तिच्छन नैंन कटाच्छतें मंद कामके बांन ॥ २४ ॥

दोहा

पाहन जिय जिन गरबधर हौंहीं कठिन अपार। चित दुरजन के देखियें तोसे लाख हजार ॥ २५ ॥

दोहा

—*—

उपमेकैउपमांनजब समतालायक-नाहिं अतिउत्तमहगमीनसे कहेकौंन-विधिजांहि ॥ २६ ॥

कवित्त

—*—

आनँद को कंद मुख तेरो तासमांन चंद कैसें बलि कीजियें कलेश नामधारी हैं आठहो पहर कर तेरेतापहर कंज तपनको बंधु कैसें होत अनुकारी हैं तेरी सुखदाई देह ताकेतो न समहोत केसर सरस कहि-यतु कंटुवारी हैं सेनापति प्रभू प्यारी तूंतोहैं अनूप नारी तेरी उपमा को भांति जात न बिचारी हैं ॥ २७ ॥

लोचन लहेको सुख सफल हमारो कर प्यारो प्रांनपति कों सनेह रस लीन कर तेंहीपाई परम निकाई की अवधि वृषभांन की कुमारि अब एतो अरवो न कर टारपट गूंघट को हा २ हैं उवार मुख निज तन पानिप में पी के नैंन मीन कर कंज छवि छीन कर सखिहिं मलीन कर सौतिन कों दीन कर प्यारे कों अधीन कर ॥ २८ ॥

इतिराधा कृष्णमाधुरस्य

दोहा

—❀—

व्यर्थहोंहिं उपमांन जब बर्ननीय लखसार दृग आगें मृग कछुनहीं पंच प्रतीप प्रकार ॥ २९ ॥

कवित्त

कोमल कमल मुखी तेरे ए जुगल जांनु मेरे बलवीरजू के बल कों हरतु हैं सौरभ सुभाय अरु रंभाते सदंभ सुभा केशव करभहुको आभा निदरतु हैं कोटि रतिराजू सिरताज व्रजराज की सों देखि २ गजराज लाजनिम रतु हैं मोचि २ मद रुचि सकल सकोच सोच सुधि आए सुंडन को कुंडली करतु हैं ॥ ३० ॥

दोहा

—॥—

हैरूपकद्वै भांतिको मिलितद्रूपअभेद।
अधिकन्यूनसमदुहुनके तीन २ ए
भेद॥ ३१ ॥

दोहा

—॥—

मुख ससि वा ससि तैं अधिक उदित जोति दिन रात। सागरतैं उपजी न यह कमला अंपर सुहात॥ ३२॥

नैंन कमल ये ऐंन हैं और कमल किहिं कांम। गवन करत नीको लगत कनक लता यह वांम॥ ३३॥

तूहैं राधे उरबसी धरैं मानुषी देह। तुव मुखपंकज विमल अति सरस सुवास अछेह॥ ३४॥

वार्ता

उपमेय जे मुखादिक तिन्हैं उपमांन जे चन्द्रादिक तिनसों एकता कर वर्नन करनों सो रूपक अलंकार हैं तिनके दोय भेद उपमेयको प्रसिद्ध उपमांन सौं जुदोई उपमांन कर कहनो सो ताद्रूप अरु प्रसिद्ध उपमां नहीं करि कहनो सो अभेद रूपक फेर

एक २ के तीन २ भेद उपमान सौं उपमेयकी अधिकाई होय सो अधिक हीनता होय तौ न्यून समता होय तौ सम इनके छ: भेद भए ॥ १ ॥

कवित्त

—*—

विकसत कंजन की रुचि कौं हरत हठ करत उदोत छिन २ हौं नवीनो हैं ॥ लोचन चकोरन कौं सुख उपजावैं अति धरत पियूख लखैं मेटि दुख दीनो हैं ॥ छवि दरसावैं सर-सावैं मीन के तन कौं तोपैं बुध हीनविधि काहे विधु कीनो हैं ॥ एहो नंद २ प्यारी तेरी मुखचंद यह चंदतैं अधिक पंक अंक कौं विहीनो हैं ॥ ३५ ॥

सवैया

लसैं द्विज ओरहिं मुत्तियमाल पयोनिध मैं उपजे नहिं जो हैं । भये न सरोवर अंबुज औरैं सुलोचन नाह मलिंद कौं मोहैं । सरोरुह मैं न रहैं अरु लच्छ प्रतच्छ सुलच्छनि तो सम को हैं । सदा परिपूरन तो मुख राधे सुधाधर औरैं धरा पर सोहैं ॥ ३६ ॥

इतिवन्सीधरस्य

कवित्त

कहा इतरात जात आवो एहो कहौं बात सुनैं मनिकंठ सुष गातन समायगो । छोरी वेस

भौरैं भाय चोरैं चित्त लेत लंक कुंडल झलक हरैं हियरा हिरायगो। तुम कान्ह सांवरे सिधार नैंकु देखो कुंज मेरो गोरो कान्ह लखि मन ललचायगो। ग्रीवा की लटक अरु भौंहैं को मटक चारु चोरे की चटक मैं अटक मन जायगो ॥ ३७ ॥ एतीनहू अधिक न्यून सम ताद्रूपके उदाहरन

अथ अभेदरूपक

दोहा

रहैं सदा विकसत विमल धरैं बास मृदु मंजु। उपज्यो नहिं पुनि पंकतैं प्यारीको मुख कंजु ॥ ३८ ॥

सवैया

—०—

है चतुरानन पास रचे जग जंतु के बंधन काज परैं। कंचन कांमनि के पर पंच लपैं मुनिको मन ध्यान टरैं। तीन हुहूनमैं जोजन नाहि अधीन सबैं लिहिं पाय परैं। सोई सदा शिवकोसु सरुप अनूपम मानुष रूप धरैं ॥ ३९ ॥

इतीवंसीधरस्य

कवित्त

—+—

अरुन हरील नभ मंडल मुलक पर चढ्यो अक्क चक्कवै कतारलैं किरनकोर। आवत ही सांपिंत नछत्र जोर धाय २ घोर घमसान कर

कांम आए ठोर ठोर। ससि हर सेतभयौ सटक्यौ सहिम ससि आमल उलूक दुरे गिरि कंदरन ओर। इंद देख अरबिंद बंदीखाने तैं भगाने पायक पुलिंद जे मलिंद मकरंद चोर ॥ ४० ॥

पावस दरोगा पेले पवन महावत दैं कारे २ झूमत ए जुत्थन पठाएहैं। लसैं बक पंति दंति गरजनि घंटा धुनि धुरवा सुंडिन जल सींच २ नाए हैं। इद्र को धनुष सीस चित्र रंग दामिनि सो अंबर जरीके ओटि २ चमकाए हैं। आज बृंदावन स्यामांस्यांम आगैं सखी सुख मदन के गजराज मुजराकों आंएहैं ॥ ४१ ॥

अंबर सरोवर मैं डारगज़ बीबौ जाल तारा दुति तरल तरंग फंदवाएहैं। भृगु कुज शनि वग्र चकवा कुलंगपर कैरवनिकर भौंर आजते उड़ाए हैं। खेवट कलंक लियैं क्रतिका सखां ढिंग कूतर अरुन दंड किरन तनाएहैं। कांम नर राज मांन मीन की सिकार काज आज सीत दीधति सतेसा चढ़ि आएहैं ॥ ४२ ॥

घेरिकैं गगनबन तारागन भट भोर जौन्हि जाल रोपकैं बनाय छबि सारकौं। माते मकरंद पाय कुमुदनि कांनन के छुटे भैंसा भौंर धर गरब अपारकों। बोलत करोल चहुं ओरतैं चकोर चढ़ि कुंजर उदयगिर झरैं मद धारकौं। आयौ साह सीतकर सझि सब साझ अंसु-बांध समसेर मांन सेर की सिकारकौं ॥ ४४ ॥

इतिदलप्रतिरायस्य

परिनामअलंकार

दोहा

—*—

करैं क्रिया उपमांन ह्वै वर्ननीय परिनांम। लोचन कंज विशाल तैं देखत देषी बांम ॥ ४४ ॥

वार्त्ता

—※—

जहां उपमांन क्रिया साधन कौं समर्थ न होय तहां वाही उपमेय सौं एक रूप कर क्रिया साधैं तहां जैसैं कंजसौं देख वेकी क्रिया बनै नहीं तातैं वाही नेत्र सौं एकरूप कीनौं इतनैं देख बोबन्यो

दोहा

—+—

पतिप्रातहि आए सदन कहुं रैन सरसाय। चातुर भौंह कवान की सैंनन कहत जताय ॥ ४५ ॥

उल्लेखअलंकार

दोहा

सोउल्लेखजु एक कौं बहु समझैं बहु रीति। अरथिन सुरतरु तिय मदन अरि कौं कालप्रतीति ॥ ४६ ॥

कवित्त

—*—

नवल नवाब खाना खान जू तिहारे डर बैरी बिडराने धुनि सुनिकैं निसानकी। तिन हूकी रानी फिरैं थकी बिललानी सबछूटी राजधानीसुधि खानकी नपानकी। कहूं मिली हाथिन हरिन बाघ बानरनि तीनहींतैं रच्छाभ ई उनहींके प्रांनकी। सची जांनी गजनभवांनी जांनी केहरिन मृगन मयंक जांनी २ कपि जांनकी॥ ४७॥

दोहा

—*—

बहु विधि बरनैं एक कौं बहु गुन सौं उल्लेष। तूं रन अर्जुन तेज रवि सुर गुर बचन विशेष॥ ४८॥

कवित्त

— + —

कविन को राजैं भोज ओज को सरोज बंधु दीन को दयाल दान सिंधु सीलको जिहाज। कोटि कांम सुंदरहैंसाहिबी पुरंदरहैं मंदिरहैं बेरिबल वारिधि मथन काज। जंगमध जालम विलंद कुल आलम को बालम धराको सब सूरन को सिरताज। बिक्रम अपार सत्य सुजस को पारावार भारी भार थंभन समत्थ साह्न महाराज॥ ४९॥ इतिचिंता मणि

अथ स्मृति १ भ्रान्ति २ संदेह ३ अलंकार

दोहा

—※—

सुमरन भ्रम संदेह ए लच्छन नाम प्रकास ॥ सुधि आवति वा बदन की देखैं सुधा निवास ॥ ५० ॥

दोहा

—※—

बदन सुधानिधि जानिकैं तुव संग फिरत चकोर । बदन किधौं यह सीतकर किधौं कमल भए भोर ॥ ५१ ॥

कवित्त

—।—

अबहीतो दिन दस बीते नांहि नाह चलें अब उठआई कह कहां लौं बिसूरहैं । आवौ-खेलैं चोपर बिसारैं मतिराम दुख खेलनकौं आई जान बिरहकौं चूरहैं । खेलतहीकाहू कह्यो जुग जिन फूटौ प्यारी न्यारीभई सारी को निवाह हौंनों दूरहैं । पासे दियेडार मन सांसे ही में बूड रह्यो बिसर्यो न दुकद दुख-दूनों भरपूर हैं ॥ ५२ ॥

कविन के द्वारैं करीडारैं मदधारैं तवैं बांधि कैं कतारैं भौंर भौर घेरियतु हैं । कबिवरराज भौरी भामिनि निकर तापैं निगड भरम

भूलि हाथ फेरियतु हैं। अंबुज के धोषें अलि लागें उडतीय कर त्यौं २ वह पिय २ कहि टेरियतु हैं। हरषि२ हंसि २ श्रीउद्योत चंद्र रावरे यौं हाम के तमासे हेरियैतु हैं ॥ ५३ ॥

किधौं सिसुताई के पयांने के सिस्याने ताने सुंदर सुधारो पट कुटिका हैं लाज की। कोकसाला रूपकी कि कामही की सेज किधौं बलभद्र कोमल कुलह कांम बाज की। मोहनी को जाल किधौं बह्यौं अमी कुंभनतैं ढारोहैं अंधारी किधौं मैंन गजराज की। गोरे २ गोल कुच तेरे नील कंचुकी कि पहरी सिलह रतरन के समाज की ॥ ५४ ॥ किधौं यह देश घन घुमड़न बरषत किधौं मकरंद पंथ नदी नद भरिगे। किधौं पिक चातक चतुर चक्रबाक उड़े किधौं मत्त दादुर मधुप मोर मरिगे। तूं तो कहैं आवत हैं आवत न मेरी आली कांमकर निकर महीतें धौं निकरिगे। किधौं पंचसर हर फेरिकैं भसम कीन्हीं किधौं पंचसरजू कि पंचसर सरिगे ॥ ५५ ॥

अपन्हुतिअलंकार

दोहा

धरम दुरै आरोपतैं सुद्धा पन्हुति जांन। उरपर नाहिं उरोज ए कनक लता फलमांन ५६

वार्त्ता

—:—

एक वस्तु में एक धरम मिटाय वाकोठौर और ही धर्म ठहरानो सो शुद्धा पन्हुति। जैसें उरोजन को उरोज पनो मिटाय फलपनो ठहरायो

कवित्त

—:—

मदरा न हौंहिं दल आए मैंन भूपति के बूंदैं एन हौंहि एरी बांन झरी आईहैं। दादुर न हौंहिं ए नकीब चहुंओर बोलैं मोर एन हौंहिं हाक सूरन सुनाईहैं। बक एन हौंहिं स्वेत ध्वजैं भगवंत सिंध चपला न हौंहिं समसेर चमकाई हैं। बालम बिदेश यातें बिरहनि मारिबेकों जिगनूं न हौंहिं कांम जांमगी जगाई हैं॥ ५७॥

सवैया

※—※—※

लच्छन तिच्छन भांजु उयो चल फूंखतरैं जहां दुक्खनसैंरे। देखो मयंक मयंक नहीं यह बंस हमारे कलंक लसैंरे। हैंनलिनी मलनी मुखमुद्रित कंतके दोषतें लाजबसैंरे। शत्रुको भंग बिलोकि कैं गंग जितैंतित कैरव बृन्द हसैंरे॥ ५८॥

हेत्वापन्हुति

दोहा

वस्तु दुरावैं जुक्तिसौं हेतु अपन्हुति सोय। तिच्छन चंदन रैन रवि बड़वा नलहैं जोय ॥ ५९ ॥

दंडक

नाहीं सीत दीधति सुकरत न तापतन रैन कौ कहांतैं रवि उदयौ जगग जगग। यहै अति क्रूर बड़ौ हृदय संतायौ पापी देखतहीं जाकै होत हियरा धगग धगग। निरखौ नैकु यह विरहिनि बाला मुख चन्द गहिवेकै काज लालच लगग लगग। ग्रस्यो द्विजराज जाके पापके समाज भयौ कोढ़ो तमराज आज आवत दगग दगग ॥ ६० ॥

इतिदलपते

पर्यस्तापन्हुति

दोहा

पर्यस्तजुगुन औरकौ औरविषै आरोप। हौहिं सुधाधर नाहिं यह वदन सुधाधर ओप ॥ ६१ ॥

वार्ता

एक वस्तु मैं एक धर्म कौं निषेधि तिहिं धर्म कौं और ही ठौर ठहराइयैं सो पर्यस्ता पन्हुति जैसैं चन्द्र मंडल मांहिंसौं चंद्रपनौं निषेध मुखमैं ठहरायौ

कवित्त

—०—

तुम करतार जग रच्छाके करनहार पूज
वनहार मनोरथ चित चाहिके । यहैं जियजां
नि सेनापति हौं सरन आयौ ह्जियैं दयाल
मोहि ताप दाप दाहिके । जोऊ कोऊ कहैं
तेरे करम न ऐसे हम गाहकहैं सुकृत भुगति
रस लाहिके । आपने करम करहींहीं भुगतौं
गो तब हौंहीं करतार करतार तुमकाहेके ६२

हेतुपर्यस्तापन्हुति

वार्ता

—॥—

पर्यस्तापन्हुतिही मैं युक्तिसौं अर्थ समर्थ न होय तौ हेतुपर्यस्तापन्हुति कहियैं

कवित्त

कोउ हलाहल कों जुकहैं विष बोरे कहैं मति मूढ़ कुभाजन । मेरेतो जांनें रमाविष हैं लहरें अति दौरत जाको सदा मन । ताको प्रमांन प्रत्यच्छ प्रकास कहैं कविकोविद देखि पुरानन । खायकें जागत संभुविषैं हरिसोवत हैं परसैं जुरमातन ॥ ६३ ॥

भ्रांतापन्हुति

दोहा

भ्रांतापन्हुति वचनतैं भ्रमजव परको जाय । ताप करत हैं ज्वर कहा नांस खि मदन संताय ॥ ६४ ॥

कवित्त

चन्द जिनजांन भाल सोहत तिलक यहै गंग जिन जांन सीस मोती मांग भरी हैं । रसिक नजांन यह बाघंबर हेमरंग केसरी बसन मृगमद बूंटी करी हैं । भसम भुरायी जिन भूलैं अंगचन्दन हैं व्याल हिन जांनमाल मोतिन की धरी हैं । एरे मार हरजूके धोखें मत मार मोहि काहे सतरात चूक मो मैं नाहिं परी हैं ॥ ६५ ॥

वार्ता

—०—

पहिले उदाहरन में भ्रम सांचो है दूसरे में कल्पित है

छेकापन्हुति

दोहा

—०—

छेकापन्हुति जुक्तिकर परसों बात दुराय । करत अधर छत पियकहा सखी सीत रितु बाय ॥ ६६ ॥

कवित्त

—०—

भौरभयें आवत निकुंज मधि मंद २ परसत वेग बाटैं पुलकसरीर हैं । अंग २ कांपैं जऊ जतन नढांपैं तऊ लेत ऐंचि अंचरकों आली अति धीर हैं । मोसौं जो छिपावति सो पावति हों कौतुक कौं करें कुटलाई कहा जांन्यों बलवीर हैं । तेरी सौं न बलबीर जमुना को तीर जबें जात नीर काज तबें लागत समीर हैं ॥ ६७ ॥

इतिदलपते

दोहा

—०—

रहीरकीक्यौंहूं सुचलि अधिक राति पधारि
।हरततापसबथौसको उरलगितीयउयारि ६८

कैतवापन्हुति

दोहा

कैतवपन्हुति औरकैं मिसकर बर्नन आंन। तिच्छन तीय कटाच्छ मिस बरषत मन मथ बांन ॥ ६९ ॥

सवैया

—०—

भांनुउतैं अथयौतजतेज इतैंजगनूजग जोत-
करैं। मौंनमराल गह्यौतत्काल उलूक अमंद
अनंद धरैं। कोकहियैं अति सोक बध्यौ तम-
लोक के लोयन आंन अरैं। या दुखतैं रिसकैं
बिषकौं नलिनी मिस भ्रंगके खातहरैं ॥ ७० ॥

उत्प्रेक्षाअलंकार

दोहा

—०—

उत्प्रेछा संभावना वस्तु हेत फल इद्ध। पहिली उक्त अनुक्त हैं पिछली सिद्ध असिद्ध ॥ ७१ ॥

दोहा

कोकिन के विरहागकी धूमघटा तम मांनु अंजन बरषत गगन यह मानौं अथयैं भांनु ॥ ७२ ॥
मनौं कठिन आंगन चली तातैं राते पाय। मुखसम नहिं यातैं मनौं चंदहि छाया छाय ॥ ७३ ॥ मनु कुच धरवे कौंत्रवलि बांधी कमर कसाय । तुव पद समता कौं कमल जलसेवत इक पाय ॥ ७४ ॥

वार्ता

उत्प्रेक्षाके तीन भेद बस्तूत्प्रेक्षा हेतूत्प्रेक्षा फलोत्प्रेक्षा वस्तूत्प्रेक्षा कौं स्वरूपोत्प्रेक्षा हूकहतेहैं ताके दोयभेद उक्त बिषया अनुक्तबिषया कोकिनके विरहागकी यह उक्तबिषया क्यौंकि तममैंधमकी उत्प्रेक्षा कीनी तहां विषय तम बिषई धूम ए दोई कहेहैंयातैं उक्त बिषया अंजन बरषतगगन यह अनुक्तविषया भुवनमैं तमफैलत सोमांनौं गगन अंजन बरषत ऐसो अर्थ ठहस्यो तामैं तमको फैलबो यहनाहीं कह्यो केवलअंजन बरषबोयह बिषईही कह्योहैं यातैं अनुक्त बिषया हेतूत्प्रेक्षा केदोयभेद सिद्ध बिषया अरु असिद्ध बिषया मनौं कठिन आंगन चली यह सिद्ध बिषया क्योंकि नायका को जोत्रसा धारण रूप सोई

हेतु तासौं पाय रातेहैं तहां चल बौहेतुमांन लीनौं सोप्रतच्छ नायका चलत होहैं यातैंसिद्ध विषया और मुख सम नहिं यह असिद्ध विषया क्यौंकि चंद्र मंडलमैं स्वभाव होसौं छायाहैं तहां नायकाके मुष सम होंनहींहों यह सोच कौहेतु मानं लीनौंसो चंद्रमांमैं हैंनहो कवि नैं झूठें ठहराय लीनौहैं यातैं असिद्ध विषया फलोत् प्रेक्षामैं द्वैभेद सिद्ध विषया असिद्धविषया मनु कुच धरवेकौं यहां सिद्ध विषया क्यौंकित्रबलिसौंछीन कटिकौं बांधवौ ताकौ प्रयोजन कुचनकौ धरवौ मांन लीनौं सोहैंद्दे क्यौंकि तिय कुचनकौं धरतहो हैं यातैं सिद्ध विषया तुवपद यह असिद्ध विषया क्यौं कि कमल कौ जल सेयवेकौ फल जन्मांतर मैं तिय पद समता मांन लीनौं सो अचेतन कमल कौं संभवै नहीं यातैं असिद्ध विषया याहो क्रमसौं फेरहु उदाहरन

कवित्त

रति विपरीत मृगनैंनीकी विराजैं बैंनी कनकलतायैं ज्यौंभुजंगी लहरतुहैं । स्वेद कन गिरत कपोलन सुकंदलाल मांनौं तम देखि इंदु अमी छहरतुहैं । खुटलासमीपरा जैं लोलचल दल २ कंचन वे तंनप्यारो त्यौं २ थहरतु हैं । नेजाबरदार इंदु अंसुन लगायैं मानौं दुहूं औरमैंन कीफतूहैं फहरतु हैं ७५

सवैया

—*—

सोभत अंग फुलेल छुही लटलै पगताल चलैं धुनि आछैं। पीनघरी कटि पीन उरोज अली अंगिया तंगिया उरकाछैं। ईस चितैं मुरिमोहन त्यौं दृगकोरकी ओर करैं जुकटाछैं। घूंघट सेत सरोवर भीतर मीन पर्यो जनु मीन के पाछैं॥ ७६॥

इतिउक्तविषयास्वरूपोत्प्रेक्षा

सवैया

× +

आजसखी ब्रजराज विना रितु राजलखैं हियरातरसैं। बंसिकहैं कबिदेखि निमेख लगैं नहीं तापतनैं सरसैं। आधेक लालजरेरु जरैं बिनु आधेक स्यामपरे दरसैं। मानहुं मार पहारन मांझ अपार अंगारनकौ बरसैं॥ ७७॥ पूरबहरित वनिताकी मुख तामैं पत्र रचना रुचिर राजैं मृगमद रंगकी। किधौं नभ सरवर फूले पुंडरीक मध्य मेचक प्रभाहैं अलि आवली अभंगकी। सुकविन उपमा अनेक ऐसी कही कविवदन बखानै एक यह विधि अंगकी। बिरही निरख याहि नांखत निसास यातैं दागल दिखात मानो आरसी अनंगकी॥ ७८॥

इति अनुक्त विषया स्वरूपोत्प्रेक्षा

कवित्त

(०)

पंडुन कीरांनी गह्विरावर तैं आंनी शिरो-मनि बिललांनी बिलखांनी महाचेतु हैं। घटतैं घटाये न घटत उपटत पट दूसासान बार २ बल कैं २ लेतुहैं। पांचन अछत आंच पतिकौं न लागी पांच पतिकी बिपति जुदपति कीनौं हेतुहैं। गोपिन के चोरि २ राखे पट कोरि २ तेई मानो जोरि २ द्रोपदी कौं देतु हैं॥ ७६॥

इति सिद्ध विषया हेतूत्प्रेक्षा

सवैया

—※—

सांझ समैं अलबेली तिया दियरा करिकैं अपने घर आवैं। पौन वहैं अतिही सियरौ तब अंचरमैं सुखदेव दुरावैं। देख उरोजन की दुति दीपक आपने ही हियमैं ललचावैं। की जैंकहा गहि वेकौं नही कर याही तैं मांनहु सीस धुनावैं॥ ८०॥

इति असिद्ध विषया हेतूत्प्रेक्षा

कवित्त

(※※※)

आलोरी निहारी ब्रषभानु की दुलहारी

जाहि पेखि प्रांन प्रीतम के प्रेमपासमैंपरत ॥
मोहन कौं फेरिबी श्री हेरिबी बिहंसि मंद
टेरिबी सखी की जब नाह अंक कौं भरत ।
आजलौं न जानो ही सो परी पहिचांनी अब
जोबन निसांनी ऐसी अंग २ ही भरत । बिधना
प्रवीन मांनौं तनमैं नवीन किये चाहैं कुच
पीन यातें छीन कटि कौं करत ॥ ८१ ॥

इतिवंशीधरस्य

इति सिद्ध विषया फलोत्प्रेक्षा

कवित्त

हाव भाव मगर लगर गहिलेत,हठि चिबुक
अथाह चारु आवरत अरहैं । क्यौं हूं करि
काढत २ लेंहिं घेरि २ भ्रकुटी तरंग नैंन
मीनन की डरहैं । प्यारी के बदन पर बेसर
को मोती चलचातुर कहत जिन्हैं कहिबे को
बरहैं । पंथी मन मनैं करवेकौं कह्यो कासि
बिध मांनौं रूप सिंधु मैं सिकंदर को
करहैं ॥ ८२ ॥

इति असिद्ध विषया फलोत्प्रेक्षा

दोहा

मनु जनु सौ बाचक यहां उत्प्रेक्षा

केज़ान। ज्यौं त्यौं सौ लौं आदि है उपमां वाचक मांन ॥ ८३ ॥

वार्ता

—०—

कोई वाचक नहीं होय अरु उत्प्रेक्षा संभवे तौ तहां गम्योत्प्रेक्षा कहियें

कवित्त

—०—

भूपति हैं प्रेम लालडोरेहैं निसान तेई चंचलता चतुरतुरंग भौर भारी हैं। देखवौ अनेक भांति तेई असवार रेषि काजर की सोई करी कोरसी सांवरी हैं। बरुनी बंदूकन की पांतिसी लई हैं पिय विरह गनीम टारवेकी पेज धारीहैं। सूरत सुकवि सेत स्यांमरंग बागे बने प्यारी तेरे नैनन मैं नीकी असवारी हैं ॥ ८४ ॥

अतिशयोक्तिअलंकार

दोहा

—:—

अति शयोक्ति रूपक जहां केवल ही उपमांन। कनक लता पर चंद्रमांधरैं धनुष द्वै बांन ॥ ८५ ॥

सवैया

—•—

थिर भाव जहां जुग भीर गहैं गिरि मोतीकी माल बिसाल बमैं। ससि सारद सीत समीर वहैं तिल फूलतैं सार सुगंध भ्रमैं। तम अंध को बंधन ढीलो भयो धनु कामको सोवत ताहिममैं। यह भांति चरित्र बिचित्र करैं तिहिं देव मनोज हि कौननमैं ॥ ८६ ॥

इतिदयानन्दसनावस्य

वार्ता

—※※※—

जैसैं रूपक अलंकार तद्रूप अरु अभेद फिर इकेक के अधिक न्यून सम ऐसैं छः भेद कहेहैं तैसैं यहां हूजांन ने यह दोनूं उदाहरन सम अभेद तद्रूप रूपकातिशयोक्ति के हैं

सवैया

राहु नहीं निगल्यौ रिसकैं सुउचिष्ट कियौ नहिं देव समाज। भाज्यौ नहीं रवि मंडल तैं तरुनी मुख चंदहुकी सिरताज। ऐसैं प्रतच्छ प्रकास कियैं बिनु अंबर ही सभि ही धति साज। को यह चंद नयौ उदयौ बिनु अंक निसंक लखो व्रजराज ॥ ८७ ॥

यह अधिक ताद्रूप को उदाहरन

वार्ता

—ः—

को यह चंद या वचन करकैं प्रसिद्ध चंद्र सौं न्यारौ ठहर्यौ यातें ताद्रूप्य अरु राहु निगल्यौ नहीं इत्यादिक विशेषण सौं अधिकता ठहरी ऐसें औरहु भेद विचार लेइयो ।

सापन्हुति अलंकार

दोहा

—(०)—

हौंहिं अपन्हुति सौं मिली सापन्हुति सौ जांन । अहि विधु मंडल पैं लसैं जिय पतार जिन आंन ॥ ८८ ॥

वार्ता

०—०

जो रूपकाति शयोक्ति कहुं अपन्हुति सौं मिली होय सो सापन्हुति रूपकाति शयोक्ति कहियें जैसें पताल मैं अहि को अपन्हुति करि चंद मंडल मैं अरोपन कीनो यातैं मुख पर अलिक सोई चंद्र मंडल मैं सर्प हैं

कवित्त

—(०)—

मुक्ता प्रवाल बीच मधुरससारसी हैं पुहपन

यौंहीं जस देख दई दीनो हैं। वेती इकठौर रहैं राकापति मंडल मैं वारधि को नाम वृथा बिकलन लीनोहैं। ताकीती उदय रहो कंबु पर देखियेतु झूंठे जसधारी यौं उदय गिरि कीनो हैं। मिलकैं आयांनु बिनु समुझैं प्रमांन करैं प्रानन मैं जिन्हैं तेरो रूप न नवीनो हैं॥ ८८॥

इतिदलपतस्य

वार्ता

०—०

उत्प्रेचाइ मैं अपन्हुति अलंकार सर्वस्व करतानैं कह्यो हैं।

कवित्त

❀—❀

तैसी चल चाहन चलति उतसाहन सौं जैसो विधिवाहन विराजत बिजेठीहैं। तैसो भ्रकुटी की ठाट तैसोई दिपैं ललाट तैसोही विलोकिवे कौं मोको प्रांन पैठी हैं। तैसी यैं तरुनताई नीलकंठ आई उर से सब मढाई तासौं फिरैं अैंठी २ हैं। नाहीं लट भालपर छूटी गोरे गाल पर मानोरूप मालपर व्याल ऐंठ बैठी हैं॥ ८४॥

यह सापन्हुति बस्तूत्प्रेचा को उदाहरन हैं

कवित्त

—:—

रुचि पंकज चंदन बंदन कंचन रंचन रोचन ह्व की बची। कहियें किहिं कारन को इत लाएक कापर भांमनि मौंहैं नची। अनुमान तिहौं अषियां लषि लाल ए नांहिंन रातके रोष रची। तन तेरे बियोग तच्यौ तरुनीतिहि मांनहु मोहिय मांहिं तची॥ ८५॥

यहसापन्हुतिहेतूत्प्रेचा

सवैया

आए कहूं अनतैं मन मोहन सोहति मूरति मैंन मई हैं। आरस सौं रस सौं अनुराग सौं रूपसौं रीझसौं दीठ छई हैं। रावरे ओठन अंजन राजत मोरन मो मति तेह तई हैं। जांनत हौं उंह भावतो ओर सौं बोलनको मुंह छाप दई हैं॥ ८६॥

यहसापन्हुतिफलोत्प्रेचा

भेदकातिशयोक्तिअलंकार

दोहा

अति शयोक्ति भेदक जवैं दूहिं

विधि बरनत जात । औरैं हंसिबौ देषिबौ औरैं याकी बात ॥ ८७ ॥

दोहा

+ × +

औरैं ओप कनीन कनि गनी घनी सिरताज ॥ मनी धनी के नेह की बनी छनी पटसाज ॥ ८८ ॥

संबंधाति शयोक्ति अलंकार

दोहा

संबंधाति शयोक्ति जहां देत अजोगहिं जोग । यापुर के मंदिर कहैं ससि लौं ऊंचे लोग ॥ ८९ ॥

वार्ता

मंदिर ससि लौं ऊंचे हौंय नहीं तिन्हैं वैसे कहे सो अजोग्य कहे जहां संजोग संबंध नहीं थो वहां संयोग्य संबंध कह्यो यातैं संबंधाति शयोक्ति

कवित्त

+*×

राजैं मेघा डंबर सुअंबर परस कर तेज चक-चौंधे होत बाहन दिनेश के। सुंडन के सीकर छुटत जब ऊरधर कौं बसन दरीचिन मैं भीजत सुरेश के। लंका होत संका सुन घननत घंटा घोष चलत लचत फन गन भुजगेश के। उडत मलिंद गंड मंडलपैं रामकृष्ण घूंमत गयंद फिरैं कौसल नरेश के॥ ९० ॥

सवैया

लाल कियौ परदेश कौ गौन सुभावैं न भौंन सखी सुखदाई। भौर भए जल लैंन गई कविराज मनौं भवताप संताई। कूप तड़ाग नदी जहां जाय वे रीते ह्वै जाय परैं पर छांई। सांझ समैं नगरी अति रूप की लै गगरी फिर रीतिय आई॥ ९१ ॥

अतिशयोक्ति अलंकार

दोहा

+

अति शयोक्ति दूजी वहैं जोग अजोग बखांन। तो कर आगैं कलप तरु क्यौं पावैं सनमांन॥ ९२ ॥

कवित्त

(९३)

सुमन मैं बास जेसैं सुमन मैं आवैं कैसें नाहीं
हां कहत नांही ना कह्यो चहतु हैं.। सुरसुरी
सूर जामैं सरस्वती सोहैं जैसैं वेद के बचन
वांचे सांचे निबहुत हैं। परवा के इंदु की
कला ज्यौं रहैं अंबर मैं परवाको अच्छ पर
तच्छ न लहतु हैं। जैसैं अनुमां परमांन पर
ब्रह्म त्यौंहीं कांमिनि की कटि कविमीरन
कहतुहैं ॥ ९३ ॥

अक्रमातिशयोक्ति अलंकार

दोहा

(०*०)

अति शयोक्ति अक्रम जबैं कारन
कारजसंग। तोसर लागत साथही
धनुषहि अरु अरिअंग ॥ ९४ ॥

दोहा

(०*०)

लोयन सर सांध्यौ उतैं भौंहचाप कर-
षेध। मन मोहन कैं इतभयो प्रकट प्रांन
मैंछेद ॥ ९५ ॥

चपलातिशयोक्ति अलंकार

दोहा

—।—

चपलात्युक्ति जुहेतु के होत ज्ञान सौंकाज। मुंदरीहु कंकन भई पीय गमन सुन आज ॥ ९६ ॥

कवित्त

०—०

बालम लाल विदेश छए दुख ऐसी जरी हम कांम करा के। जेचुरियां कर आवत नांहिंरी तेचुरियां भई ठौर छराके। आलम लाल विसूरत बाल सुबोलत ही पिय द्वार धराके। कंचुकी मैं कुचयों हुलसे सुगये बंध टूटि तराक तराके ॥ ९७ ॥

अत्यंतातिशयोक्ति अलंकार

दोहा

—⁂—

अत्यंताति शयोक्ति जो पूरब पर क्रम नांहिं। पीछें पहुंचें बांनतौ अरि पहिलें गिरिजांहिं ॥ ९८ ॥

कवित्त

वृन्दावन चन्द होरी खेलत आनन्द भरे नूतन अधिक छबि राजें कोटि मारतें। आई ब्रज गोरी भोरी थोरी २ तेसनको प्रेमरंग बोरी मांनौंतोरी इकडारतें। रंगभर दौरी प्रांनपति के भिजोबनकों एरी कहाकहूं भयो कौतुक निहारतें। पिचकारी आंननलौं पहुंच गई नतौलौं भीज गए सांवरे गुपाल रसधारतें॥ ९९॥

तुल्ल्ययोगताअलंकार

दोहा

तुल्ल्य योगता तीन विधि लच्छन लच्छ प्रमांन। होय अवर्न्य कि वर्न्य को एकहि धर्म सुजांन॥ १००॥

दोहा

—(०)—

कोक कुंभ नलहत सखी सोभा उरज उतंग।
बैंन नैंन बांके भए प्रगटत जोवन अंग॥ १०१॥

वार्ता

(०)

जहां अनेक अप्रस्तुतन को के अनेक प्रस्तुतन

कौ एक धर्म होय तहां तुल्य योगिता जैसैं प्रस्तुत कुच बर्नन कौ प्रसंग पाय अप्रस्तुत कोक कुंभन कौ सोभाकौ नपावनौं यह एक धर्म और प्रस्तुत जोवन बर्नन कौं प्रसंग पाय प्रस्तुतही बैंन नैंन कौ बांकापनौ एक धर्म कह्यौ

कवित्त

×*+

जाकौं यह आपनौं कैं जांनत जगत जिय सुतौहैं अनित्य जैसैं इंद्र धनुघन मैं। तिनकाके अग्र पर थहरतवार बिन्दु आयुख अथिर ऐसैं राजत हैं तन मैं। जैसैं इन्द्रजालहूमैं मोहत हैं मूढ़जन जांनत रूप जाकौ बैंनीरांम मनमैं। जलकौ तरंग तैसैं बादरकौ संगजैसैं बीजुरीकौ भंग जैसैं भंगुरहैं जन मैं॥ १०२॥

दोहा

—×—

अपने अंगके जांनिकैं जोवन नृपतिप्रवीन। तन मन नैंन नितंब कौं बड़ौ इजाफा कीन॥ १०३॥

शत्रु मित्रमैं वृत्तिसम होयसु अपर प्रकार। गुननिधि नीकैं देततूं तिय कौं अरिकौं हार॥ १०४॥

कीजकाटी क्रोधकरि कोसींचो धरनेह।
वेधत ब्रुच्च बंबूरको दुष्टदुहुनकी देह ॥ १०५॥

कवित्त

—+—

दांनवारी आपगा के विपुल प्रवाह वीच दीने दीन दारद कौं द्रुमसे वहाय कैं। देत देत दैं हैं बाटि अरथिनमेरगिरि यातैं कोक कोकी रहै मोदमन छायकैं। तेरीमुख चन्द देखैं बढ़त अनन्द अति लोचन चकोरन को दुक्खहिं नसायकैं। राव श्रीप्रतापसिंह प्रबल प्रताप तेरी मित्र अरु शत्रु रहै दोऊ कल पाय, कैं ॥ १०६ ॥

दोहा

—०—

जग प्रसिद्धकी पांतिमैं गिनैं जुप्रस्तुत आंन। लोकपाल सुरपति वरुन जम कुबेर नृपमांन ॥ १०७ ॥

वार्ता

—०—

यहां इन्द्रादिक प्रसिद्धनकी पांतिमैं प्रस्तुत राजा कौं गन्यौं या तुल्य योगताके भेदकौं कोई सिद्ध अलङ्कार कहत हैं और केतेक दीपकहू कहत हैं सोई दीपककी लच्छन कहियतु हैं

दीपकअलंकार

दोहा

—०—

दीपक बर्न्य अवर्न्य को एकें धर्म समांन। गिरिग्रहगढ़ गुनवंतको होत उच्चता मांन ॥ १०८ ॥

वार्ता

—०—

प्रस्तुत गुनवंत अरु अप्रस्तुत पहार ग्रह गढ़ इनको उच्चता रूप एक धर्म कह्यौ हैं जैसेंघर के लिएं कीनो दीवा आंगन हूमें उजियारो करैं जैसें प्रस्तुत के लिएं धर्यो कोउ धर्म अप्रस्तुत हीकों संभवे यातें दीपक कहियें जद्यपि अप्रस्तुत गिरिय ग्रहादिक पहिलें लीने हैं अरु प्रस्तुत गुनवंत पाछें लीनो हैं यातें प्रस्तुत को प्रस्तुत पनो जाय नहीं जैसें जमाइ के काज भात कीनो तामांझ पहिलें अतिथिकों दीनो यातें जमाई की मुख्यता मिटी नांहीं

दोहा

—*—

बर बरखा माकंद खत, बनिता बचन प्रवाह। ए बिन मोरन सोहियें, ताको चतुर उगाह ॥ १०९ ॥ यहां स्लेष सों सबन को एकता ठहरी

कवित्त

—※—

जाकी उदै होत जग दस दून दिसानहूँतें दुर २ जात तमबैरीगन आपतें । बाढ़त अनन्द अति हिय कोकलोकनके दुयन उलूक दबैं दीरघ संतापतें । जोर २ अंजुलिहिं विनय बढ़ाय बहु वदन बिलोक सबै छूटैं दुख दापतें । होत दुखद्वंद दूर मित्रन के दूरही तें सूर अरु सूरदोउ राजत प्रतापतें । ११० ।

इतिवंशीधरस्य

आवृत्तिदीपकअलंकार

दोहा

—※—

दीपक आवृति तीन विधि आवृति पदकी होय । पुनिहैं आवृति अरथकी दूजी कहियैं सोय ॥ १११ ॥ पद अरु अर्थ दुहूनकी आवृति तीजीलेख । घन वरसैं हैं री सखी निस वरसैं हैं देख ॥ ११२॥ फूले वृच्छ कदंबके केतक विकसे आहि । मत्त भए हैं मोर अरु चातक मत्तसराहि ॥ ११३ ।

वार्ता

—+—

जैसें दीया मौंनमांहिं जोरेतें अनेक बस्तुन को प्रकाश करें तैसें यहहू दीपक अनेक बस्तुन को प्रकाश करैं कैतो पदको कै अर्थको कैदुहुन को आवृत्तितें दीपक अलंकार

कवित्त

—+—

धातु सिला दारु निरधार प्रतिमाको सार सोनकरतार हैं विचार बीचगेहरे। रासदीठ अंतरजामें न कछू अंतर हैं जीभ कों निरंतर जपाव तूं हरे हरे। अंजन बिमल सेनापति मन रंजनहै लखिले निरंजन परम पद सेह रे। कार न संदेह रे उ'ही जैं चित्त देह रे कहाहैं बीच देहरे काहा हैं बीच देह रे ॥ ११४ ॥
कै २ मनुहारहारी कै २ त्यों उपाय भारी जियतें न टारी बिस प्यारी सब दिन मैं। बैठी भर रोस हिय नायक को दोष धरि सोस जोस बढ्यो अति हियरा मलिन मैं। आये उठ लाल तब बाल के मनाय वे कों देखत रसाल रुप दीठ दे सखिन मैं। तजो मुख मौन भजो मन को मरोर दोर मिल्यो मांन मानना को छूट्यो छोह छिन मैं ॥ ११५ ॥

इतिवंसीधरस्य

कवित्त

—॰*॰—

कीरति को मूल एक रैन दिन दांन देवौ धरम को मूल एक सांच पहिचांन वो। बढ़वे को मूल एक ऊंचो मन राखवौ है जानवे को मूल एक भली बात मांन वौ। हारवे को मूल एक आतुरी है दिन सांझ चातुरी को मूल एक बात कहि जान वो। प्रांन मूल भोजन उपाधि मूल हांसी देवो दारद को मूल एक आलस बखान बो ॥ ११६ ॥

प्रतिवस्तु उपमा अलंकार

दोहा

※ + ※

प्रतिवस्तुपमा वाक्यहै उपमेयरु उपमांन। जिनको धर्म जु एकहै जुदे २ पद जांन ॥ ११७ ॥

दोहा

× ॰ +

सोभत भानु प्रताप करि लसत चाप करि सूर। बिष डर सांप न बेढ़यें तजियें बैनहिं कूर ॥ ११८ ॥

वारता

जहांहोय वाक्य हौय तहां एक उपमेय वाक्य हौय दूजो उपमांन वाक्य होय अरु दुहूं वाक्यन को धर्म एकहौय न्यारे पद समूह हौय पै दुहूं धर्मन को भावार्थ एक ही होय जैसें सोहत अरु लसत इन दोउन की सोभा रूप भावार्थ एक होहै।

सवैया

चंचल चारु तुरंग उतंग मतंगन अंग जंजीरन लावें। दासधरें मन आस अनेक विलास भरी तरुनी मन भावें। दांमदे धांम अरांम करी इक नांमविनां कछु कांमन आवें। बिंदी अनेक निसंक धरी पर अंक विनां नहिसाव गिनावें ॥ ११९ ॥

वार्ता

इहां उपमेय वाक्य अरु उपमांन वाक्य की कांमनआवें अरु नहिसाव गिनावें इनदुहुंन को भावार्थ तथा पनो सो एकही हैं कोई कहैं अर्थावृत्ति दीपकसों याको कहा विशेष

सो लिखयतु हैं अर्थावृत्ति दीपकमैं प्रस्तुत अप्रस्तुत कौ नियम नहीं जैसें फूले वृच्छ कदंब कें केतक विकसे आदि और प्रति बस्तु उपमां मैं उपमेय वाक्यतौ प्रस्तुत और उपमानबाक्य अप्रस्तुत होय यह विशेष और आवृत्ति दीपक मैं वैधर्म्य होय नहीं अरु यहां प्रति बस्तूपमामैं वैधर्म्य हु होवैं हैं वैधर्म्य क हैं एक ठौर धर्म विधिरूप और एक ठौर निषेध रूप जैसें विषधर सांप नसेइयैं तजियैं बैंनन कूर यहां पहिले वाक्यमैं नसेइयैं यहैं निषेध अरु दूसरे वाक्यमैं तजियैं यह विधि धर्म हैं परन्तु इनको भावार्थ त्याग करवौ दुहुंनको एकही हैं

कवित्त

केइक अडंवर अनेकधर अंबर कौं गतिमति हीन फिरैं बानिक बनायकैं। केइक अदच्छ ढूढैं पच्छ दरबारन मैं फिरत खुसांमदीसौं घर २ जायकैं। हम अरवीले अतिगुन गर वीले लोग काहुकै दुवारे नाहिंजावैं धाय २ कैं। गुनिनके गुनगन आपतैं प्रकट होत मृगमद मोद कहा कहैं सौंहपायकैं॥ १२० ॥

अथदृष्टांतालंकार

दोहा

बिंबरूपप्रतिबिंबसैं दुहु वाक्यदृष्टंत। कांतिमांनससिहीबन्यौं तूंहीकीरति वंत ॥ १२१ ॥

वार्ता

—÷—

उपमेय वाक्य अरु उपमांन वाक्यकौ न्यारौ २ ही धर्म होय और उन दुहुं वाक्यन कैं आपसमें बिंब प्रतिबिंब भावहोय तहां दृष्टांत अलंकार है जैसें उदाहरन मैं उपमेय बाक्य मैं कीरतिवंत यह धर्म अरु उपमांन वाक्य मैं कांतिमांन यह धर्म सोए दोई धर्म न्यारे २ अर्थकौं कहत हैं परन्तु इन दोई बाक्यन के आपसमें बिंब प्रति बिंब भाव है यातैं दृष्टांतालंकार

सवैया

+÷+

दौवटिया तमटारत औरकौ पैअपनौटर आवत नांहीं। हेमलिये कहा नेमलिये जब प्रेमहियैं भर आवत नांहीं। पण्डित हैं गुन मंडित हैं पर तारत हैं तर आवत नांहीं। गावत हैं सुन आवत हैं कहि आवत हैं कर आवत नांही ॥ १२२ ॥

वार्ता

०००

कोई कहैं प्रति वस्तूपमासों दृष्टांत को कहा विशेष सो कहियतु हैं प्रतिवस्तूपमा में दुंहुं वाक्य पदके दोय धर्मन को भावार्थ एकही होय जैसें मूलके उदाहरन में सोहत अरु लसत इन दुंहुंन को भावार्थ सोभासो एकही हैं और यहां दुंहुंवाक्यन के दोय धर्म न्यारे २ जैसें उपमांन वाक्य मैं अंधारा कोटारबो अरु उपमेय वाक्य मैं नहीं तरबो दोई धर्म न्यारे २ हैं परन्तु इनको बिंब प्रति बिंब भाव हैं यातें दृष्टांतालंकार अरु दृष्टांत अलंकार वैधर्म हु मैं होय

दोहा

०००

दुसह दुराज प्रजांनको क्यौंन बढ़ैं दुखदंद अधिक अंधेरो जगकरत मिलिमावस रवि चन्द ॥ १२३ ॥

अथनिदर्शनाअलंकार

दोहा

०००

दुंहुंवाक्यकोएकता होयनिदर्शनबंध

मीठे बचनउदारके सुकनकहिमांभ
सुगंध ॥ १२४ ॥

वार्ता

०॥०

जहां उपमेय वाक्य को अर्थ अरु उपमान वाक्य को अर्थ इन दुहुंन को बिंब प्रतिबिंब भावलिये एकता ठहरैं सो निदर्शनालंकार उदाहरन मैं उपमेय बाक्य अर्थ जो उदार पुरुष के मीठे बचन ताको सुपद करिकैं उपमान वाक्य अर्थ सोनेको सुगंधता सो एक ताकीनी

कवित्त

+ ÷ +

सुरन समाज सुरसदनमैं बैठे जाकोधरैं
अभिलाख लाख मेट चित्त चैनकों । जाहिल
हिं जंतु निज आतम को तत्वलहि करिभव
अंतलहैं संतपद ऐनकों । ऐसी नरदेहपाय
बिषय सनेहछाय चित्तहुन कीनो हाय राम
नाम लैनकों । कोठकाज काय्यौं सुतोसुर
तरु आंगन को कोडीके बदल बेच्यो चिंता
मनि रैनकों ॥ १२५ ॥

इतिदृष्टान्तदर्शनः

दोहा

और ठौरके धर्मको औरठौर आरोप
विद्रुम एको. एधरतहैं अधर. ललाई ओप ॥ १२६ ॥

वार्ता

यहां विद्रुम की ललाई अधर मांझ कही तातें पहिलो वाक्यार्थ वृत्ति निदर्शना अरु यह दूसरो पदार्थ वृत्ति निदर्शना

कवित्त

मांन हो हठीली कहूं जुगत रसीली काहे छांड़त छबीली रीत प्रेम निरमल की। इन को न दोष नैंकु करैं जिन रोष वृथा कर २ सोस कहा करै बात हलकी। रसिक सुजान कंत लीजियें न जाकी अंत कहैं जसवंत कहा जीत जोम छल की। कहैं जिन बोल रुखे २ हो कपोल तेरे धरैं पियराई एतो केतकी के दलकी ॥ १२७ ॥

दोहा

बिरहनि के जो बदन पर रहत पिराई

छाय । सो अब केतकि पच पर बसी देखियें आय ॥ १२८ ॥

वारता

(००)

या दूसरी निदर्शना कौं कवि जयदेव तो निदर्शना नहीं हैं ललितोपमा हैं ऐसें कहतु हैं जद्यपि विरहनी के यह दोहा मैं कोई बाक्यार्थ वृत्ति निदर्शना कहतु हैं परंतु कुवलयानंद कर्त्ता के मत मैं तो विशेषण करि कैं विषिष्ट जो दोय धर्मी जिन की एकता ठहरावनी सोतो बाक्यार्थ वृत्ति निदर्शना अरु उपमेय अरु उपमान इन दोउन मांझ तें कोउ को धर्म कोउ मांझ ठहरावनौं सो पदार्थ वृत्ति निदर्शना ऐसो विचारिये दोहा पदार्थ वृत्ति निदर्शना में धर्यो हैं ऐसें ठहर्यो तब

दोहा

—※—

सुख कांमी हम और तें तजिकें तोहि मुरारि । सेवत वृच्छ बंबूर को छांड़ि कलप तरु डारि ॥ १२९ ॥

वार्त्ता

—÷—

यहां एकही बाक्य हैं दोय वाक्य नहीं तो इ दोय विशिष्ट धर्मीन को एकता ठहरी

याते वाक्यार्थ वृत्ति निदर्शना ठहरी मूल दोहा में दुहूं वाक्य को एकता ऐसो प्रथम निदर्शना को लच्छन कह्यो है तहां वाक्य शब्द करि कें बिंब प्रति बिंब भाव कों लिए विशिष्ट धर्मी ऐसो ग्रंथकर्ता को आशय हैं तैसोई।

सवैया

—※—

मेटि कैं चैन करैं दिन रैन जो चाकरी ऐन सदा सुखकारी। ताको न चेत धरैं गुन को भए नेकसी दोष निवाजत गारी। ऐसे कहा हम छांड इहां प्रभु होउ महा रिझवार बिहारी। रावरो संग कहैं कविगंग सु सिंघ को संग भुवंग को यारो॥ १२०॥

वारता

+×+

यहां दुहूं वाक्यार्थ वृत्ति निदर्शना है याही सों निदर्शना अरु रूपक की भिन्नता है क्यों कि रूपक में विशेषण रहित जो मुख चंद्रादिक तिनको एकता कही है अरु यहां तो विशिष्ट धर्मीनको एकता कही है जो कोऊ कहैं।

दोहा

गगन ओर गो प्रभु चरन बलि छलिवे के हेतु। कमलासन आसन कमल नाल दंड सुख देतु ॥ १२१ ॥

वारता

यह विशिष्ट रूपक को उदाहरन प्राचीनन नैंकह्यो हैं सो हमारे मत तो विशिष्ट दोय धर्मी जो विष्णु बल छल वे के काज गगन की ओर ऊंचो कीनो पाय सो और ब्रह्मा के आसन कमल दंड इन दुहुन की एकता ठहरी यातैं वाक्यार्थ वृत्ति निदर्शना भई चाहियैं ताको यह समाधान लिखयतु हैं यद्यपि यहां विशिष्ट दोय पदार्थन की एकता हैं परन्तु बिंब प्रति बिंब भाव कौं लिएं एकता नहीं ब्रह्मा के आसन कमल को संजोग सोई साधारण धर्म ठहरायो हैं परन्तु दातार और सुवरन की जैसें मधुर बैंन अरु सुगंध गुन न्यारे २ धर्म हैं निकर २ कैं बिंब प्रतिबंब भाव हैं तैसें वाठौर नाहीं यातैं अगिले नैं युक्त ही रूपक कह्यो हैं जहां विशिष्ट रूपक में विशेष्य विशेषण के उपमेय उपमान के परस्पर एकता ठहराई होय तहां रूपक ही हैं निदर्शना नहीं।

कवित्त

गोरी मुख गोल हरैं हंसत कपोल बड़े
लोयन बिलोल बोल लोनें लियें लाज पर।
लोभा लागे लाल लखि सोभा कवि देव
छबि गोभा से उठत रंग रूप के समाज पर।
बादला की सारी जागी जोत जरतारी दर
दावन किनारी झीनी झालर के साजपर।
मोती गुहे कोरन चमक चहुं ओरन ज्युतोरन
तरैयन की तानी द्विजराज पर ॥ १३२ ॥

वार्ता

यहां मोती गुही किनारी के बीचरह्यो मुख ताकौं तरैयाकी तोरन कर सोहत चन्द्रमा सौं एकता कीनी इतने दोय विशिष्ट धर्मीन की एकता ठहरी तौहू निदर्शना नहीं क्योंकि मुखके चन्द्रमा सौं अरु मोतिन के तरैयासौं न्यारी न्यारी आह्लाद जोति आदि देसमांन धर्मन कर एकता हैं परन्तु विन दोसामान्य धर्म्म विशेषण विशेष्य मिलें एकता नहीं

सवैया

राकाकी रात उद्योतकी चन्द भहोयसमान

जो कीजियें तूलसी । बेसनई अरु नाईनई लखि सौतनकी तनबाढत सूलसी । सौरति के श्रम स्वेदभरयो कर चांपिकें नैरी कियो सुखमूलसी । आननसों पिय आनन लायो गुलाबसों भीज्यो गुलाबके फूलसी ॥ १३२ ॥

वार्ता

इहां विशिष्टनकी उपमा है परन्तु निदर्शना नहीं

दोहा

आप अवस्थातें जहां औरन कों उपदेश । धरयौ ताही नहीं छांडियें कहत धरनीधर सेस ॥ १३३ ॥

वार्ता

जहां कोऊ आपनी अवस्था बताय औरकों वा अवस्था कर उपदेश करैं सो यह निदर्शनाको तीसरी भेद है जैसें सेषनाग आप भूमिकों धर लोगनसौं धरयोताहि छांडियें नहीं ऐसें उपदेश करतु हैं

सवैया

जाकी उद्योततें होत प्रकास तहां तमतोम

कौं दूरनसाई। ताकी विलोकदशा यह छीन भई दुति मंदमहा दिलषाई। औरन कौं सुकरैं उपदेशयौं प्रातकौ दीपक सीस धुनाई छीनदशा जिनकी तिनसौं कोउ नेह की नांवनलेत सुभाई ॥ १२५ ॥

इतिदलपते

वार्ता

—०—

यहां भोर को दीयावाती के जलगयें बिन-तेल दुति मंद होत यह अवस्थातें औरनसौं छीन दशा ऐसी उपदेश करतु हैं

व्यतिरेकअलंकार

दोहा

—※—

उपमेय जु उपमानतैं हैंविशेष व्यतिरेक। अंबुजतैं मुख अधिक हैं मधुरे वचन अनेक ॥ १२६ ॥

कवित्त

—※—

तेरी मुख देखें चंद देख्यौ न सुहात अस चंद के उद्योत जाकौं मन तरसतु हैं। ऐसो तेरी मुखसो कहत सब कबि ऐसें देखो मुख चंद की समान दरसतु हैं। वेतो कछु समझैं

न सेनापति मेरेजानें चंदतें बदन तेरो प्यारो सरसतु हैं। हस २ मीठी २ बातें कहो २ ऐसें तिरछे कटाच्छ कबचंद बरसतु हैं ॥ १३७॥

वार्ता

—*—

इहां उपमेय की अधिकाईतें वितरेक।

सवैया

—❀—

छोंनवला गुन रंग रंग्यौ नव पल्लव कों तुहिरंग दियौ हैं। दोउन को तन बीर मनों भव चाप मिलो मुख छाय लियौ हैं। लागत नारि को पाय दुहूंन के मोह महा जुतहोत हियौ हैं। मोहि ससोक कियौ इहिं लोक में तोहि असोक २ कियौ हैं॥ १३८॥

इतिवंशीधरस्य

वार्ता

—❀—

यहां उपमान की अधिकाई तैं वितरेक

दोहा

—*—

गाढ़ैं मूंठ गहैं रहैं करैं कोस को सेव।
देषो अपन आपानके हैं सरूपही भेव। १३९।

वार्ता

—*—

यहां अधिक न्यूनता बिनाही वितरेक

अथसहोक्तिअलंकार

दोहा

—०—

सोसहोक्ति जबसाथही बरनें दुहुं न बनाय । कीरति अरिकुल संगही जल निधि पुंहुंची जाय ॥ १४० ॥

कवित्त

—।—

सिता सित संगमकी बीचिन के बीच २ तामुख मरीचिन को छबि छहरात हैं । कहैं कालिदास भीजो सारो वाको पीठ पर सब नको दीठ संग लोनें लपटात हैं । जाकेअंग संग वासो बसी ऐसो केसर हैं जमुना औ गंगजाको रंग लियें जात हैं । कोऊ मृग नैंनी एक बैंनी मैं अन्हात सब नैंनन को सैंनी वाकी बेनी मैं अन्हात हैं ॥ १४१ ॥

वार्ता

—०—

यहां दूसरे चरन मैं सारी पीठ पर दीठ

संग लपटात यह सहोक्ति लच्छन के दोहा मैं बनाय ऐसो शब्द धर्यो हैं यातैं दाल अरु चावल साथ पकैं याठौर अलंकार नहीं

अथविनोक्तिअलंकार

दोहा

हैं विनोक्ति द्वैभांतिकी कछु बिन प्रस्तुत छीन। अरु शोभा अधिकोत हैं प्रस्तुत कछु इक हीन ॥ १४२ ॥

दोहा

दृग खंजन से कंजसे अंजन बिन सोभैंन। सबही गुन सरसात यह रंचरुषाई हैंन। १४३

कवित्त

देख्यो हैं विचार जुगच्यार मैं निहार तोकों बिना हरि नाम धांम धूंमको महल हैं। तज जग जीवन मजीवन जगत मांझ देह कालानल आगें रुई को पहल हैं। समझ दिनेस लेस ग्यांनको तूं राखत हैं येरे मूढ़ तोकों कहि कौन को दहल हैं। छांडि गिर धारी जोतें और उरधारी तोतें बात वो

विगारी तेरो जीवन सहल हैं ॥ १४४ ॥
कहत ही बोल रूखे करदे कपोल पर अंसुआ भरत ही सुऐसें ही बिरलभो । चाहत हैं चाह तेरी देखत हैं राह अब चलो मन मोहन मनायबी सहलभो । तचतही रूप जोत रूपको ज्यौं होत और ऐसेंही उछाह तजें नेह कें नवलभो । तम विन निसा जैसें धूम विन दिसा जैसें मिटें मांन मांनी को नेह निरमलभो ॥ १४५ ॥

इतिविद्याधरस्तावरस्य

अथसमासोक्तिअलङ्कार

दोहा

—०—

समासोक्ति अप्रस्तुतहिं फुरें जु प्रस्तुत मांझ । कुमुदिनि हू प्रफुल्लित भई देखि कलानिधि सांझ ॥ १४६ ॥

वार्ता

—+—

जहां कोऊ प्रस्तुत को वरनन करत मांझ तें कोई अप्रस्तुत को वृत्तांत फुरें सो समासोक्ति अलंकार जैसें प्रस्तुत सांझ समें को बरनन करत छतें कमुदनीं शब्दके स्त्रीलिंग

पनेसौं और कलानिधि शब्दके पुल्लिंग पने सौं और श्लेषकरि चतुराई पनेतें और प्रफुल्लित शब्द के श्लेष अर्थ कर आनन्दतें कोउ नायका चतुर नायक कौं देख प्रसन्न होत एसो अप्रस्तुत वृत्तान्त फुरत हैं

दोहा

-०००-

कर अंबर पर धारहैं कलानाथ यह हेत।
धरैं राग वारुनि दिसा निसकौं करत संकेत ॥ १४७ ॥

वारता

यहां सांझ कौ वर्नन करत कोउक नायका नाहके कपरा पकरवेके डर लोगन के संकोच रातकौं संकेत करत ऐसें अंबरादिक शब्द के श्लेषसौं अप्रस्तुत वृत्तान्त फुरतहैं

सवैया

—*—

अलकैं अति लोल अमोल महा चल कुंडल जोत छटा बरसैं। चल हार हियैं विथुर्यो कच भार्यो स्वेद कपोलनपैं दरसैं। अति लेत उसास विलास महा चल चारु नितंबन कौं सरसैं। सिख धन्य हैं पीसत दार जुनार अछंद अनंद धरैं परसैं ॥ १४८ ॥

इतिदलपतिरायस्य

वार्ता

—‡—

यहां अलङ्कारादिक की हालबी इत्यादिक विशेषन दारपीसबे में अरु विपरीतरत में साधारन यातें अप्रस्तुत विपरीतरत फुरत हैं कहूं सारूप्य हू तें अप्रस्तुत फुरें

सवैया

***

मत्त जहां मधु मोर के कूजत कोकिल कोक कपोत सराग। फूले हैं कंज रु गुंजत हैं अलि पुंज लियें तरु कुंज पराग। ठूंठ भए जल सूख गयो भई ऊखर भूम दयो मनु दाग। सोई रसालव हैं वह बाग बिसाल वहैं यह पंथ तड़ाग ॥ १४८ ॥

वार्ता

+*×

यहां प्रस्तुत रसाल ताल बाग को वरनत सारूप्य सों अप्रस्तुत काहू गत संपति वारे की अवस्था फुरैं हैं।

अथ परिकर अलंकार

दोहा

× + +

है परिकर आशय लियें जहां विशेषन होय। विधु बदनी यह नायका ताप हरत है जोय ॥ १५० ॥

वार्ता

—꠸—

यहां बिधु बदनी ऐसो नायका को विशेषन चंद्रमा को सीतलता करि ताप टारिबे के अभिप्राय कों लिएं है।

कवित्त

(००)

लगें पंच सायक सरासन के सायकन लायक हैं मूढमति ना सु धीर धरि हैं। ह्वै हैं रो विकल अति छांड हैं अकल गति सकल विवेक हीन प्रेम पास परि हैं। ताहि कछु सोचन त्रिलोचन बसत चित्त धीरज कवच धरि गाढे मोद भरि हैं। कुसुम कवांन वारो कुसुम के बांन वारो कुसुम कृपान वारो मैंन कहा करि हैं ॥ १५१ ॥

वार्ता

यहां अलोचन असत चित ऐसैं धीर पुरुष को विशेषन सो कांम जीतवे के अभिप्राय के लिएं हैं अरु कुसुम कबांन वारो इत्यादिक कांम के विशेषण तें वाके तुच्छपन के अभिप्राय के लिएँ हैं कोउ कहैं बिना अभिप्राय के विशेषन तें अपुष्टार्थदोष आवैं

सवैया

आएही लाल धरैं उर माल रसाल बजावत बेंनु बिहारी । कांन परैं धुन तांन सुजांन कहा बिसरी मधुसार सुधारी । सोहैं कसूंबल कंचुकि लाल लसैं लहगा सुभसेत हैं सारी । मानत हैं न मनावनिकों मन मांन धरैं नवनेवर वारी ॥ १५२ ॥

वार्ता

तातैं अभिप्राय के लियें विशेषन धरवौ सौ दोष मिटायवे कौं परन्तु कोउ अलंकार नहीं याको समाधान लाट जनकादिक निर्वाह कौं जो कहुं बिन अभिप्रायहु विशेष न धरैं तौहु तहां दोष नहीं है

पद

तिय सींचत नैंन सुधा रस सौं भर आरस नैंन निसारस नैंनी ॥ १५३ ॥

वार्ता

तैसैं और ठौर हू कहूं अभिप्राय लीने बिशेषन होय

कवित्त

आये प्रात मोहन सुधार सब गात २ छबि दरसात हैं पितांबर मचन की । लटपटी पाघ पेच अटपटे बानकतैं किंकनी रनकतैसी कटिके लचनकी । प्यारी सम भूषन बने हैं हम देख कैसे कीनी चतुराई तब चातुरी बचनकी । रावरी निहारी छबि हारी हौं बिहारी लाल कीजैं अरबीन हाल भूषन रचन की ॥ १५४ ॥

वार्ता

इहां चौथे चरन मैं जमकके निर्वाहके लियैं बिहारी ऐसौ नायक कौ बिशेषन धर्यौ है

सी और ठौरके विहारके अभिप्रायकौं लीहै हैं सो यहां दोष मिटायवे की अपेक्षातैं है नहीं केवल चमत्कार ही के लियैं यातैं अलंकार जैसैं यहां जमकादिक के निर्वाहमैं अलंकार ठहरयौ तैसैं जहां जमकादिक नहीं तहां ह्न चमत्कार के लियैं अलंकार उचित है

अथपरिकरांकुरअलंकार

दोहा

—०—

साभिप्राय बिशेष्यतैं परिकर अंकुर नांम । सूधेह्न पियके कहैं नेकन मांनत बांम ॥ १५५ ॥

वार्ता

—०—

इहां बांम ऐसौ पद स्त्री कौ परियाय अर्थातस्त्री वाच्य कौ कैवेवालौ राख्यौ हैं सो टेढ़ाई के अभिप्राय के लियैं है

कवित्त

—०—

सुरसती पावन हमारी गंगकीरत तौ अनु कौ अकीरत हैं तनया कलिंदकी । तेरे कर कंजन तैं गुंजत अमंद जस दांन मकरं

पाय मंगन मलिंद हो । भारी रन थंभन अथंभन तिहारीतिग थप्पन उथप्पन सुदच्छ हैं नरिंदहो । रावरे महावत अलेख गुन देखन औलेखन समत्थ हैं सुरिंद औफनिंदहो । १५६ ।

बारता

—०—

यहां सुरिंद अरुफनिंद पद हजार नेत्र अरु हजार जीभ के अभिप्राय कों लीने हैं

अथश्लेषअलंकार

दोहा

—※—

श्लेष अलंकृति अरथ बहु एक शब्द मैं होत । होय न पूरन नेह बिन वैसो प्रगट उद्योत ॥ १५७ ॥

कवित्त

—०—

नाहीं २ करैं थोरी मांगैं सब दैन कहैं मंगन कों देख पट देत बार २ हैं । जाको मुख देखैं भली प्रापति की घरी होत सदा सुभ जन मन भाए निरधार हैं । भोगी ह्वै रहत बिलसत अवनी के मध्य कन २ जोरैं दान पाठ परवार हैं ॥ सेनापति बैनन की रचना बिचारो जामैं दाता अरु सूम दोऊ कीने इक सार हैं ॥ १५८ ॥

वारता

—०—

यहां दाता अरु सूम दोई प्रस्तुतन कौ श्लेष हैं

दोहा

—+—

अति अकुलाय मिलौ मुखन बन मैं रहत सदाय। तिन कमलन कौ हरत छवि तेरे नैन सुभाय ॥ १५९ ॥

वारता

※०※

यहां अप्रस्तुत कमलन कौ अरु मृगन कौ श्लेष

दोहा

०—०

जग बंदत जाकौ उदय राजा अति सुख कंद। यहैं बढावत मृदु करन लोगन हीय आनंद ॥ १६० ॥

वार्ता

—०—

यहां प्रस्तुत राजा अरु अप्रस्तुत चंद्रमां कौ श्लेष ऐसैं तीन भांत कौ श्लेष ठहर्‌यौ .प्रस्तुत

श्लेष १ अप्रस्तुत श्लेष २ प्रस्तुता प्रस्तुत श्लेष ३

अथ अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार

दोहा

(०)

जो कछु प्रस्तुत के लिएँ वरनैं अवर्न्य रीत । अप्रस्तुत परसंस है अलंकार इहिं नीत ॥ १६१ ॥

दोहा

(०)

कांधे केशर बांध कैं जो कीनो मृगराज । कूकर क्यों करि है कहो करि कुल कंपन गाज ॥ १६२ ॥

वार्ता

(०)

अप्रस्तुत कूकर को वृत्तांत सो प्रस्तुत कोउ कल्पित अडंबर करि बड़ो पद पाय आप कौं बड़ोही कर मानै ऐसे नीच जन को वृत्तांत जताय वे के लिएँ धर्यो है

कवित्त

+ ❀ +

सुनियैं विटप प्रभु पुहुप तिहारे हम राखिहो हमैं तो सोभा रावरी बढ़ाय हैं ।

तजि ही हरषि कैं तो बिलखि न सोचैं कछु जहां २ जैहैं तहां दूनो जस गाय हैं। सुरन चढैंगे नर सिरन चढैंगे काहु सुकवि अतिथ हाथ हाथन दिपाय हैं। देश मैं रहैंगे पर-देश मैं रहैंगे काहु भेषमैं रहैंग तोहु रावरे कहाय हैं ॥ १६३ ॥

वर्ता

÷ X ÷

अप्रस्तुत के वृत्तांत छतैं प्रस्तुत को वृत्तांत जांन वे मैं आवे सो प्रस्तुत के अरु अप्रस्तुत के संबंध तैं जांन वे मैं आवे वह संबंध तीन प्रकार को सारूप्य १ सामान्यविशेष २ कारनकारजभाव ३ सारूप्यकहैं सामान्य अवस्था

कवित्त

※ ÷ ※

कली मुक्ता फल कमल जहां कुंदन के पन्ना ही की पैरी पाज जाकै चहु घांकरी । विह रत सुर मुनि उच्च रत वेद धुनि सुखको समेट रासि विधिना तहां करी । बासी ऐसे सर को उदासी भयो बिछुरेतैं कासीराम तऊ काहू ऐसो आसना करी । पर्यो कोऊ काल तातैं तक्यो एक तुच्छताल लख्यो हैं मरालपैं चुगैगी कहां कांकरी ॥ १६४ ॥

वार्ता

०००

यह सारूप्य निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा जहां प्रस्तुत विशेष के लियें अप्रस्तुत सामान्यक हैं अथवा प्रस्तुत सामान्य के लियें अप्रस्तुत विशेष्य क हैं सो क्रमसौं सामान्य निबंधना अरु विशेष निबंधना

दोहा

—+—

धरैंन मनमैं सोचजे बेर प्रबल सौं ठांनि ।
सोवत आग लगायकैं सदन मांझ पट तांनि ॥ १६५ ॥

वार्ता

यहां श्रीकृष्ण और अर्जुन सौं पहिलैं सिसुपाल बेर धरतही हो तासौं फेर रुक्मनी के हरनतैं बेर दृढ़ कियो अब ताको प्रतिकार कियैं बिना हीं नचिंत होय रहनो जोग्य नहीं ऐसे प्रस्तुत विशेष के लियें अप्रस्तुत सामान्य कह्यो

दोहा

धर कुरंग कौं अंकमैं भो मयंक सकलंक । भयौ मृगाधिप केसरी मारत ताहि निसंक ॥ १६६ ॥

वार्ता

यहां श्रीकृष्ण सौं बलभद्र कौ वचन है कि मृदुतासौं दूषण पावैं क्रूरकौ कीरत कौं लहैं ऐसें प्रस्तुत सामान्य अर्थ के लियें अप्रस्तुत चंद्र सिंघकौ विशेष वृत्तान्त धर्यो है जहां प्रस्तुत कार्य के लियें अप्रस्तुत कारन कौ वृत्तान्त धरैं वा प्रस्तुत कारज के लियें अप्रस्तुत कार्य कौ वृत्तान्त धरैं सो क्रमसौं कारन निबंधना अरु कारज निबंधना

कवित्त

तचयौ मिहरमूस पावक मरिचिनमैं अहर न उदैगिरि कूल्यौ तज संकटैं। धोयौ बार २ बलि बारि निधि वारि वीच बरक अनूप रूप हेम विन पंककैं। घोरिकैं सुधारस सौं अंबर मैं छांनि विधितासौं मांजी देह द्युतिकौनी वाकी अंकलैं। चीनीकौ पियाला चंद मंडल

अखंडल जो ताको मिलि पंक पींदे बैठ्यो सो कलंक है॥ १६७ ॥

वार्ता

यहां अप्रस्तुत रूप हेम बरक को वृत्तान्त धर्यो है सो ताको कार्य कोउ नायका को असाधारन देह दुति जतायवे के लियें सो यह कारन निबंधना

कवित्त

सहज ही सैलकों चढ़त साह महाराज पुहमी अलप महादल के प्रयांनतैं । कहै चिंतामनि सुनि सघन निसांन धुनि बैरीबन बसत बिहींन खांन पांन तैं । पब्बयपिसात मद दुरदधुकात धुकि कै २ किलकांनभजैं दिग्गज दिसांन तैं । गुरु एहैं गिरि सम गिर दसों भरि २ गिरेई परत हैं विमांन आसमांन तैं ॥ १६८ ॥

वार्ता

यहां अप्रस्तुत विमांन को गिरबो धर्यो है सो प्रस्तुत राजाको सेना को अधिकाई जतायवेकों है सोही कार्य निबंधना ऐसें पांच प्रकारको अप्रस्तुत प्रसंसा है

सवैया

अति सुंदर बाल की चाल बिलोकि मराल उसास भरीन भरौ क्यौं । मृदु मीठे सुनैं मृग नैनी के बैन सुधाधिक मीन धरीन धरौ क्यौं । लखि ओठनि लाल उमाल प्रवाल समुद्र मैं बूडमरीन मरौ क्यौं । कबिरेख सुवेख के देख त श्री रति भेष भगौंहौं करीन करौ क्यौं । १६९

वार्ता

—※—

पिछले उदाहर्न मैं एक वस्तु काहू वस्तुको कारन धरी हैं अरु यहां तौ एक वस्तु कौ देखवौ सोई और वस्तु कौ कारन कह्यौ सु ऐसैं हू उदाहरन पिछलेननैं कार्य निबंध नाके धरे हैं अरु नहु चेतौ अप्रस्तुत प्रसंसा के ए पांचहौ भेद हैं ऐसैं कहि सकियतु नाहीं क्यौंकि औरहु अनेक भांत के संबंधनतैं अप्रस्तुत प्रसंसा देखियतु हैं ।

दोहा

निकसी रद छद सदनतैं उडी सुमंद उसास । यहैं जोन्ह मृदु हास्य की फैलरहीतु सारास ॥ १७० ॥

वारता

(००)

यहां अप्रस्तुत जौंन्हतुसरास के वृत्तांततैं प्रस्तुत कीऊ तुसकीसार ऐसें नायका के हास्य की परम दुति कवि के प्रस्तुत हैं यहां तुसअरु धांन के कारन कार्य भाव संबंध तौ नही हैं यातैं सहोत्पति संबंध न्यारोई ठहरयौ सहोत्पतिकहैं साथ उपजवौं

कवित्त

—❀—

खुभी अक्क चक्क नील काच की सदन सोहैं जग मग तारा जोत मुक्ता अनेक हौ। मंगल हैं मांनकरु पन्ना बुध सुरगुरु लखैं पुखराज सो हथोटी विध छेक हौ। हीरासित नील मनि सनि निस नायक हैं किये मधि नायक मरीचि अभि से कहौ। राजा रामचन्द्र जूकी कीरति की कुंडल हैं मंडल अखंडल गगनकी सुएकहौ॥ १७१॥

वार्ता

※—❀—※

यहां अप्रस्तुत गगन कुंडल वृत्तांत मैं प्रस्तुत राजा रामचंद्र जूकी कीरति की अत्यंत विस्तार कविनै ठहरायौहैं सोयहां आधार आधेय भाव संबंध न्यारोई ठहरयौ ऐसें अप्रस्तुत

प्रसंसाके अनेक संबंध होंय यातें याअलंकार
को पार नाहीं ऐसे जानें तो प्रतिपादिकके
ई अलंकार उपमेय उपमान के संबंध तें याही
के भेदमें समायजाय परंतु काहूनें ऐसो ठह
रायो नांहीं ॥ प्रस्तुत प्रसंसा यहां प्रसंसा को
कथन अर्थ हैं स्तुति रूप अर्थ नहीं क्योंकि
निंदा हूमें साकृप्य निबंधना दिक अप्रस्तुत
प्रसंसा होतहैं जैसें मूलमें उदाहरनको दोहा

कवित्त

फूलन बसीले जाके फलन रसीले छित छांह
नीनसीले पंथ पंथी सुखदाईहैं ॥ बिटपन कांम
दार निपट निकांमडार बडे नामदार पूखी
अधिक उंचाईहैं ॥ भूल्यो भ्रम सूवा अंत पायो
फिर रूवा हाय्यो खेल जिमजूवा जिय अगनि
लगांईहैं ॥ जगतमें जनमपै काहू के न काम
आवे कहा सठसेंवरके बढे की बडाई
हैं ॥ १७२ ॥

वार्ता

+ × +

साकृप्य निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा कों कोऊ
अन्योक्ति कहत हैं ।

अथप्रस्तुतां कुर अलंकार

दोहा

—०—

प्रस्तुत सौं प्रस्तुत फुरैं प्रस्तुत अंकुर गाय। कहा गयो अलि केवरै छांडसु कोमल जाय॥ १७२

वार्ता

—※—

जहां एक प्रस्तुत के वृत्तांतसैं दूसरे प्रस्तुत को वृत्तांत जतावैं तहां प्रस्तुतांकुर अलंकार जैसैं कोउ नायका अपने नायक संग बाग मैं फिरतही तहां जाय के फूलकों छांडकैं केवरा के फूलपैं बैठे भंवर कों देषि वासौं कह्यौ। कहा गयो अलिकेवरै यहां दूसरी अमल सुंदर घरकी त्रियाकों छांड कंटक उमान नाइननदा दिक के बीच रहो ऐसी परकिया सौं अटक्यौ चपल अरु पसूसरीखो अपनों नायकतासों उपालंभ।

सवैया

—।—

छाथ गहे हरिनैहित सौं पित सागर लच्छ के आदि ददाई। अंबुज पक्षहु तैं अधिके गुन रावरे कों पहुंचै न गदाई। लाएक हैं सुख लागत हो जिनके हित सौन

गही न कदाई। जुद्ध असंखन जीतबजे पै रहे तुम संख कै संख सदाई॥ १७४॥

सवैया

—०—

इक न्हातही नार उतार दुकुल इकंत हि कुंज सरोवर मैं। तहां आई अचानक द्वै सजनी हस बोली विलोकि सखो सर मैं। यह हंस की चंचु सौं चौंथे हैं चारु सरोज द्वै केलि के आदर मैं। सुन बाल लजाय चितैं मुसकाय दुराय रही कुच अंचर मैं॥ १७५॥

वार्ता

—❀—

यहां दुहूं प्रस्तुत कवी नैं सवैया ही में कहि-दीने हैं पहिलें दोहो उदाहर्न मैं कोई अन्या-पदेस ऐसें धुनि कहते हैं अन्यापदेस को अर्थ यह हैं जो काहुके मिस काहू सौं कहनो अप्रस्तुत प्रसंसा मैं तो बाच्यार्थ धुनि अप्रस्तुत हैं यातैं तहां प्रस्तुत अर्थ प्रगटहोय सो अलं-कार अरु यहां तो बाच्यार्थ हू के प्रस्तुत होयेतैं चमतकार कर दूसरो अर्थ भासैं निहचै तो यह ऐसो अलंकार ध्वनि ही हैं ऐसो चित्र मीमांसा वारेनें ठहरायो तीसरे उदाहरन मैं तो अलंकार ही हैं तहां कुछ विवाद नाहीं क्योंकि व्यंग जहां अलंकार,रूप

होवैं तहां लच्छना कह्यो हैं

दोहा

—०—

शब्द अर्थकी शक्तिसौं व्यंग अर्थ जो होय । ताहि करैं कवि वचन सौं प्रगट अलंकृति सोय ॥ १७६ ॥

वार्ता

ये तीन ह्व उदाहरन सारूप्य निबंधना के हैं और ह्व संबंध सौं कछु लिखियैं हैं

कवित्त

एहो नर लोचन सुलोचन करहु चित्त हंदु दुख मोचन महाही सुख पायहो । जायहैं निमिख रेख देखहो सकल जग जग मग जोत जिय अधिक बढ़ाय हो । करैं सिव रैंन ऐसैं पाय हो परम चैंन नैन जोपैं एक रैंन आपकौं जगायहो । दोयन के मांझ एक मित्र ह्वै हैं तीसरी सुताहि लहि जागत ही जुगकौं विताय हो ॥ १७७ ॥

वारता

यहां शिवरात्रि के महातम मैं तीसरी

लोचन प्रसुत है ता करिकैं शिवको सकल रूप पावनो यह प्रसुत है सो यहां व्याप्य व्यापक भाव संबंध है

सवैया

मो घर सो भयो सूनो है पंथ सुपंथी कहा अब जायकैं लेवो। मैंनसे मैंना फिरैं सभवांन विलोकतिन्हैं तन ताप बढ़ैवो। कंथज्यौं कंथ सरोजनि को सुविदेशगयो धरधीर चितैवो। कैसैं कै जैहौ कहो इहिं राह सलाह नहीं अब सांझको जैवो॥ १७८॥

इतिदलपते

वार्ता

यहां उपमेय उपमांन संबंध सौं प्रसुतांकुर है

दोहा

मैं लेदयो लयो सुकर छुवत छनकगो नीर। लाल तिहारो अरगजा उरह्वैं लग्यो अबीर॥ १७९॥

वार्ता

÷+÷

यहां प्रस्तुत अरगजा कैं जल सूकवेतैं वाकी कारन प्रवल विरह संताप सोऊ प्रस्तुत है यह कार्य कारन भाव संवंध सौं जहां कै द्वारा कारण कौं पहिचांनवौ कवि प्रगटही कहैं तहां तो अनुमान अलंकार

सवैया

—※—

कंजके पात रहे कुमलाय जितैं लग पीन उरोज रहैं री। भारी नितंब जितैं परसैं तित पल्लव ह्वै पियराई गहैं री। खीन खरी कटि को नहिं संग सुरंग हस्यौ छवि आछी लहैं री। वाके संताप सरीर कौं तापसु आपहि तैं यह सेज कहैं री॥ १८०॥

अथपर्यायोक्ति अलंकार

दोहा

—※—

पर्या योक्ति प्रकारह्वै कछु रचनासौं वात। मिसकर कारज कीजियैं जैसैं चित्त सुहात॥ १८१॥

दोहा

—÷—

चतुर वहैं जिहिं तुव गरे बिन गुन भारी माल। तुम दोऊ बैठो यहां जात अन्हावन ताल॥ १८२॥

वार्ता

※०※

जहां काहू बात कौं सूधैं कहि सकियैं तहां और ही कोऊ अद्भुत प्रकार कर कहियैं सो पर्यायोक्ति को पहिलो भेद।

कवित्त

※÷※

गुनन के आगरे गुनहिं देखि भाषत हौ
जोई होत कूच के नगारे को उघट मैं।
बौरो मांहिं सौरो होत ताहि नहिं जानत हौ
जानत हौ जोई सोई कला होत नट मैं।
एतै पर राधिका को मांको नांव चाहत
उपायनमैं दूजो नाहिं देखियैं प्रगट मैं।
गोप कवि कहैं चतुराई सौं दुराई बात
मजनू की रट मैं सो साहब के घट मैं॥ १८३॥

वार्ता

—ं—

यहां मांगन को दूर २ भाषत हो और

कछु खैर जानत नाहीं छल ही जानत हौ ताइ पैं कीरति चाहौ अरु सदा लेले ऐसी धिचारत हौ यह सूधे अर्थ कौं प्रकारांतर सौं कह्यौ ।

सवैया

आजहु कौ अधरातक तें भ्रम मोहि भयौ सुन काहू मिटायौ । या सुपने कौ सुभाव कहौ तुम हौ पिय आपनौ बुद्ध कौ भायौ । नींद कौ नास भयौ तबतें महाराज हियें अति चेटक छायौ । लाल गयौ गिर मेरे गरे कौ कहा कहियें सु परोसनि पायौ ॥ १८४ ॥

वार्ता

जहां काहू मिस करिकैं आपनौं कार्य साधियें तहां दूसरौ भेद ।

कवित्त

दूजी बार होय तीन फिर२ आईतीज मान्यौ जहिं नार तब गएठ कंथही ॥ सौहैं खाय हार खाय कीने हू अनेक भेद पाय परे हारे यैं न मान्यौं परजंत हौ ॥ प्यारौ वह नायक रिसाय उठिचल्यौ तब प्यारी चतुराई छींक कीनी तिहं तंत हौ ॥ और कह्यौ जाहु

क्यौंन कौन की बलाय बोलैं ह्यांहीं नैंक रहौ जू लरौगी कहुं अंतही ॥ १८५ ॥

कवित्त

—०—

भौंह कौं मरोरकर त्योरी कौं तरेर कर बांकी नैंन फेर कर अति अनखावौगी ॥ वारें लनु छार कर झार झझकार मार करकस वचन बोल सखिहिं रिसावौ गी ॥ ईश्वर दुहाई तुम और सब कौ जो एक सुर जिन बैठौ फिर पीछें पछतावौ गी ॥ पीठ पर बैंनी लखि लाल जो पैं रीझ जैहैं बहुरयौं पिया कौं नित छूठियैं सुहावौ गी ॥ १८६ ॥

कवित्त

—०—

मांन कीनौ माननी मनायौ नैंकु मान्यौ नांहि मांनही मैं सोयरही रोस चित आंनकैं ॥ दाबत ही सखी पाय ऐतेपर प्यारौ आय सैंन कैं दईउठाय लागैं पग पांन कैं ॥ प्यारे कौ परस जांन जांनत भई अजांन तब उठ बोली बाल बाहि मिस ठांनकैं ॥ थारी हैरी सखी तूं अकेली क्यौं निहाल कवि धाव अब सोयरहैं दोनौं पट तान कैं ॥ १८७ ॥

अथव्याजस्तुतिअलंकार

दोहा

व्याजस्तुति निंदा विषै । जबै बड़ाई होय । सुरग चढाये पतित लैं ॥ गंग कहा कहुं तोय ॥ १८८ ॥

वार्ता

जहां काहु की निन्दा तें काहु की स्तुति निकसैं सो व्याजस्तुति अलङ्कार जैसें अहै गंग तैं पतितन कौं स्वर्ग पहुंचाए यह बड़े विवेक की हानी है ऐसें निन्दा कर गंगाजू कौं सकल पाप वारेन के तारवेकी कोई अद्भुत महातम की स्तुति धरी है ।

कवित्त

पियो पयचाहैं ताहि देत हैं हलाहल कौं माता तेरो नाम सिष्टचार हीं परत हैं । यह जिन नीति जनमी तैं सिसु रोग नासैं तूतो ताहि अंकलैकें सूलियैं करत हैं । गंगा भागीरथि तूं है पापिन पुनीत काहुऐसी कारत नीत जो नदया आदर तु है । सीरी जल जान काहु पुरै नैं छूयो सिर वाकैं तौ कपाल मांभ

आग प्रजरत हैं ॥ १८९ ॥ जम कहँ धाता सौंन राचैं जमलोक कोऊ ऐसें अधिकार भूंठो कैसें लीजियतु हैं पापिन कौं नरक रचे ते सब सूने होत तिनहीं कौं पुन्य लोक बास दीजियतु हैं। अधम विकारी नर कूकर औ सूकर से जिनहीं के अंग नेकु बार भीजियतु हैं। रुद्र कीजियतु एक हर कीजियतु एक हरि कीजियतु एक हरी कीजियतु हैं ॥ ९०

इतिविवेनो

वार्ता

—+—

जहां काहू और की निंदातें और ही की स्तुति निकसें तहां हू व्याज स्तुति अलंकार

सवैया

○○○

नारि कहैं मनि मानक पंजके पौरिलौं पुंज बनायकैं कीजैं। और कोऊ रखवारी नहीं जिहिं माल मताहि बताय पतीजैं। ठौरन सौबन वैठन कौं पट नाहिं रह्यौ तन सीततैं छीजैं। जाफरखांनदयौजुपै दांनसु एतौ अयान उठायकैं लीजैं ॥ १९१ ॥

वार्ता

***

यहां पतिकी निंदा तैं जाफरखांन की

स्तुति निकसैं हैं ॥ जहां काहूकी स्तुति तैं और काहूकी स्तुति निकसैं तहां व्याजस्तुति अलंकार

सोरठा

÷ × ÷

कांनन तप अलंक कहो कीर कीनो कहा ।
लेत जु स्वाद निसंक अधर सुधर से बिंब कौ ॥ १९२ ॥

वार्ता

(०)

यहां सुवा की स्तुति सौं नायका की स्तुति निकसैं हैं ।

कवित्त

(०)

ब्रह्म के कमंडल तैं सिव जटा मंडल तैं गिर जू प्रचण्डल तैं धारा बहियतु हैं । तीन लोक पावन कौं आपदा नसावन कौं जाके गुन गावन कौं बांनी चहियतु हैं । कहैं रघु-राय पाय पूजैं मिल सुरासुर सुरसरी पायें पाप रास दहियतु हैं । जमुना की महिमा परैं नयातैं जानी गंगा जाको पद पानी ताकी रानी कहियतु हैं ॥ १९३ ॥

अथव्याजनिंदा अलंकार

दोहा

०॥०

व्याजनिंद जो स्तुति मिसैं । निंदा बरनै साज । लह्यौ नखक्षत दुख दूती बीर हमारे काज ॥ १९४ ॥

वार्ता

×*+

यहां नायक सौं केलि कर आई दूती सौं उराहनो अहो हमारे काज तैं वाके नख-क्षतादिक को एती दुख पायौ या स्तुति कर दूती को निंदा नायका नैं प्रगट कीनी

कवित्त

—०—

बीन कोसो तूंबर बिराजे कांधे कुबजा के कान्ह हैं प्रवीन तातैं ताहि कौं चहतु हैं । आगैं कुचपाछैं कुच कैसैं, उपजैं न कच आगैं पाछैं गहैं कछु कुच ही गहतु हैं । स्तुति बीच निंदा हम सकुचैं करत नेही जग है ठठोल सुनी कहा धौं कहतु हैं । यौं रहे हैं कुच खुभि मोहन के मन मांहिं चोर की नजर मैं ज्यौं बुगचा रहतु हैं ॥ १९५ ॥

वार्ता

—+—

जहां काहू की स्तुति तें काहू की निंदा निकसैं तहां हू व्याजनिंदा अलंकार

कवित्त

—०—

आनन न देखत हैं पौरहू न पेखत हैं गुनन बिशेषत हैं धनिन के सोर तें। संग नहिं डोलत हैं दीनहू न बोलत हैं आप कों न मोलत हैं बचन मरोर तें। बन मैं चरत घास पीवैं जल लागैं प्यास चित्त मैं न रखैं आस सोवैं निस भोर तें। कहियें कुरंग मोसों कौन से उतंग गिर अंग २ छीनकीने बडे तप जोर तें॥ १९६॥

वार्ता

—*—

इहां कुरंग की स्तुति तें कविने राजसेवा तें दुखित आप ही की निंदा धरी है कोऊ कहैं यहां वैधर्म सों अप्रस्तुत प्रसंसा है।

दोहा

—:—

ब्रज की बीथिन मैं फिरैं फिरैंजु कुंज कुटीर। कालिंदी की तीर के, वेहैं धन्य समीर॥ १९७॥

वार्ता

—०—

यहां समीर धन्य अरु हौं अधन्य ऐसैं वैधर्म्य सौं अप्रस्तुत प्रसंसा हैं सो कार्य कारनादिक संबंध सौं नहीं ऐसैं दंडी कहते हैं क्योंकि वानैं कह्यो हैं ।

अप्रस्तुतप्रसंसा

दोहा

—*—

अप्रस्तुत प्रसंस विन प्रस्तुत वर्नन कौन । मृग अरन्य के धन्य हैं औरन के न अधीन ॥ १९८ ॥

वार्ता

—*—

निहचैं तौयह व्याजनिंदा ही हैं क्योंकि निंदा सौं स्तुति अरु स्तुति सौं निंदा जानिवे मैं आवैं यह अप्रस्तुत प्रसंसा सौं न्यारौ ई चमत्कार हैं नहीं तौ एकही विषय कौजें व्याजस्तुति अरु व्याजनिंदा तैं हू वाच्यार्थ के अप्रस्तुत पनै तैं अप्रस्तुत प्रसंसा ही ठहरैं । जहां काहू की निंदातैं काहू और की निंदा निकसैं तहां हू व्याजनिंदा अलंकार हैं।

कवित्त

—॰—

नीची दीठ कीनी रस भीनी तुम मोसों प्यारी प्रान सों रिसैं हैं ऐसो कोहैं जग बावरी। मेरो मन सूधो कछु जाने न छ पांच इन आंखन ही आप काज कीनी चाह वारी। रावरी रुखाई देख रूखो भई इनतें हौं गोकुल के चंद जू अनोखी उर भावरी। देखन न दैहौं इन्हें यौंही तरसैं हौं अब हिये ही की आंखन दिखैहौं रूप रावरी ॥ १६६ ॥

वार्ता

० ❀ ०

यहां नायका नैं अपने नैनन की निंदा कीनी तामैं नायक की निंदा निकसत हैं

अथ आक्षेप अलंकार

दोहा

+ ❀ ×

तीन भांति आक्षेप हैं एक विरोधाभास। पहिलैं कहियैं आप कछु, बहुर फेरियैं तास ॥ २०० ॥ दुरैं निषेध जु विधि बचन लच्छन तीनों लेष। हौं नहिं दूती अलि तैं तिय

तन ताप विशेष ॥ २०१ ॥ सीत किरन हैं दरस तं अथवा तिय सुख आहि । जाहु दई मो जनम हैं चले देश तुम ताहि ॥ २०२ ॥

वार्ता

+÷+

जहां एक वस्तु प्रगट कहती होय ताकों कोउ अभिप्राय के हेत निषेध करनौ सो निषेधाभास जैसें दूती के बचन मैं हौं नहिं दूती ऐसौ वचन सौ आपने सांच बोलवे के अभिप्राय कौं बतावत हैं

कवित्त

—*—

झूठी वेई प्यारे तुमैं झूठ ले लगावति हैं तुम सब साहन मैं सरस बिशेषि थैं । रात कौं जे अवात कहावत ते चोर तुम भोर भए आए तातैं साहन मैं देषियैं । नैनन हीं लाल औ महावर न भाल हैं जु ओठ कारे काजर की लीक हू न लेषियैं । आरसी सौं उजरो हैं रावरे को तन तामैं मेरी चारु चूनरी को प्रतिबिंब पेषियैं ॥ २०३ ॥ यह पहिले भेद को उदाहरन ।

कवित्त

—꧁—

रावरे कै मन जिन सुंदरीन को हैं ध्यांन तेई बिध पेम के पयो निधि मैं झारी हैं। ताको कौन कीजियैं बड़ाई बनि ताको जापैं क्रपा कर नैकु दीठ राखत विहारी हैं। सोतो पांव धारे इन नैनन कौं सुख दैंन किंसुक कुसुम कली उर मैं सवारी हैं॥ नाहिं २ प्यारे आज मेरेई वियोग तची छाती हैं तिहारी तामैं चंद कला धारी हैं॥२०४

यहदूसरेभेदकौउदाहरन

सवैया

—꧁—

हम कौं तुम एक अनेक तुमैं उनहीं के विवेक अधीन बहो। इत चाह तिहारी २ उतैं बिभचारी को नेह सदा निवहो। अब कीबो मुबारक सोई करो उत वोई सुहागलता निलहो। घनस्यांम सुखी रहो आंनन्द सौं रहो नीकैं रहौं उनहीं के रहो॥ २०५॥

यहतीसरेभेदकौउदाहरन

अथविभावनाअलङ्कार

दोहा

—०—

होत छ भांत विभावना कारन विनु होकाज । बिनु जावक दोनैं चरन अरुन लखेहैं आज ॥ २०६ ॥

कवित्त

***

अरुन बनात किधौं सूर प्रभा प्रात किधौं मीना सरसात किधौं गुंजा हार छट क्यौ । लाल सहकार किधौं कसूंभल सार किधौं गुलेवास हार किधौं हिंगलू सुनट क्यौ । बन्धु जीव माल किधौं नूतन प्रवाल किधौं तारके प्रवाल कीधौं बन्सी मनभटक्यौ । जावक विनाही तेरौ सहज सुचारु एरी लाल २ एरी लखि लाल मन अटक्यौ ॥ २०७ ॥

दोहा

***

हेतु अपूरन तैं जबैं कारज पूरन होय । कुसुम बांन कर गहि मदन सब जग जीत्यौ सोय ॥ २०८ ॥

दोहा

÷ ×

तीज परब सौतनि सजे, भूषन बसन सरीर। सबैं मरग जै मुह करी, वहैं मरग जै चीर॥ २०९॥

दोहा

—⁂—

प्रतिबंधक के होतहू, कारज पूरन मांन। निस दिन श्रुति संगत तऊ नैंन राग की खांन॥ २१०॥

दोहा

—०—

चलि मन मोहन देखियैं बिरह दूबरे गात। नैंन वारसींचत तऊ हियैं ताप अधिकात॥ २११॥

दोहा

(०※०)

जबैं अकारन बस्तु तैं कारज परगट होत॥ कोयल की बांनी अबैं बोलत मुन्यौ कपोत॥ २१२॥

दोहा

भयो कंबु तें कंज इक सदा प्रफुल्लित सोय। देखहु चंपक की लता प्रगटे श्रीफल दोय ॥ २१३ ॥

दोहा

काहू कारन तें जबैं, कारज होय बिरुद्ध। करत मोहि संताप यह सखी सीतकर शुद्ध ॥ २१४ ॥

सवैया

वे जग अंधन कौं मगदा चलबी इन नीकन हूकौ निवाख्यौ। वे बलि बास वसावत हैं इन बास उजार कुवासन पाख्यौ। सूरत थाह जतावत वे इन प्रेम अथाह के वारिधि डाख्यौ। देखहु री हरि की बँसुरी इन कैसे सुबंस को बंस बिगाख्यौ ॥ २१५ ॥

दोहा

पुन कछु कारज तें जबैं उपजैं कारन रूप। नैंन मीन तें देखियतु सरता वहत अनूप ॥ २१६ ॥

दंडक

—०—

कल न परत कहुं ललन चलन कह्यो विरह दवासो देह दहकै दहक दहक ॥ लागी रहै हिलकी हलक सूकि हालैं हियो देव कहैं गरो भर आवत गहक गहक ॥ दीरघ उसास ले ले ससि मुखि ससकति सुलप सलौनो लंक लहकै लहक लहक ॥ माने वरज्यौ न इन लोचन सरोजनतें वार को प्रवाह बह्यो आवत बहक बहक ॥ २१७ ॥

अथ विरोधा भास अलंकार

दोहा

—※—

भासैं जहां विरोध सौं वहैं विरोधा भास । सुध आयें सुध जात हैं वा मुख चंद प्रकास ॥ २१८ ॥

कवित्त

(०)

पुलिन पुनीत पय पेसल प्रवाह चलैं फबतु हैं फेर फैन फनिन समेत हैं ॥ बेला को विमल बर बालुका विपुल बीच भागी रथी नाम भव भार भूरि लेतु हैं ॥ मदन मथन ताके माथै मधि वासकायो मद मत वारो महा मगर

समेतहैं ॥ हृदय विचार देखोगंगा जू पवर्ग मय सेवकन कैसें अपवर्ग हीकों देतहैं ॥ २१९ ॥

अथविशेषोक्तिअलंकार

दोहा

विशेषोक्ति जो हेतु सौं कारज उपजै नाहिं । नेह घटत नहिं हैं जऊ कांम दीप मनमाहिं ॥ २२० ॥

दोहा

एरी यह तेरी दई क्यौंहु प्रकृति न जाय । नेह भरे हिय राखियैं रूखी तऊ लखाय ॥ २२१ ॥

अथ असंभव अलंकार

दोहा

कहैं असंभव होत जब बिन संभावन काज । गिरवर धर हैं गोप सुत को जानैं यह आज ॥ २२२ ॥

कवित्त

—⁘—

कीने यह जानी हो जु पाहन पयोनिधि पै पाज बंध राज पंथ चल हैं प्रतच्छ ह्व । घास के आवास सम संकै तज लंक ह्व कों बानर प्रजार हैं रावन समच्छ ह्व । बीस भुज दंड दस मुंड चंड राछस के खंड २ कैं हैं एक तापस विपच्छ ह्व । जोई करतार होनहार को प्रकार रचो सोई निरधार ताहि जानत न दच्छ ह्व ॥ २२३ ॥

इतिवंसीधरस्य

अथ असंगति अलंकार

दोहा

+ × +

तीन असंगति काज अरु कारन न्यारे ठांम । और ठोर ही कीजियें और ठोर को कांम ॥ २२४ ॥ और काज आरंभियें औरें कीजें ठोर । कोयल मद माती भई झूमत आंबा मौर ॥ २२५ ॥ तेरे अरि की अंगना तिलक लगायौ पांन । मोह मिटायौ नाहिं प्रभुमोह लगायों आंन । २२६ ।

सवैया

—※—

दीनी चहैं करतार तिन्हैं सुख को न रहीम सकैं तिंहिं टारें। कोऊ उपाय करौ न करौ धन आवत हैं बिन हाक हकारें। देव हसैं मिल आपस मैं विधि के परपंच न कोऊ निहारें। बालक आंनक दुंदुभि के भयौ दुंदुभि बाजत आंन के द्वारें ॥ २२७ ॥

दोहा

—※—

पलन पीक अंजन अधर धरैं महावर भाल। आज मिले सु भलीकरी भले बने हौ लाल ॥ २२८ ॥

कवित्त

+※+

लखि अरसौं है नेकु सौंहैं हू न देखतही सौंहैं २ चाह्यौ सो वसौं हैं न पत्याय हैं। जाके हेत कीनौ मांन मांननी अमांन यह ताकौ तुम लीनौ नाम सहज सुभाय हैं। एते पर धार हठ हरजू हठीली अब हा २ कियैं बात वह कैसें चित लाय हैं। मान के छुड़ावन कौं आए मनभावन सो मांन के बढावन कौ कीनौ यौ उपाय हैं ॥ २२९ ॥

द्युतिवंसीधरस्य

अथ विषमअलंकार

दोहा

विषम अलंकृति तीन विधि अन मिलते को संग। कारन को रंग और कछु कारज औरैं रंग॥ २३०॥ और भलो उद्यम किये होत बुरो फल आय। अति कोमल तन तीय को कहां कांम को लाय॥ २३१॥ खड गलता अति स्यामतैं उपजी कीरति सेत। सखि लाई घन सार सो अधिक ताप तन देत॥ २३२॥

कवित्त

—*—

एहो मंद चंद मुख चंद की जो चाहैं छबि तौ हैं मंत्र एक अब औरन्उपवा हैं। प्रथम हो जाय सुधा सागर में न्हाय २ क्योंहु कै कलंक हो मिटाय बड़ो दाव हैं। जब तन आंनै भयो अमल कमल दल जायकें वसाव सिख सो रंभ सुभाव हैं। तब तूल ह्वै हैं नातो राधे को बदन कहां २ तूं विचार यह तेरे मुख न्याव हैं॥ २३३॥ वारनै सकल एक रोरी ही की आड़ पर हा २ न पहर आभ-

रन और अंगसैं । कविमतिराम जैसे तिच्छन कटाच्छ तेरे ऐसे कहां सर हैं अनंगके निखंग मैं ॥ सहज सरूप सुथराई रीझ्यौ मेरो मन डोलत है प्यारी तेरे विभ्रम तरंग मैं । सेत सारी ही तें सब सौतें रंगी स्याम रंग सेत मारी ही तें स्यामरंगे लाल रंग मैं ॥ २३४ ॥

दोहा

—०—

लौने मुह दीठ न लगैं यौं कहि दीनो ईठ । दूनी ह्वै लागन लगी दियें दिठौ ना दीठ ॥ २३५ ॥

वार्ता

—०—

विषम अलंकृति के तीसरे भेद को कछु विशेष लिखयतु हैं इष्टको उद्यम कियेतें इष्ट अनिष्ट फलको प्राप्तिसौं प्रस्तारतैं च्यार भेद होते हैं इष्टको न पावनो अनिष्टहु को न पावनो १ यह विषमही को भेद इष्टको पावनो अनिष्टको नपावनो २ यह सम अलंकार को भेद इष्टको नपावनो अनिष्टहु को पावनो ३ यहहु विषमको भेद इष्टहुको पावनो अनिष्ट हुको पावनो ४ येहु विषम हु को भेद

प्रस्तार ऽ ऽ इतनें विषम के तीन भेद क्रम
। ऽ सौं उदाहरन
ऽ ।
। ।

कवित्त

—+—

ग्रहन में कीनी गेह सुरनमें दीनी देह मित्र सौं कियो सनेह जाग्यो जुग च्यारयों हैं। तप नमें तप्यो ताप जलधि में जप्यो जाप केसो दास वपु मास २ प्रति गारयो हैं। उडगनईस ओषधीस दुजईस भयो यद्यपि जगत ईस सुधासौं सुधारयो हैं। सुन नंदनन्द प्यारी तेरे मुखचन्द सम चन्द पैन भयो कोटछन्द करिहारयो हैं॥ २३६॥

वार्ता

※+※

यहां चन्द्रकों नायका के मुख समता कि इष्ट हू को लाभ न भयो और काहू अनिष्ट हू को लाभ न भयो इष्ट कौन पावनो अनिष्ट हू को पावनो याको उदाहरन तो लौंनें मुंह दीठन लगें यों कहि दीनो ईठ यह धरयोही हैं

दोहा

—०—

आवै फिर जिन जांन जिय कियो अमंगल बाल। उंहीं हेत तैं गौन तज भौन रह्यो पति लाल॥ २३७॥ इष्ट हू को पावनो अनिष्ट हू को पावनो

दोहा

—०—

रोपत कमलन कंद कौं नहिं जानत कलि रीत। लहि बिकास हरि हैं सखी तुव मुख प्रभा अजीत ॥ २३८ ॥

वार्ता

—०—

यहां नायका कौं इष्ट कँवल हू कौं लाभ अरु मुख सोभा कौ हरबौ बड़े अनिष्ट हू कौ लाभ कह्यौ।

दोहा

(०)

चित पित मारक जोग लखि भयौ भयें सुत सोग। फिर हुलस्यौ जिय जोयसै समुझ्यौ जारज जोग ॥ २३९ ॥

वार्ता

(०)

ऐसें तीन भेद तीसरे विषम के हैं जहां विनाही अनिष्ट थोरे से इष्ट की प्राप्ति होय तहां हू विषम।

सवैया

०००

मोहन के मन भायगयी भली भांत सौं ग्वालनि गोधन गायी। ताकी लग्यी चित चौंहट सी दुर औच कैं गात सौं गात छुवायी। रस खांन करी उन चातुरता चुपचाप रही जबलौं ग्रह आयी। नैंन नचाय चली मुसकाय सु ओटह्वैं जाय अंगूठा दिखायी ॥२४०॥

वार्ता

—+—

यहां गात सौं गात छुवायी यातैं थोरेही इष्ट की लाभ भयी। जहां विनहीं इष्ट प्राप्ति भयैं इष्ट की भ्रम चमत्कारलीने होय तहां ह विषम।

कवित्त

—।—

साह औजलाल दौन तेरी करवाल व्याल लीने भूमि पाल ततकाल ही लपेटि कैं। तिन ह की अंगना जे अंगन बसन टूक अंसुवा भरत भाजी भारी भय भेटि कैं। कहूं गिर गहनन फिरैं विल खांनी तहां देख दुत दमक सकल दुख मेटि कैं। हरष २ लेत बन्सी बन वीथिन मैं मानक के भौरें गुंज पुंजन समेटि कैं ॥ २४१ ॥

अथसमअलंकार

दोहा

+*×

अलंकार सम तीन विधि जथा जोग कौसंग। कारजमैं सबपाइयैं कार नहीकेअंग॥ २४२॥ श्रमविन कारज सिद्धजोउद्यमकरतैं होय॥ हारबास उरपरकस्यौअपनेलायकजोय॥ २४३॥ नीचसंग अचरजनहीं लच्छी जलजा आहि। जसहीकेउद्यमकियौ नीकैं पायौताहि॥ २४४॥

कवित्त

———

बादल को बीजना बनाव वर बादला को बानक सहेली ज्यौं सुरेस के सदन को। मोतिन के हार औहमेल गलूबन्द बेंदी पहिरें खरांज खरी कुंजररदन को। हीरा ही को चूरा बाजूबंध औ अंगूठी पोंची बेंना औ तरौंना सोहैं रानी ज्यौं मदनको। चांदनी मैं चांदनी पैं चांदनी बिछौना पर चांदनीसी फैली चारु चांदनी वदनकी॥ २४५॥

दोहा

——

बस्यौ सिन्धु अरु गगनमैं बरवा बिजुरी संग । ताप करत यह जुगत हो चन्द बिजोगनि अंग ॥ २४६ ॥

कवित्त

(०*०)

मरत मसान कोऊ गंगाजूके तीर सुन्यौ मरैं ह्वै हैं जोगी वाकै वाल्यौ सोच महाहैं । चाह्यौ घ्रांतैं उठजानी त्यौंही जान आनकह्यौ वाकौ हित देखो कैसौ नीकौ बत कहा हैं । यह सुर सुरी तूली त्याग तन यामैं ह्वै हैं पुरष पुनीत अब काहे पर वहाहैं । हरकर दैं हैं बैलदे हैं सब सामां देहैं तनतियलाय देहैं चाहैं और कहाहैं ॥ २४७ ॥ गैरत खांरावरे हरौलके गयन्द संग बड़े २ सूरन के समाज उमहे हैं । बाजत हैं ढक्का करौ दौरि देत धक्का होत किल्ला मांभ हक्का लोक दंत तिन गहे हैं । करिकैं अडंबर जे चढ़े मेघाडंबर पै धरैं लोह अंबरन भारी जोमलहेहैं । रनमैं घुमंड चहुं ओरनतैं सैन जोर राख्यो खेत चाहत ते खेत रिन रहे हैं ॥ २४८ ॥

वार्ता

+ ÷ +

यहां यद्यपि मुख्यार्थ मैं विषम अलंकार निकसै है परन्तु वाच्यार्थ मैं सम अलंकार है क्योंकि खेतकों राख्यों चाहत ते खेत रहे जितनैं जा बात को उद्यम करतहे सो सफल भयो ऐसैं वाच्यार्थ भयो अरु व्यंग अर्थ मैं तो खेत राख्यो चाहत हे सो खेत हू न रह्यो उलटे आप मरगये ऐसो अर्थ होतु है ऐसे ठौर हू समअलंकार कुवलयानंद वारेने राख्यो हैं यह समको तीसरो भेद विषम के तीन हू भेद को जोरी को है जहां इष्टमैं कछु अनिष्ट को भ्रम होय वह हू समअलंकार

कवित्त

—※—

ग्रीषम दुपहरीको तरुन तपंन ताप तच्यौई कुरंग एहो भयो दुख भर हैं। कुधित त्रषित महाग्रीवा कों उठाय देखो भूम हरियारी तहां नीरोनीर सर हैं। आस गह आयो दूर कांनन तैं धायो हरे खेत हू कों पायो जहां वार निरजर हैं। काहे धर संक चौंकि चित वत आस पास घासके कवांन बांन घासहीको नर हैं॥ २४८॥

अथविचित्रअलंकार

दोहा

***

इच्छा फल विपरीत की कीजैं जतन विचित्र। नमत उच्चता लैंनकौं जेहैं पुरुष पवित्र ॥ २५० ॥

कवित्त

—०—

नमत उचाई काज लाज ही बढ़ाय जिय गुरुता के हेत निज लघुता करत हैं। सुख ही के काज सब सहैं दुख द्वंदन कौं शत्रुन के जीतवे कौं शांतिही धरत हैं। कहैं कवि निरमल जोहैं संत बड़भागी वातें कोऊ आंन अरी तासौं ना अरत हैं। धन पायवे के हेत धनही कौ त्याग करैं मान पायवे के हेत मांनकौं धरत हैं ॥ २५१ ॥

अथ अधिक अलंकार

दोहा

अधिकाई आधारतें जब अधेयकी होय। जो अधार आधेयसौं अधिक २ एहोय ॥ २५२ ॥

दोहा

—+—

सात द्वीप नवखंड मैं कीर्ति नाहि समात । शब्द सिंधु कैतो जहां तुव गुन बरने जात ॥ २५३ ॥ आवत लखि पिय दूरितैं चढ़ि कैं महल उतंग । अंग अंग न समात हैं आनंद उदधि तरंग ॥ २५४ ॥

कवित्त

—०—

चढ़त उतंग शृंग तिनसे तमाल ताल महल पहल से ही सहल दिखायगी । पब्बय प्रचंड वैसे उदधि उमंड मांझ कांकर के खंड जैसे छित तल छायगी । ताहूकी अगस्त्य हस्त पत्तमैं समस्त पीनौं वे हु जगनूसे तहां जोषित गमायगी । ऐसी नभ चक्र सक्र बंधू की चरन इक संतही अथग्गवड़ी तहां वे समायगी ॥ २५५ ॥

इतिवंशीधरस्य

अथअल्पअलंकार

दोहा

÷×

अल्प २ आधेयतैं सुच्छमहोयअधार । अंगुरीकी मुदरी हुती करमैं करत विहार ॥ २५६ ॥

कवित्त

(०)

भूली गति तन की हैं औरैं दशा मन की हैं पीरी २ पांनकी लकीरी तैसी गात हैं। धरत न स्वांतधीर कहत न कोउ पीर नैंनन तैं नीर ज्यौं वहीर चली जात हैं। क्योंकर रह्यौ हैं जीय सुनौ परवीन पीय मूंई जैसी मूरति मोपे मैंहीं कहात हैं। सांची जो न मानौं बात जाय देखो आप नाथ दुहूं हाथ हाथकी अंगूठो मैं समात हैं॥ २५७॥

अथ अन्योन्या अलंकार

दोहा

—*—

अन्योन्या लंकार हैं आपस मैं उपकार। ससि ही सौं निसि सार हैं निस ही सौं ससि सार॥ २५८॥

दोहा

—*—

नग कंचन की जोति कर कंचन नग की जोति। उपकारक उत्तमन की प्रीति परस्पर होत॥ २५९॥

कवित्त

—०—

देखा देखी भई तब तैं सकुच छूटिगई मिटी कुल कांन कैसी गूंघट की करबी। नैंन लगी टकटकी उर लगी झकझकी गति थकी मति छकी नेह की उघरबी। चित्र केसि काढे दोऊ ठाढे रहे कासीरांम नाहीं परवाह लाख लोक करी लरबी। बांसुरी वजैबी नटनागर विसरगयौ नागरी बिसरगई गागरि की भरबी॥ २६०॥

अथ विशेष अलंकार

दोहा

—१—

तीन प्रकार विशेष विनु सिद्धा धार अधेय। बड़ीबात की सिद्धि कौं कोउ आरंभ जु देय॥ २६१॥

दोहा

वस्तु एक को कीजियैं वर्नन ठौर अनेक। नभ ऊपर कंचन लता प्रगट देखियैं एक॥ २६२॥ कल्पव्रच्छ देख्यौ सखी ताकौं देखत नैंन। अंतर बाहिर दिस विदिस वहैं तीय सुख दैंन॥ २६३॥

कवित्त

(०*०)

सकल सहेलिन के पाछे २ डोलत हैं मंद २ गौन आज हियरा हरतु हैं ॥ सनमुख होत सुख होत मतिरांम जबै पौन लागें गूंघट को पट उघरतु हैं । जमुनां के तट वंसीवट के निकट नंदलाल पैं सकोचन तैं चाह्यौ न परतु हैं । तनतौ तिया को वर भांवरो भरत मन सांवरे वदन पर भांवरी भरतु हैं ॥ २६४ ॥

वार्ता

—*—

यहां नायका के मनकौं प्रसिद्ध तन के आधराविनाही नायक को मुख और ही आधार ठहराय भांवरी भरवो कह्यौ मूल के उदाहरन मैं तो आधार विना हीं आधेय कंचन लता कही हैं ।

दोहा

—†*†—

विधि नूतन सगरेरचे, अजत तोहि गुन पूर । कांम कलानिधि कलप तरु, गुरु गिरि सागर सूर ॥ २६५ ॥

कवित्त

—०—

भुवन मैं वहैं दसौं दिसन मैं वहैं दीठ पीठ हू मैं वहैं आगें वहैं ठाढी देखियें। सेभहू मैं वहैं घर आंगन मैं वहैं पंथ पंथ हू मैं वहैं वाके विरह विसेषियैं। एहो चेत चेतन प्रकृत नही और मेरे कैसी हैं अभेद वाद जाहि जिय लेखियें। आतम सरूप वहैं एक तम रूप वहैं सब जग रूप वहैं वहैं २ पेखियैं ॥ २६६ ॥

अथव्याघातअलङ्कार

दोहा

—*—

व्याघात जु कछु और तैं, कीजैं कारज और। बहुर विरोधि हेतु सौं, काज साधियें जोर॥ २६७॥ सुख पावत जासौं जगत, तासौं मारत मार। निहचैं जानत बालतौ, काहि करत परिहार॥ २६८॥

वार्ता

जहां एक वस्तु काहूवस्तु कौ कारन होय

वाही वस्तु सौं कोऊ वाके कार्य सौं विरुद्ध कार्य करैं तहां व्याघात जैसैं फूलन सौं सकल सुर नरन कौं सुख होत हैं वाही फूलन कर कांम मारत हैं

दोहा

—॥—

पिय बिछुरत विधि वैर पर उलट धरे सब हेत। जे निरखत सुख देत हे ते सुमरत दुख देत ॥ २६८ ॥

वार्ता

०॥०

जहां कोई एक बात के समर्थन के लियैं काहू पदार्थ कौं हेतु ठहरायौ वाही पदार्थ सौं कोऊ और अगिले नैं समर्थन करैं जा बात कौं कीनो हैं तासौं विरुद्ध बात कौं समर्थन करैं तहां हू व्याघात जैसैं फौज कसि कैं निकसत राजा कुमार सौं कहन लाग्यौ अहो तूं बालक है यातैं तोहि संग लेचलनौं उचित्त नहीं तब कुमार ने कह्यौ जो आप मोहि बालक जानत हो तो राखजानो उचित्त नहीं यहां राजा नैं जिहिं बालक पने कौं राखवे कौ हेतू ठहरायौ हो ताही बालक पने कौं कुमार नैं संग लेचलवे कौ हेतू ठहरायौ ॥

दोहा

विषय सुख न छांडत निरख जिय जग अथिर सुजांन। विषय सुखन छांडत निरख जियजग अथिर अयांन ॥ २७० ॥

अथ कारनमाला अलंकार

दोहा

कारन काज परंपरा कारन माला होत। नीतियतैं धनत्यागतिहिं तातैं जस उद्योत ॥ २७१ ॥

सवैया

चित राखहु उन्नत भाख्यो यहैं निहचे लखि भेद पुरनन के। अति उन्नत चित्ततैं वित्तरु विप्रतैं दान जसैं बिलसैं जन के। बिल खात कहा अनखात इहा जिय बाढतही दुख द्ंदनके। दुख पापतैं पाप सुदारद तैं पुन दारद तुच्छ कियैं मन के ॥ २७२ ॥

वार्ता

इहां दूसरे चरन मैं अनुक्रम सौं कारन परंपरा अरु चौथे चरनमैं विति क्रमसौं कारन परंपरा हैं

अथएकावलीअलंकार

दोहा

—×—

मुक्ताग्रहनकीरीतिजबएकावलितवमांन। दृगश्रुतिलौंश्रुतिवाहुलौंबाहुजंघलौंजांन ॥ २७३ ॥

कवित्त

आतम समय दिस जैसैं जग व्यापरह्यौ तहां उदै होत ताकौं तोरि तम पासकौं । बाहू की मरीच जहां सुधारस बीच होत प्रगट वह जातैं करत प्रकास कौं । ताहु कौं सु सोषत जो आहुति करत तहां वाकी देह मूल वहैं वाकी धरैं बासकौं । ऐसी आठ मूरति महेश की कलेश राम हरी जू अवेस करी सब सुख रासकौं ॥ २७४ ॥

वार्ता

—*—

यहां पहिले उदाहरन मैं उत्तरोत्तर वस्तु पिछली पिछली वस्तु को विशेषन हैं अरु दूसरे मैं पहली पहली वस्तु उत्तरोत्तर वस्तु को विशेषन हैं

मालादीपकअलंकार

दोहा

दीपकएकावलिमिलैंमालादीपकनांम। कांमधांमतियहियकियौतियहियकौतूं धांम ॥ २७५ ॥

कवित्त

कांनन के रंगे रंग नेनन के डोलो संग
नासा अग्र रसना के रस ही समाने हौ।
और गूढ कहा कहौं मूढ हो जु जान जात
प्रौढ रूढ केसोदास नीकें करजाने हौ।
तन आंन मन आंन कपट निधांन कांन सां
ची कहो मेरी आंन काहे कौं डराने हौ।
वेतो हैं विकानी हाथ मेरे हैं तिहारे हाथ
तुम व्रजनाथ हाथ कौनके बिकांनेहो॥ २७६ ॥

सारअलंकार

दोहा

एक २ तैंअधिक जबअलंकारहैंसार। मधुसौंमधुरीहैंसुधा कविता मधुर अपार २७७

कवित्त

नरतैं अधिक दौरैं पंछी अंतरिच्छ ही मैं पंछी तैं अधिक दौरैं वेग नदी नीरके । नीर तैं अधिक दौरैं बंसी कहैं सिंह बली सिंहतैं अधिक दौरैं तीर महाधीरके । तीरतैं अधिक दौरैं पौंन झकझोर और पौंन तैं अधिकदौरैं नैंन हिं सरीरके । नैंनतैं अधिक दौरैं मन तिंहु लोकन मैं मनतैं अधिक दौरैं बाजी रघुवीर के ॥ २७८ ॥

वार्ता

यह भलेगुनकी अधिकाईतैं सार अलंकार

दोहा

मांगन सकुचन पौंन ह्व जाहि लियो संग ठांन । तिन तैं तूल र तूल तैं हरवी जाचक जांन ॥ २७९ ॥

वार्त्ता

यहां दोष की अधिकाई तैं सार अलंकार कहूं गुन दोष दुहून की अधिकाई तैं सार अलंकार

कवित्त

घर २ द्वार २ दीनह्वै अधीन फिरैं अति

आसा लीन छीन दुखित सदा रहैं। गनत गुनन औगुनन कौं गनत नाहिं एक धन काज जाहि मनमैं विचार हैं। पांच दस पाय चाहैं सत औ हजारन कौं लाखन कौं चाहैं आएं घरमैं हजार हैं। बड़े हैं पहार औ पहारतें पयोधि वातैं गगन गगन हूतैं तृसना अपार हैं॥ २८०॥

वार्ता

(❀❀❀)

यहां पर्वतादिक को बड़ाई गुन है अरु तृष्णा पच्छ बड़ाई दोष हैं

अथ जथासंख्य अलंकार

दोहा

—❀❀❀—

जथासंख्यवर्ननविषै वस्तुअनुक्रमसंग।
करिअरिमित्त विपत्तिकौं गंजनरंजन भंग॥ २८१॥

कवित्त

—❀—

प्यारो पग्यो पाय सीस नायकैं लजाय जिय औगुन की चोठो ईठ अवली लपेटियैं। लोयन ललौ हैं कीजैं सौहैं सखी दूखत ए दुचित परो हैं हार बौरी घर पेटियैं। करि

हैं न फेर ऐसैं जैसैं रिस होहि तोहि लीजैं री मनाय याहि एती ना झमेटियें। पलका पैं नाह मन मांन बंक भौंहन कौं लेटियें री भेटियैंरी मेटियैं समेटियैं ॥ २८२ ॥

या अलंकार कौं केई क्रमाअलंकार कहते हैं

अथपर्य्यायअलंकार

दोहा

—०—

है पर जाय अनेककौ क्रमसौं आश्रय एक। फिर क्रमतैं जब एकही आश्रय धरैं अनेक ॥ २८३ ॥

हुती तरलता पदनमैं भई मन्दता आय। अंबुज तजिंतिय वदनदुति चंदहि रही समाय ॥ २८४ ॥

कबित्त

—*—

कब हू गयंदन पैं ईन्द्रध्वज फहरत चढ़ैं मेघाडंबर पैं फ़ौजन सिपाह हैं। कबहू कुपीन कट कांनन सरित तट विन पट पुहमी पराल की पनाह हैं। कबैं भर ढालगौंन टप्पर सुदिये माल कबहू सु खप्परले मांगवी सलाह हैं। अपनी अमानत कौं देत फिर कौन लेत यौंहू वाह २ प्यारे यौंहू वाह २ हैं ॥ २८५ ॥

वार्ता

यहां संपत अरु दारिद ए दोई अवस्थाकौं एकही पुरुष आश्रय कह्यौ

कवित्त

आवत बसंत छिति कंत श्री उद्योतचन्द खेलत ही ख्याल चाव चौगुनो बढ़त हैं। उमंड गुलाल महि मंडल कौं लाल कर घुमंड घमंड लैकैं ऊरध चढ़त हैं। मंगलकै रंग सब तारन के रंग करि नभ हूकी गंग मैं अन्हाय कैं कढ़त हैं। अलकैं सची की सखि पल कैं पुरंदर की बलकैं सुरंभा कुच मंडल मढ़त हैं॥ २८६॥

अथपरिवृत्तअलंकार

दोहा

परिवृत पलटौ कीजियैं कछु लैकैं कछु देय। अरि इंदरा कटाछकौं एक बांन बरलेय॥ २८७॥ अबकैं जो चितकर चढै बहुर न काहू देहु। यह सखि कौंन सयांन हैं चितदै चिन्ता लेहु॥ २८८॥

अथपरिसंख्याअलंकार

दोहा

—※—

परिसंख्या इक थलबरज दूजैं थल ठहराय। नेह हांन हियमैं नहीं भई दीपमैं जाय ॥ २८९ ॥

कवित्त

—०—

मांगत पपीहा मुंहमैं लेहैं उरोजन के कर छाही दूबरी दुखीन काह्न जांनियैं। दंडहैं जतीन के कुरंगन कै वनवास मोरन कै आंख आंसू नीके करमांनियैं। नाहीं एक नवल तियांन मुख देखियत हार एक सुरत समैं ही सुख सांनियैं। पूर देख्यौ जाहि ताहि पेमपरवाह चाहि यातैं खांन खांना जूको राज पहि चानियैं ॥ २९० ॥

विकल्प अलंकार

दोहा

※※※

हैविकल्प यहकै वहैं इहिं विधिको वृत्तान्त। कर हैं दुखको अंत अब जमकै प्यारी कान्त ॥ २९१ ॥

कवित्त

—※—

सोवैं जब बांयौं हाथ छाती पर भारी होत ऐसैं नरनारी होत बोहराके आएतैं। सुपने के हाथी आगैं दौरि २ थाकजात ऐसैं थक जात नर व्याजके दबाए तैं। सुकविनिहाल हरकत है से तांन कौसौ बरकत होत न उधारी लेकै आए तैं। रन सौन और पाप चढ़ैं विषकैसी ताप कैउतारैं आप कै सपूत पूत जाएतैं ॥ २८२ ॥

कवित्त

※×※

पतित उधारे पति राखवे पधारे जैसैं तैसैं पत मेरो पत पारहौ कपारहौ। ताकौ करनी कौ प्रभु फेर सोस करनी को अबमो अकरनी कौ हारहौ कहार हौ। मिटैं तीन ताप आप नांम के प्रताप ताप बंसीके संताप त्यौं बढ़ारहौ कढ़ार हौ। पाप कर तारहौंन तेरे करतार मेरी एहो करतार मोहि तारहौ कतारहौ ॥ २८३ ॥

अथ समुच्चय अलंकार

दोहा

—०—

होय समुच्चय भाव बहु कहुं क

उपजैं अंग । एक काज चाहैं कछौ हूँ अनेक इकसंग ॥ २८४ ॥

दोहा

तुव अरि भाजत गिरत फिर भाजत हैं हतराय । जोवन त्रिया मदन धन मद उप जावत आय ॥ २८५ ॥

वार्ता

जहां अनेक भाव एकही साथ उपजैं तहां समुच्चय को पहलो भेद तुव अरि यद्यपि यहां कछु काल भेद हैं तोऊ अति भय प्रगट न के हेतु एक साथ ही गिरवे भाजवे की क्रिया लीनी जैसैं पंखुरी वारे कमल के कोई सूई सौं बेहकरैं तहां यद्यपि अनुक्रम सौं सौज पंखुरी भिदैं तोऊ समय की सुच्छमता करि ऐसें ई कहिवे मैं आवैं जो एक संग सौज पंखुरी भिदी ऐसें इहां हू गिरवे अरु भाजवे की क्रिया को कछु अंतर हैं तोऊ वह विवछित नाहीं ।

कवित्त

जब तैं कुंवर कान्ह रावरी कला निधान

वाके कांन परी कछु सुजस कहांनीसी। तब ही तें देव देखो देवता सो हंसत सो खीजत सो रीझत सो रूसतरसानो सो। छोहो सो छलो सो छीनलीनो सो छको सो छीन जको सो टको सो लागो थको थह-रानो सो। विधि सो बधो सो विख बूडत विमोहत सो बैठो वह बकत बिलोकत बिकानो सो॥ २८६॥

वार्ता

(०*०)

जहां एक ही वस्तु काहू कारज करवे कौं समर्थ होय तहां दूजी वस्तु वाही कारज करवे कौं समर्थ होय यहां वातें काव्य भयो कि यातें ऐसें भेद जनाय नहीं तहां दूसरो समु-च्चय को भेद जैसें एक जोबन ही मद उप-जाय वे को कारन हैं तहां विद्यादिक ह्व आंनमिले।

कवित्त

०*०

आसन सुखासन जराउ चारु सिंहासन वासन निकासन न पाए तहां दौंपरी। मोतिन की झालरी झरोखा झौर हौंन लागी झरझरी झरपरी झारझर भौं परी। छाजे छात छतरो छिनक मांझ छार भए ऐसी वेर कासीरांम लंकापति कौं परी॥ रांम के

प्रताप सती सीता के सराप हू तें सोने के अवास जरे घास की सी झोंपरी ॥ २९७ ॥

अथ कारक दीपक अलंकार

दोहा

+

कारक दीपक एक में क्रम तें भाव अनेक । जात चितैं आवत हंसत पूछत बात विवेक ॥ २९८ ॥

दोहा

—:—

कहत नटत रीझत खिजत हिलत मिलत लजियात । भरे भौन में करत हैं नैंनन ही सौं बात ॥ २९९ ॥

वार्ता

—०—

यह कारक दीपक समुच्चय के प्रथम भेद सौं विवाद करवे वारौ ॥ ३०० ॥

अथ समाधि अलंकार

दोहा

— : —

सो समाधि कारज सुगम और हेत

मिल होत। उतकंठा तिय कौं भई वीत्यौ रवि उद्योत ॥ ३०१ ॥

वार्ता

(०)

कोउ वस्तु कोई कारज करवे कौं प्रथम हिं समर्थ होंय तहां दूसरी वस्तु कछुक सहायता करैं सो समाधि।

कवित्त

+ × +

बैठी धर मांन मन माननी अमांन ताहि-चाहि चित भूली सब सखी गेह कांमरी। कैसें कैं मनावैं समझावैं भोरी भामनी कौं उठैं भभराय सुन ताको नेक नांमरी। और न उपाय आप लीजियैं मनांय सखी सीख-लाए ऐसैं चित्त अभिरांमरी। वांम के मना वन कौं वाके धांम वंसी कहैं आए घनस्यांम तौलौं आए घन स्यांमरी ॥ ३०२ ॥

वार्ता

+ ×

यह दूसरे समुच्चय सौं विवाध करन भारी हैं ॥

अथ प्रत्यनीक अलंकार

दोहा

दुख दैं अरि के पच्छ कौं प्रत्यनीक दूहिं भाय । दृगन्‍न दबाए कंज तें चढे कांन पैं जाय ॥ २०३ ॥

सवैया

अति स्याम सरीर महा कर बीर धरैं मन पीर फिरैं जु लजी हैं । कल हंस हि यैं रिस रास लियें मुंह लाल कियैं मन मद्धि रिसौं हैं । तुव चाल सौं बाल बसात नहो दूहिं हेत रहैं जु सदा अनखौं हैं । पद पंकज से लखि पंकज कौं दुख देत मतंग मराल खिजौं हैं ॥ २०४ ॥

वार्ता

शत्रु के पच्छ वारे कौं दुख देवी जब प्रत्यनीक अलंकार तब साचात शत्रु कौं दुख देवी आपही तैं प्रत्यनीक ठहरयौ ।

सवैया

(०ॐ०)

कंजन कौं जिन के हित ही विधिना मधि

पंक बढावत हैं। मुद्रित कैं तिन कौं इन के हित दुक्ख मयंक बढावत हैं। कोपि हियें अति मत्त मलिंद अमंद अतंक बढावत हैं। दाबि निसंक ससंक कौं अंक कलंक हिसंक बढावत हैं॥ २०५॥

इतिवंसी धरस्य

अथ काव्य अर्थापति अलंकार

दोहा

(०)

काव्यार्थापति मुख्य मैं गौंन जु वरनत जात। मुख जीत्यौ वा चंद सौं कहा कमल की बात॥ २०६॥

सवैया

—:—

नैंन उलंघ चले स्रुति बैंन सखी जन कौंब कहा कहिबौ। जोत हरे द्विज तारन की मुकता गंन कौंब कहा कहिबौ। भेद्यौ उरोज हियौ तिय कौ जन के मन कौंब कहा कहिबौ। मंद ह्वै चंद तिया मुख तैं अरविंदन कौंब कहा कहिबौ॥ २०७॥

इति वंसीधरस्य

सवैया

—※—

बाली बली न बच्यो परखो रही क्यों बचिहो तुम हौनिंज सोर हिं। केशव छीर समुद्र मथ्यो सुकहा नहिं बांधि हैं बारधि थोर हिं। श्रीरघुनाथ गनो असमर्थन देख विना रथ हाथिय घोरहिं। तोखो सरासन संकर को पिय सोव कहा तुव लंक न तोरहिं॥ ३०८॥

अथ काव्यलिंग अलंकार

दोहा

काव्यलिंग जब जुक्तिसों अर्थ समर्थ न होय। तोकों मैं जीत्यो मदन मो चित मैं शिव सोय॥ ३०९॥

वार्ता

***

जहां समर्थन जोग जो बात ताकों समर्थ न करें तहां काव्य लिंगअलंकार जैसें कांम कों जीतवो कठिन हैं यातें वाकों समर्थन कियो चाहियें तिहिं हेतु मोचित मैं शिव हैं या वाक्यतें समर्थ न कीनो

सवैया

दृग सूधी चितौं न चितैं न सकैं औसकैं न तिरछौ चितौं न चितैं। गुड़ियांन की खेलनी फीकी लगैं इत कांम कला की विलास कितैं। लरकापन जोवन संधि भई दुहुं वेसकी माब लगैं सुहितैं। विवचुंबुक बीचकी लोहा भयौ मन जाय सकैं न उतैं न इतैं॥ २१०॥

वार्त्ता

इहां मनकौं दोय चिंबुक पखांन के विचकौ लोह कह्यौ ताकौ समर्थन जाय सकैं न उतैं न इतैं या वाक्य तैं कियौ कहुं पदार्थ न ह्व तैं समर्थन होहि

दोहा

जिन उपाय औरैं करैं यहैं राख निरधार। हिय विजोग तम टारिहैं विधु बद नीय हनार॥ २११॥

वार्ता

यहां विजोग तम टारिवेकौं विधु बदनी पदतैं समर्थन कीनी कहूं पदार्थ कहूं वाक्यर्थ

पदार्थ को हेतु और वाक्यार्थ समर्थन करवे योग्य अर्थको हेतु होय

कवित्त

पहलैं जनम नाहीं भयो यह जानत हौं नयेतैं न होतो प्रभु भव को कलेसजू। नमत अबै हौं पैहौं मुकत अछेहकैसैं नैहौं निरदेह धर भगत को भेषजू। तुमतो उधारकहो सब जगतारकहो हारक संघारकहो दुरत असेष जू। जांनो निज दास गहैं आस आप पास आयो मेरे अपराध दोय छमियें महेशजू॥ २१२॥

वार्ता

यहां चौथे चरन मैं दोय अपराध कहे ताके समर्थक प्रथम दूसरे दोय चरन के दोय वाक्यार्थ एक पहिलैं जनम नाहिं भयो दूजो आगैं मुक्ति पाय निरदेह ह्वै नांहिं यहां दोय वाक्य तैं दुहूं अपराधन को समर्थन कीनो तहां दूसरे वाक्यार्थ मैं आगै मुक्ति पाय नर देह कैसैं नैंहौं यह वाक्यर्थ को निरदेह एसो पदार्थ हेतु हैं कहूं विरुद्ध दोय अर्थन को एक ही वाक्यार्थ समर्थक होतु हैं

दोहा

बालम बारे सौतकी सुन पर नार विहार।

भौरस अनरस रिसरली रीझ खीज इक बार ॥ ३१३ ॥

वार्ता

÷ + ÷

काव्यलिंग कौं कोई हेतु अलंकार हू कहत हैं कोऊ कहैं परिकर के काव्य लिंगके कहा भेद सो लिखितुहैं परिकर मैं पदार्थ वाक्यार्थ के बल सौं कोई और ही अर्थ की प्रतीत होय सो अर्थ वाच्य कौं पोषत हैं

विधु बदनी यह नायका ताप हरतहैं जोय।

यहां विधु को जो कोऊ सीतलता प्रतीत होत है सोऊ ताप हरवेकौं समर्थ न करतहैं परन्तु साचात विधु शब्द समर्थक नहीं ऐसें कुसुम कबांन वारौ इत्यादिक जो कांम के विशेषण कहे हैं तहांहू आयुधन की असारता प्रतीत होत हैं सोई समर्थन करतुहैं इतने परकरमैं समर्थक पदार्थ वाक्यार्थ की और ही भावार्थ समर्थनीय वस्तु की समर्थक होतु हैं अरु काव्य लिंगमैं साचात पदार्थ वाक्यार्थ ही समर्थनीय वस्तुके समर्थक हैं परन्तु कोऊ तीसरे हारकी अपेचा नहीं ॥

तोकौं मैं जीत्यौ मदन मोचित मैं शिवसोय।

यहां शिव पद ही कांम जीतवेकौ समर्थक हे परन्तु शिवसौं कोई और वस्तु की प्रतीति की अपेचा नहीं याकौ विचार चित्र मीमांसा वारेनें कह्यौ हैं

अथअर्थान्तरन्यासअलंकार

दोहा

जो विशेष सामान्य दृढ़ तौअर्थान्तर न्यास। रघुवरकी .वरगिरतरे वड़े करैं नक हास ॥ २१४ ॥

वार्ता

—:※:—

जहां विशेष अर्थ के समर्थन कौं सामान्य अर्थ धरैं कै सामान्य अर्थ के समर्थन कौं विशेष अर्थ धरैं तहां अर्थान्तरन्यास जैसें श्रीरामचंद्रजू के प्रभाव तैं पाहन समुद्र मैं तरे यह विशेष अर्थ के समर्थ न कौं बड़े करैं न कहास यह सामान्य अर्थ कह्यौ।

कवित्त

:※:

बडन सौं जान पहिचान तौ रहीम कहा जोपैं करतार हीनसुख देन हार हैं। सीत हर सूरज सौं प्रीति कीनी कमल नितऊती कमल वन जारत तुखारहैं। उदधि के वीच वस्यौ शंकर के सीस लस्यौ तौज ना कलंक नस्यौ ससि के सदारहैं। बडे रिझवार हैं चकोर दरवार आप सुधा धर-प्यार तौ पैं भखत अंगार हैं ॥ २१५ ॥

सवैया

—+—

मीन अधीन रहैं निसवासरवारधि नीरज ज अति खारी । दीपक देखें जरैं जु पतंग मुरैं नहीं अंग जरावत सारी । राग के रंग कुरंग बंध्यो गहि बांनक बांन सौं पारधि मारी । नैंक लगी तें छुटै नहिं कैसें हु नेह निगोडे की नातोई न्यारी ॥ २१६ ॥

वार्त्ता

०卐०

इहां नेह कौ नातोई न्यारो यह सामान्य अर्थकौं मीन पतंग कुरंगन को विशेष वृत्तांत धर्‌यो कोऊ कहैं सामान्य निबंधना अरु बिशेष निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा सौं अर्थांतर न्यास कै कहा भेद सो लिखियतु हैं अप्रस्तुत प्रशंसा मैं सामान्य विशेष इन दोय माझ कौ एक ही प्रगट धर्‌यो हैं अरु इहां दोई शब्द प्रगट करलीनो चाहियें इतनी भेद कोऊ कहैं काव्यलिंग मैं समर्थनीय अर्थ कौं समर्थन अरु अर्थांतर न्यास हु मैं सामान्य बिशेष इन दोई मांझ हु तैं कोई एक समर्थनीय को समर्थन तब दुहुन को कहा भेद ठहर्‌यो तहां केऊ ऐसो समाधान करत हैं जो यहां अर्थ समर्थन की आपेक्षा रहै तहां तो काव्यलिंग ।

कवित्त

—※—

आगें उठ लीनी आय दूरहीतें देखत ही बनसी कवितातें तापतनको बुझायगी। बिहंस वचन मेरे सीस धरलीने मानमीठे मुख बोल सुन हियरा हरायगी। आंखेंलाय इकटक मेरी ओर चाह रही यातें चित मेरे में दुसह डर छायगी। अधिक विनय वारी कठन हृद्य वारी कोपन उदय वारी प्यारी हीं तो पायगी॥ २१७॥

वार्ता

(※※※)

इहां अधिक विनय वारी इत्यादिक अर्थ हैं सो समर्थन की अपेक्षा राखतु हैं तिनको समर्थन पहले दूसरे तीसरे चरननमें सो इहां तो काव्यलिंग हैं अरु जहां अर्थ समर्थन को अपेक्षा न होय अरु बुद्धि महिमासों कवि समर्थन करें तहां अर्थान्तरन्यास

दोहा

—×—

बड़े न होवें गुनन बिन बिरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक गहनो घड्यो न जाय॥ २१८॥

वार्ता

इहां बड़े नहू जे गुननबिन यह अर्थ अति

प्रसिद्ध हैं याके समर्थन की अपेक्षा नहीं तउ कविनें बुद्धि बल करि चमत्कार के हेतु धतूराको वृत्तान्त धर्यौ हैं सो इहां अर्थान्तर न्यास ऐसें केई समाधान करतु हैं परन्तु हमारे जानें यह युक्ति नीको नहीं क्योंकि कितनेक अर्थान्तरन्यास के उदाहरन मैं विना विशेष के सामान्य अर्थ चित मैं बैसें नहीं तहां समर्थन की अपेक्षा छतें समर्थन करवी चाहियें

दोहा

बसत बुराई जासतन ताही को सनमांन।
भलौ भलौ कहि छांडियें खोटे ग्रह जप दांन॥ ३१९॥

वार्ता

ऐसी ठौर उनके मत काव्यलिंग ही ठहरैं यातें हमारे मत काव्यलिंग के अरु अर्थान्तर न्यास के इतनो भेद हैं जो सामान्य विशेष के संबंधतें समर्थन होये तौ अर्थान्तरन्यास अरु काहू और संबंध तें अर्थ समर्थन होय तौ काव्यलिंग याको विस्तार चित्र मिमांसा वारेनें कह्यौ हैं

अथविकस्वरअलङ्कार

दोहा

—※—

विकस्वर होत विशेष जब फिर सामान्य विशेष । हरि गिरि धार्‌यो सतपुरुष भार सह्यौ ज्यौं शेष ॥ ३२० ॥

वार्ता

—※—

जहां एक विशेष अर्थ कहि ताको समर्थन कौं सामान्य अर्थ धर वाही सामान्य कौं दूसरे विशेष करि समर्थन कीजैं तहां विकस्वर अलंकार जैसैं गिरि श्रीकृष्ण धार्‌यौ यह विशेष के समर्थन कौं सतपुरुष भार सहैं । यह सामान्य धर वा सामान्य कौं शेष की उपमां कर समर्थन कियौ ।

सवैया

—※—

नागर ही गुन आगर ही रिझवार ज्यौं रीझत बात सुनाएँ । एक निदान कौ जानौ नदांन सु यातैं सबैं गुन देत वहाएँ । होय जऊ सब ही गुन पूर तऊ इक औगुन राखत छाएँ । चातुरता कवितादिक के गुन के गन दारिद देत दबाएँ ॥ ३२१ ॥

कवित्त

—।*।—

कौरव दल पंडव सगर सुत जादौं जेते जातहू न जाने त्यौं तरैया परभात की। बली बेनु अंबरीख मांनधाता प्रहलाद कहिं यें कहां लौं कथारावन जजात की। वेहू न बचन पाए कालकौतुकी के हाथ भांत भांत सेना रची घने दुख घात की। चार चार दिन कौ चवाव सब कोज करी अंत लुट जैहैं जैसें पूतरी वरात की॥ ३२२॥

अथप्रोढोक्तिअलंकार

दोहा

÷+÷

प्रोढोक्ति उत्कर्षकौं हेतु धरैं जु अहेतु। जमुना तीर तमाल से तेरे बार असेतु॥ ३२३॥

वार्ता

।ॐ।

यहां जमुना को तीर को जगबौ तमाल अच्छन की स्यामता के उत्कर्ष को हेतु नहीं ताकों हेतु ठहरायौ।

दोहा

—ॐ—

चंदन कुंद कपूर हू लहत न ताको छोर।

कहां शंभु कैलाश के कहां सु तुव कुच गोर ॥ ३२४ ॥

वार्ता

यहां कैलाश को रहबो शंभू की सेतता के उत्कर्ष को हेतु नहीं ताकों हेतु ठहरायो ।

अथ संभावना अलंकार

दोहा

(०).

ह्वै यों जो यों होय तौ संभावना विचार । वक्ता होतो शेष तौ तौ गुन लेतो पार ॥ ३२५ ॥

कवित्त

घर में न दांम तातैं देख २ सूनो धांम निस दिन आठौ जांम चिंता चित कौं दहैं । जासौं पहिचांन तापैं दुख को बखांन कियैं एक दुख कहेतैं अनेक आपने कहैं । निपट निरंजन कुटंब भैया बंधु सब संपत के काज कोउ नेक न भुजागहैं । झूठ मूठ कहैं तौ खातर जमांहिं राख जमां होय घर मैं तौ खातर जमां रहैं ॥ ३२६ ॥

अथ मिथ्याध्यवसित अलंकार

दोहा

मिथ्याध्यवसित झूठ हित कहैं जु झूठी रीति। धरैं जु माला नभ कुसुम करैं नगर त्रिय प्रीति॥ ३२७॥

कवित्त

परैं ऊपरारध तें पेखी हैं जनम अंध बधिर सुनी हैं ताहि धर चित्त धीर जू। लिखी वेद पांच वैं उनीस वैं पुरांन ससी सींग की कलम मसी तृश्ना मृग नीर जू। रावरी अकीरति यौं राजैं महि मंडल मैं परम पुनीत एहो रघुकुल बीर जू। बांझन के बेटे गूंगे गावैं सुर आठवें मैं ककुई के छीरछीर नीरधि के तीर जू॥ ३२८॥

अथ ललित अलंकार

दोहा

ललित कह्यौ कछु चाहियैं ताही कौ प्रतिबिंब। सेत बांध कर हैं कहा अब तू उतरे अंब॥ ३२९॥

वार्ता

जहां प्रस्तुत धरमी की कोऊ वाक्यार्थ कह्यौ

चाहियें ताहि छांड वाको प्रतिबिंब कीजे और वाक्यार्थ कहैं तहां ललित अलङ्कार जैसें काहु नायका नै पहिलें नायक मनाय वे कौं आयौ तब मान्यौं नहीं पाछैं फिर गयौ ताहि बुलाय वेकौं सखी कौं, पठवतु हैं तब सखी नायका सौं कहतु हैं हे सखी अब तू गयें पानी पाज बांधत हैं यह अप्रस्तुत प्रसंसा नहीं क्यौंकि धरमी नायका प्रस्तुत हैं अरु निदर्शना हु नहीं क्यौंकि अकेलौ प्रतिबिंब वाक्य ही हैं अरु रूपकातिशयोक्ति हु नहीं क्यौंकि वाक्यार्थन कौ बिम्ब प्रतिबिम्ब हैं

कवित्त

गाई विधि बेदन औ व्यासजू पुरानन मैं बालमीक रामायन रचना प्रसंग मैं । नारद बिसारद औ सारद विशेष कर गाई हैं दिनेश औ सुरेश सुर संग मैं । आंनन सहस्र कर शेष हू न पायौ पार रसना हजार हेउ तीउ गति भंग मैं । मेरी मति मन्द कहां २ तुव कीर्ति हैं चाहत भुजांन तिख्यौ तोयधि तरंग मैं ॥ २३० ॥

इतिवंशीधरस्य

वार्ता

यहां ऐसी तुव कीर्ति कौं कहन चाहत हौं

यह बाक्य कौं छोड़ ताकौ प्रतिबिम्ब चाहत भुजांन तरयौ तोयधि तरंग मैं ऐसौ कह्यौ ॥

अथप्रहर्षनअलङ्कार

दोहा

तीन प्रहर्षन जतन बिन बांछित फल जो होय। बांछित हू तैं अधिक फल श्रम बिनु लहियैं सोय ॥ ३३१ ॥ सोधत जाके जतन कौं वस्तु चढ़ैं कर सोय। जाकौं चित चाहत हु तो आइ दूतौ होय ॥ ३३२ ॥ दीपक कौ उद्यम कियौ तौलौं उदयौ भांन। निधि अंजन की औषधी सोधत लह्यौ निधांन ॥ ३३३ ॥

वार्त्ता

जहां बिनहीं जतन कीनै इष्ट कौ लाभ होय तहां पहलौ प्रहर्षन।

दोहा

राधा हरि २ राधिका बनिआए संकेत। दंपति रत बिपरीत सुख सहज सुरत ही लेत ॥ ३३४ ॥

वार्ता

—※—

जहां इष्ट हू तैं अधिक लाभ होय तहां दूसरो प्रहर्षन।

कवित्त

+※×

सोयो प्रांन प्यारी प्रांनप्यारी अब सोयजाहु ऐसें कहि चली सब सखियां सयांन तैं। जाय पति पास हरैं प्रेम परबस ह्वै कैं ताके मुख ही पैं मुख राख्यौं मैं अयांन तैं। जान्यौ तब झूठी ईती आंखन को मूंदवो वा ठग को रोमांच देख भयो भ्रम प्रांन तैं। कीनो ऐसो काज आज लाजही जु सोऊ हरी ततछिन तासमें के उचित बिधान तैं॥ २३५॥

इति वंशीधरस्य

वार्ता

+※×

जहां इष्ट वस्तु के उपाय कौं सोधतैं साच्छात इष्ट वस्तु हू को लाभ होय तहां तीसरो प्रहर्षन जैसें निध देखवे के काज निध अंजन ओषधी के लिएं भूम कौं खोदत हो तहां साच्छात निधि ही निकस्यो

कवित्त

०॥०

आयौ अपराध भयौ दीनौ री निकारि याहि प्रीतम सखी कौ तब आयौ भेष घर कैं । ताकौं भ्रमि मैंनैं सब अंतर की बातें कही वाके मिलवे की चाह हौ सो अंक भर कैं । मिलवौ कठिन हैं हौ भोरी बाल ताकौ अब बिहंसि बिहंसि मोसौं यौं कहि निकर कैं । भरी अंक वारी भारी हठ कर याही निस वाही ठग ठगी आली ऐसी छल कर कैं ॥ २२६ ॥

इति वंशीधरस्य

वार्ता

—*—

यहां नायका नायक के मनायवे कौं सखी जांन अंतर की बातैं जासौं कहत ही सोतौ साचात नायक ही निकस्यौ ।

अथ विषाद अलंकार

दोहा

—*—

सो विषाद चित चाहतैं उलटौ जो कछु होय । नीवी परसत श्रुति परी चरनायुध धुनि सोय ॥ २२७ ॥

सवैया

—०—

रस रंग तरंगन संगन मैं पिय प्यारी मिली अति प्रेम भरी। झम कैं बिछिया औ चुरी खनकैं भर अंक लिएं उचकी उबरी लपटैं झपटैं पलका पर सोभत लोभत नींद न एक घरी। सखि बाल बिहाल भई तबही जब लाल सिखा धुन कांन परी ॥ ३३८ ॥

अथ उल्लास अलंकार

दोहा

०ॐ०

गुन औगुन जब एकतैं और धरैं उल्लास। न्हाय संत पावन करैं गंग धरैं यह आस ॥ ३३९ ॥

दोहा

(०*०)

लाभ बडौ जो कुशल तैं सेवक निज घर जांहि। हैं अभाग धन को यहैं मिलैं जु संतन नांहिं ॥ ३४० ॥

करे कठिन कुच कौंन हित मृदुता चरनन धार। निंदत हैं भाजत सबैं बिधि कौं तुव अरि नार ॥ ३४१ ॥

वार्त्ता

—।—

जहां एक के गुन दोष तैं और के गुनदोष ठहरावैं तहां उल्लास अलंकार एक के गुन तैं और कौं गुन एक के दोष तैं और कौं गुन एक के गुन तैं और कौं दोष एक के दोष तैं और कौं दोष। प्रस्तार ऽ ऽ

न्हाय संत यहां संतकी संतता ऽ।

के गुनतैं गंगा कै पवित्रता ।ऽ

कौ गुन ठहर्यौ। ।।

कवित्त

—०—

एहो अलबेली ऐसे अधिक अंधेरे माहिं आज अधरात कौन काज कित तूं चली। बसत हमारे मनमोहन जू प्रांननाथ ताकोहैं संकेत जित जात तित कौं अली। साथन सहेली तूं अकेली मोसौं बात कहि डरत न काहे लखि ऐसी कुंज की गली। कौनी जग जेर जिंह साज सर चाप आप सोई है सहाय मेरे मदन महावली॥ २४२॥

इतिवंशीधरस्य

—*—

वार्ता

—*—

यहां काम के धीरपने के गुन तैं नायका को निरभय पनो उपज्यौ गुन कह्यौ लाभ बड़ौ जो यहां राजा के कूरपने के दोष तैं सेवकन को कुशल तैं जैसौ एक गुन ठहर्यौ

दोहा

—+—

कर फुलेल को आचमन मीठो कहत सराहि। सुपरहरे गांधी चतुर अतर दिखा वत काहि ॥ २४२ ॥

वार्ता

—+—

यहां लेवे वारेकी मूर्खता दोषतैं गांधी कौं अतर खरच नहीनी गुन ठहर्यौ हैं अभाग धन को यहां संत के गुनतैं धनको अभाग दोष ठहरायौ

कवित्त

——

अधरपैं दंत क्षत दीने प्यारी चक्रितह्वै कर अग्र कंप नाहीं २ हठलीनी हैं। छांड सब ऐसैं कही रिसकौं जतायनैन भौहन मरोरें कोप बचन प्रवीनी हैं। ऐसी मांननी कौं

कियो चुंबन अचानक ही अंमृत अनूप तिन ही तैं तब पीनो हैं। गूढ़ गुन जानैं बिन मूढ़ देवतांन मिल सागरमथन को वृथाही श्रम कीनो हैं ॥ २४४ ॥

इतिवंशीधरस्य

वार्ता

—:—

यहां अधर के मधुरता गुनतैं देवतांन को मूढ़पनो दोष ठहरायो करे कठिन कुच यहां दोहांन मैं अनूको नियांन के पायन को मृदुता दोष सौं विधि के निद्य पनो दोष कह्यो

कवित्त

—०—

कोप जहां होतो सौंहीं भौंहैं को चढ़ायबोई
मांन दंड होतो चंड रोसकौं धरत जब।
होतो मंद हास जहां मांनबो मनायबोई
चाहकै चितैबो हित चित्त को करत तब ।
ऐसो ही सनेह जाको भयो हैं बिगार ऐसैं
सखियां निरख नीर अखियां भरत सब।
तुमज्यौं लुटत मेरे पायन के आगे त्यौं २
हौं २ खल तातैं मेरो रोस न टरत अब॥ २४५ ॥

वार्त्ता

—०—

यहां नायक के अपराध दोषतें नायका के क्रोध दोष कह्यौ

अथ अवज्ञा अलंकार

दोहा

※×※

होत अवज्ञा और के लगै न गुन अरु दोस। परस सुधाधर किरन तैं खुलैं न पंकज कोस ॥ २४६ ॥

दोहा

—※—

जो दिन मैं देखत नहीं अपने दृगन उलूक ॥ जगत प्रकाशक भांन की कहा कहावैं चूक ॥ २४७ ॥

सवैया

(०※०)

बैठें उलूक जहां छिप जाय कहा गुन जाने प्रभाकर के री। पीन सवारो कहा ले करैं कोज घोरि धरी घन सार घनेरी। बैठें अबूझन के संग ही अपनो गुन जाय वृथा

बहुतेरी। आंधरे साहिब की सरकार कहां लौं करैं चतुराई चतेरी ॥ ३४८ ॥

दोहा

—•—

सीतलता रु सुवास की घटौ न महिमा मूर। पौन सवारे जोत ज्यों सोराजानि कपूर ॥ ३४९ ॥

अथ अनुज्ञा अलंकार

दोहा

—•—

होत अनुज्ञा दोष मैं जो लीजैं गुन मांन। होहु विपत जामैं सदा हियैं चढत हरि आंन ॥ ३५० ॥

दोहा

—•—

करी कुबत जग कुटिलता तजौं न दीन दयाल। दुखी होहुगे सरल हिय बसत त्रिभंगी लाल ॥ ३५१ ॥

अथ लेष अलंकार

दोहा

—०—

गुन मैं दोषरु दोषमैं गुन कल्पन

सो लेष। सुक यह मधुरी बांनितैं बंधन लह्यौ विशेष ॥ ३५२ ॥ रूंख २ के फलन कौ लेत स्वाद मधु छाक। बिन इक मधुरी बांनि के निधरक डोलत काक ॥ ३५३ ॥

वार्ता

—x—

यहां सूवा के मधुर बचन कौ गुन सो बंधन कौ कारन भयो यातैं दोष ठहरायो अरु काक के मीठो न बोलवेको दोष सो निधंरक डोलवे को कारन यातैं गुन ठहरायो

सवैया

+ x +

चातुर के चित कौं नितचौंप रहैं निस वासर सोच हि छाएं। काज करैं हिय लाज धरैं अपकाज भयैं मन मैं पछताएं। मूढ निसंक पर्यो परजंक सु भोजन कौं दुख देत भुलाएं। सोच संकोच न लोगन को जग जीवत सोई सदा सुख पाएं ॥ ३५४ ॥

अथमुद्राअलंकार

दोहा

—÷—

मुद्रा प्रस्तुत पद विषैं औरैं अर्थ प्रकास। मन मराल नीकैं धरैं तो पद मांनस आस ॥ ३५५ ॥

वार्ता

—०—

यहां प्रस्तुत मराल पद में यह दोहा मराल जात कौ छन्द हैं यह जनायौ क्यौंकि चौदै गुरु बीस लघु कौ मराल दोहा होत हैं

सवैया

—ः—

ज्यौं झख चाहत हैं जल कौं अरु चाहत ज्यौं घन कौं बन मोर। ज्यौं चह कंज प्रभाकर कौं तिम चाहैं पतङ्ग प्रदीपहिं ओर। चाहत ज्यौं अलि मालती बास सु चाहत ज्यौं परदांमहिं चोर। तो मुख चंद हि चाहत यौं चलियैं बलि नंदकिशोर चकोर ॥ ३५६ ॥ यह चकोर छंद हैं

अथ रत्नावली अलंकार

दोहा

०—०

रत्नावलि प्रस्तुत अरथ क्रम तैं और नांम। रसिक चतुर मुख लच्छ पति सकल ग्यांन को धांम ॥ २५७ ॥

वार्ता

—(०)—

यहां प्रस्तुत राजा के वर्नन मैं ब्रह्मा विष्णु महेश को अनुक्रमतैं नांम लीनो हैं ॥

कवित्त

परवीन प्रीतम सौं कैसें उडि मिलौं आली सो मति बिचार तामैं नैंकु जक परैं री। अंबु धरे नैंन जिय पलकन चैंन याही लखि कवि कुल कौंन बरनन करैं री। परी नेह बस निसा कैसें कैं बिहात चंद हियरा हरष कहूं कैसें धीर धरैं री। जाके अंग अंगन मैं बरत अनंग आग वाके तन ताप के संताप जग जरैं री २५८ ॥

बार्ता

यहां अनुक्रम रवि १ सोम २ कुज ३ बुध ४ जीव ५ कवि ६ सनि ७ राहु ८ केतु ९

इन नवग्रहन के नांम अनुक्रम तैं कहे हैं ।

अथ तद्गुन अलंकार

दोहा

तद्गुन तजगुन आपही संगति कौ गुन लेय । बेसर मोती अधर मिलि पद्मराग छबिदेय ॥ २५९ ॥

कवित्त

नवल निकुंजन मांहिं ठाढेरस पुंज दोऊ ललना ललन जहां वहैं पांन सौरभी । निरखि २ हिय हरखि हरखि कल कोकिल करत औ मुदित मन मोर भी ॥ २६० ॥ परैं प्रतिबिंब यौं परस्पर अंगन मैं सुखमां अपार लख बंसी सुख और भी । श्यांम घन संमुह ह्वै गोरी घटा श्यांम भइ गोरी घटा संमुह ह्वै श्यांम घन गौर भी ॥ २६१ ॥

अथ पूर्वरूप अलंकार

दोहा

पूर्व रूप लै संग गुनतज फिर अपनो

लेत । दूजो गुन वह ऊपजै कियैं मिटन कौ हेत ॥ ३६२ ॥ शेष श्यांम ह्वै शिव गरै जस तैं उज्वल होत । दीप मिटायें हू कियौ रसनां मनि उद्योत ॥ ३६३ ॥

दोहा

—०—

अरी खरी सटपट परी बिधु आधे मग हेर । संग लगे मधुपन लई भागन गली अंधेर ॥ ३६४ ॥

कवित्त

卐×卐

बाहर उतंग मद मत्त सुमतंग जहां धरैं गंड मंडल पैं सोभा भौंर जाल की । द्वारन खरगधारी खरे जोम मारी धरि कंचुकी महल मांझ रच्छा करैं माल की । महखो झिलोल करैं केल मनि मंदिर मैं ऐसी गति अद्भुत तेरे करवाल की । शत्रुन के सूने सब सदनन देखियतु ऐसी राजनीत जैसी नीत भुवपाल की ॥ ३६५ ॥

इति दूलपते

अथ अतद्गुन अलंकार

दोहा

—※※※—

सु अतद्गुन संगत भऐं, अरु गुन लागत नांहिं। पिय अनुरागी ना भए वसरागी मन मांहिं ॥ २६६ ॥

कवित्त

—※—

भए सब नीर निधि छीर निधि नाग गन धरी सब सुख मांहिं शेष अनुहार की। ऐरा-वत इभ कुल सुर सब शंभु भए गिरिन लई हैं छबि गिरिस पहारकी। पंछी सब हंस कुंद कानन कुसुम सब धरत न छत्र छबि सित तनु सार की। रावरी सुकीरति के संग एक मोतियके पोतन नपाई छबिमोतिनके हारकी ॥ २६७ ॥

वार्ता

—※—

कोउ कहैं एक के गुन तैं और के गुन होय सो उल्लास अरु न होय तौ अवग्या अलंकार कहियें तब तद्गुन के अरु अतद्गुन के उल्लास अवग्या तैं कहा भेद ताको समाधान उल्लास अवग्या मैं गुन कहे तैं दोष को प्रतिपच्छो

जाननी अरु यहां तौ गुन तैं रूप रस गंध स्पर्शादिक लीने हैं फेर कोउ कहैं अवज्ञा अरु अतद्गुन कै विशेषोक्ति सौं कहाभेद ताकौ यह प्रत्युत्तर हैं यद्यपि ये दोई विशेषोक्ति मैं समावैं हैं परन्तु उल्लास अरु तद्गुन के विवाद करवे बारे हैं यातैं इन हू कौं जुदे अलंकारन मैं गिने हैं

अथअनुगुनअलंकार

दोहा

अनुगुन संगति तैं जबैं पूरब गुन सरसाय। मुक्तमाल हिय हासतैं अधिक स्वेत ह्वै जाय॥ २६८॥

कवित्त

जातही नवेली नार भूषन सबै सुधार मग मैं चलत मंद २ रसकाई तैं। पाछैं पग धुनि सुनि रसिक गुपाल जू की अंग २ फूल गई मोद अधिकाई तैं। मंदही विहंस लगी बेसर सुधारन कौं तिरछी चितौंन चित चोर चतुराई तैं। मोती भए मांनक अधर प्रवाल पुनि मांनिक मरीचैं बढ़ी कर अरु नाईतैं॥ २६९॥

वार्ता

—*—

यहां तद्गुन पूर्व रूप अनु गुन ए तीन्यों अलंकार हैं

अथमीलितअलंकार

दोहा

—+—

मीलित जो सादृश्य तैं भेद जबैं नं लखाय। अरुन बरन तिय चरन पर जावक लख्यो न जात ॥ २७० ॥

कवित्त

—*—

वृन्दावन चन्द बैठे वृन्दावन कुंजन मैं लैंन कौं पठाई चल तेरे रस भरि हैं । तेरे कहैं चलौं पर एक जिय डरपत वहां मोहि देख कोऊ औरैं चित्त धरि हैं। तैसी रैंन श्यांम घनश्यांम रघुराय कहैं श्यांम तन श्यांम कोऊ कैसैं अट करि हैं। तैं जु कही जांनी सब सांची मेरे मन मांनी चमकैंगी बीज तब तूं न दीठ परि है॥ २७१ ॥

अथसामान्यअलंकार

दोहा

—०—

सामान्य जु सादृश्यतैं जांनपरैं न विशेष। नाहिं फरक श्रुति कमल औ तिय लोचन अनिमेष ॥ ३७२ ॥

सवैया

—※—

रच दर्पन छात छजे थंभ ताक सु कलि को मंदिर सुंदर कीनो। सज बैठी तहां हरिराय बुलाय नवोढ तिया चित संभ्रम दीनो। तिंहि भेदन हीं प्रति बिंब रु बिंब को चित्त अचंभ अथंभ नवीनो। मुंहफेर लजाय कैं हेर सुभाय रहैं जितही तित कंत प्रवीनो ॥ ३७३ ॥

वार्ता

—※—

मीलित अलंकार मैं एक वस्तु के गुन सौं दूसरी बस्तु को स्वरूप ही दीखैं नहीं जैसैं अंधकार मैं श्रीकृष्ण अरु उजियारे मैं राधिका सामान्य अलंकार मैं जुदी दो वस्तु दीखैं पैं अमुक यह अरु अमुक यह एसो ठीक परैं नहीं ज्यौं कांनके कवलन को अरु नैनन को भेद जानवे मैं नहीं आवैं

अथउन्मीलितअलंकार

दोहा

—०—

उन्मीलित सामान्यतैं भेद फुरैं तव मांन। कीरति आगैं तुहिन गिरि छुयें परत हैं जांन॥ ३७४॥

दोहा

÷+÷

मिल चन्दन बैंदी रही गोरे मुख न लखाइ। ज्यौं २ मद लाली चढत त्यौं २ उघरत जाइ॥ ३७५॥

अथविशेषअलङ्कार

दोहा

(०)

यहै विशेष २ पुनि फुरैं जु समता मांझ। तिय मुख अरु पंकज लखैं शशि दरशन तैं सांझ॥ ३७६॥

कवित्त

—।—

बज्रतैं लखात इन्द्र इन्दु तौ कुरंग ही तैं गंगतैं महेश शेष भूरि फन भास तैं। संखतैं

बिशंभर असंख सुर संगन मैं छीरधि को छीर नीर स्वाद के बिलास तें। कीरति बितांन तुव तनतजिह्वांन मध्य दंडतें लखात काल अंबु पति पासतें। जानत करिन्द्र कों सुरिन्द्र सत सुंडन हैं चीनति बिरंचि कल हंसन कों आसतें ॥ ३७७ ॥

इतिदलपते

वार्ता

—※—

मीलित को बिबाधी उन्मीलित अरु सामान्य को बिबाधी बिशेष हैं

अथगूढोत्तरअलंकार

दोहा

×+

गूढोत्तर कछु भावतें उत्तर दीनैं होत। उन बेतसतरु मैं पथिक उतर न लायकश्रोत ॥ ३७८ ॥

सवैया

—※—

अंबर चारु पयोधर हेरत कौंन को धीरज सोनगयो हैं। राय कहैं नदिया यह रूपकी नाव मिलैं नरको अथ योहैं। पंथिक आज भसो थिव धांम भलो तुम कों उपदेश दयो

हैं। यामग बीच लगें वहु नीच जु पावक मैं जर प्रेत भयौ हैं॥ ३७६ ॥

वार्ता

यहां दोज उदाहरन मैं नदी उतरवे कौ घाट पूछत पंथी सौं नायका कौ प्रत्युत्तर यहां नायका के रत इच्छा कौ भाव हैं ए दोनौं आक्षेप सौं लाए हुवे जो प्रश्न उनके प्रत्युत्तर और अक्षरन सौं आये हुवे जो प्रश्न तिन कौ प्रत्युतर

कवित्त

एहो बाल नाह कहा छांड रोस माननी तूं बैसौ कहा रावरो सुकोनो रोस करि कैं। खेद जु हमारे तुम नैंक न हमारो दोष कहत सबैं ही दोष कोने मैं निदरि कैं। तौपैं काहे रोवत हैं गदगद बैंन भाषि काके आगैं रोवत हौं जोमैं दुख धरि कैं। मेरे हौ तिहारे कौन दार सिरदार नांहीं ताही तैं हौं रोवत उसास अति भरि कैं॥ ३८०॥

वार्त्ता

यहां नायक नायका कौ उत्तर प्रत्युत्तर हैं

तहां नायका के बचन मैं काके आगैं रोवत हौं अरु हौं तिहारे कौंन ऐसैं उत्तर सो तुमारे हमारे कछु रस रह्यो नांहीं ऐसे छिपि- हुए दूसरे अभिप्राय कौं लियैं हैं यातैं गूढो- त्तर अलंकार अभिप्राय अरु भाव एकही अर्थ कौं कहत हैं ॥ ३८१ ॥

अथ प्रश्नोत्तर अलंकार

दोहा

ॐ

दुजो प्रश्नोत्तर बरन एक रूप ही सोय। मुग्धा तिय की केलि रुचि गेह कौंन मैं होय ॥ ३८२ ॥ कै अनेक हो प्रश्न कौ एक जु उत्तर धार। वारि बताय बिहार मृग सरन नवेली नार ॥ ३८३ ॥

दोहा

—०—

कौरंन साधन इच्छ हैं मिटन सब दुख द्वंद्व। को कहियैं दुखित रहैं देखतें राका चंद्र ॥ ३८४ ॥

कवित्त

—(०)—

एक कहैं मोती पहराइये हमारे नाथ एक

कहैं आज इमैं गोद ले खिलाइयैं। एक कहैं नाह दाव देहु क्यौं न मेरी अवैं एक कहैं आज मेरे गेह चलि आइयैं। एक कहैं फूल फल पातर मंगाय देहु एक कहैं पावक कौं वेगही मंगाइयैं। सब कौ जवाब हरि एक बार दीनौं बारी नांहि प्यारी ऐसी २ हंसिन हंसाइयैं ॥ ३८५ ॥

अथसुच्छमअलङ्कार

दोहा

+ + +

सुच्छम पर आसय लखैं करैं क्रिया तिहिं भाय। मैं देखी उत सीसमनि केसमन लई छिपाय ॥ ३८६ ॥

वार्त्ता

卐 । 卐

यहां नायका नैं नायक कौं सूरज अथयैं संकेत जतायो सो यह सुच्छम अलङ्कार ॥

कवित्त

० । ०

बांसुरी के बीच भौंर डार सखी लाई एक मूंदी वटपल्लव तैं बुद्धि बलभारी सौं। भनत पुरान यामैं आपही तैं धुन होत कांन देकैं

सुनौं कह्यौ राधे सुकुमारी सौं। रीझ रिझवार तब मन मैं मगन ह्वैकैं आप तन चाह मुख ढाप्यौ नील सारी सौं। अंबर मैं गांठ दे वि हंस उठ चलौ अली प्यारी कह्यौ आज यांहीं रहियें हमारी सौं॥ ३८७॥

वार्ता

(०)

यहां नायक की दूती मुरली मांहिं भौंर कौं मेल बर के पातसौं मूंद नायका सौं दिखायो यातैं श्रीमुरलीधरजू बंसीवट तरे ठाढे हैं यह जतायो तब नायका ने श्यांम पट सौं मुंह ढांप चन्द्र अस्त कौं संकेत बतायो॥

अथपिहितअलंकार

दोहा

—*—

पिहित छिपी पर बातकौं जांनि जतावैं भाय। प्रातहि आए सेझ पिय तियहंस दावत पाय॥ ३८८॥

सवैया

——*

आवत देख लए उठ आगैं ह्वै आपहि

केशव आसन दीनो। आपहि पाय पखार भली विधि पांनी कौं भाजन लाइ नवीनो। बीरा बनाय कें आगें धर्यो अरु बेहर कौं कर बीजनौं लीनौं। बांह गही हरि ऐसें कह्यौ हंसि मैं तो इतौ अपराधन कीनो॥ ३८९॥

अथव्याजोक्तिअलंकार

दोहा

—०—

व्याज उक्ति कछु और विध कहैं दुरैं आकार। सखि सुक कीने करम ए लखदाखौं मनिहार ३९०॥

कवित्त

—॰—

नख कहां लागे बन बांनर लगाए नख चख कहां रागी प्रात ताकी प्यारी भांन कौं। बंदन कहां तैं लाग्यो पूजि गननायक कौं चंदन कहां तें लाग्यो पूजि शिवथांन कौं। रात कहां जागी जहां नटन को नृत्य भयौ बोलत क्यौं ढोले तेरो भय भयौ प्रांन कौं। बिगरी सुबिगरी दुरावी जिन आवी लाल थिगरी कहांलौं देहौ फाटे आस मांनकौं॥ ३९१॥

दोहा

—०—

मैं बरजी कै बार तूं इत कित लेत करोट। पंखुरी लगैं गुलाबकी परिहैं गात खरोट ॥ ३८२ ॥

वार्ता

—०—

छेकापन्हुति मैं वस्तु को दुरावनो अरु व्याजोक्ति मैं आकर को दुरावनो और व्याजोक्ति मैं क्रिया करि कैं हू गोपन लियो हैं

सवैया

—+—

भीर अहीर अहीरिन की जमुना जल तीर जुरी अति भारी। कासौ कहैं जु प्रवीन बड़े मन मोहन औ वृषभांन दुलारी। यौं पर नांम दुहुंन कियो अंखियां जु मिली सुन काहु नहारी। लाल दिये इत पाग के पेच उतैं बिंदली उन बाल सुधारी ॥ ३८३ ॥

वार्ता

—※—

व्याजोक्ति शब्द मैं उक्ती पद हैं सो वचन

अरु चेष्टा ए दोई अर्थन के लिए हैं औसैं सूक्ष्म अरुपिहितालङ्कार हू मैं चेष्टा हू कही हैं तहां हू बचन कर सूचित संभवैं हैं यथा सूक्ष्म अलंकार

दोहा

मो मन जांन सहेट त्यौं सखि सौं बोली बाल। नलिनी दल बक पंत लख मुक्ता मरकत थाल ॥ २९४ ॥ पिहिताअलंकार

सवैया

आये ही मेरे मया कर मोहन मोकौं तौ मांनौं महानिधि तूठी। आज की बांनक देखि कैं सुंदर सोऊ मिलैं तिय होयजु रूठी। कैसी बिराजत नीकी नई कर की अंगुरी मैं अनूप अंगुठी। प्यारे कह्यौ हंस प्यारी सौं यौं तब देरी सौं तूं समभी सब भूठी ॥ २९५ ॥

अथ गुठोक्ति अलंकार

दोहा

गूठोक्ति मिस और कै कीजैं पर उपदेश। काल सखी हौं जाउंगी पूजन देव महेश ॥ २९६ ॥

सवैया

—ı—

घोर घटा घुमडी चहूं ओर सुनैं घन-
घोर महा तनछीजैं । प्यौ परदेश संदेश न
आवत कांम कलेश धरैं नित जीजैं । सास
बरात गई कबकौ लख सूनौ अवास उसास
न लीजैं । जांम गई जुग आई न धांम सु
कौन कौं नांम बुलाय कैं लीजैं ॥ ३९७ ॥

इतिश्लेष

अथविवृतोक्तिअलंकार

दोहा

—⁂—

श्लेष छिप्यौ परगट कियैं विवृतोक्ति
हैं ऐंन । पूजन देव महेश कौं कहत
दिखाए सैंन ॥ ३९८ ॥

सवैया

—⁂—

खेलत ही सजनीन मिली संग चौपर चारु
महारस लैबौ ॥ नंदन गोकुल चन्द्रजुको कहुं
दीठ पर्यौ ललचाय चितैबौ । नागरि नारि
कह्यौ परगोट सौं कीजत हैं कित आपन
ऐबौ । जो करैं ईस तौ बीस बिसै कछु दाव
परैं अबकैं मिल जैबौ ३९९

कवित्त

—ॐ—

मोती माल पोहतही सखिन में सोहतही मोहत ही नैन मृग नैंनी छाय भाय कैं। एते पर आए बन ठांनक बिहारी लाल प्यारी रस बस भई निरखत नाय कैं। सेनापति चातुर सखी के मिस आतुर ह्वै आप ही कहत ताहि बचन सुनाय कैं। हित कर चित्त देकैं मोतिय परख लेकैं आज लाल ईस में सफल कर आय कैं॥ ४०० ॥

अथ जुक्ति अलंकार

दोहा

—※—

सु है जुक्ति कीनैं क्रिया मरम छिपायौ जाय। पीव चलत अंसू चले पौंछत नैंन जंभाय॥ ४०१ ॥

कवित्त

+ + +

दंपति परस पर बोले निस बोल सोई पंजर में सूआ सुन सहज सुभाय कैं। वहैं पुन बात प्रात समैं गुर लोकन में बोलत सुन्यौ सु तब ताके ढिंग आय कैं॥ कांनन के कुंडल तें मांनक के टूक काढ दंसी कहैं

ताके आगें डारे वे दुराय कें। दारम के बीज मिस चतुर नें चातुरी सों कीनी सुक मांनी बंध निपट लजाय कें ॥ ४०२ ॥

अथ लोकोक्ति अलंकार

दोहा

+×

लोकोक्ति कछु बचन जो लीनैं लोक प्रवाद। नैंन मूंद षट मांस लौं सहियें बिरह विषाद ॥ ४०३ ॥

सवैया

—(०)—

एक ही सेज पें राधिका माधवें धाय लैं सोई सुभाय सलौंनें। राखि महाकवि कांन्ह कौं मध्य सु राधे कही यह बात नहोनें। सांवरे के संग सांवरी होऊं री बावरी बात सिखाई ए कोनें। सोनें कौ रंग कसोटी लगें पें कसोटी कौ रंग लगें नहिं सोनें ॥ ४०४ ॥

सवैया

—÷—

गई फूलन काज हौं कुंजन आज न संग सखी जु अचांनक री। हरि आय गए भज जाऊं कितैं जितही तित कांटन सों पकरी

। कवि नेही कहैं अति कांम छयी सुती मारग रोक रह्यौ तकरी । सुनरी सजनी गत ऐसी भई जैसें मारनी बैल गरी सकरी ॥ ४०५ ॥

अथ छेकोक्तिअलंकार

दोहा

—:—

लोकोक्ति कछु अर्थ सौं सो छेकोक्ती मांन । चोरी कौ गुर है सखी अति मीठौ जिय जांन ॥ ४०६ ॥

वार्त्ता

—+—

चोरी को गुर मीठो ऐसी ओखांनी प्रसिद्ध हैं ता मांझ सठ नायक सौं मांननी को उपालंभ यह अर्थांतर ठहर्यौ अथवा खैरिनी सौं सखी को परिहास

कवित्त

—•—

सरस बसंत महि पौंन मलयाचल के चलगी प्रबल यौं बियोगी दुखदाय हैं। बिकसत मालती सुगंध सन्यौ ग्रीषम ह्व गयी तौहू ताके चित्त अैवेकी चाह हैं। जोपैं घन तूं बताय चाहत मिलायबे कौं प्रेम हीन प्यारी तौ हमारी कहा जाय हैं। पायहैं बड़ाई जग

सुजस बढ़ाय हैं जु गोधन फिराय हैं सु ग्वाल कहवाय हैं ॥ ४०७ ॥

वार्ता

—०—

इहां गायन कौं फेरिहै सु ग्वाल ऐसो औ खांनो प्रसिद्ध हैं तहां मो सरीखो सुन्दर कौं छांडि विदेश कौं चल्यो हैं सो नायक पशु सरीखो हैं यह भावार्थ हैं

अथ वक्रोक्तिअलंकार

दोहा

—०—

वक्रोक्ति स्वर श्लेष सौं अर्थ फिरैं तब होय। रसिक अपूरब हो जु पिय बुरो कहत नहिं कोय ॥ ४०८ ॥

दोहा

—०—

को तुम हर प्यारी कहा बांनर को पुर कांम। श्यांम सलोंनी श्यांम कपि क्यों न हरें तन वांम ॥ ४०९ ॥

वार्ता

—+—

जहां अगलो एक बात कहैं ताहि फिर

आप स्वर विकृत सों कहि और ही अर्थ ठहरावें तहां वक्रोक्ति जैसें पहली दोहा

दोहा

० |*०

सब सांची कर मांनियें सों हैं करत जु बाल। कत सौंहै यूंहीं करी सांचे ही ही लाल ॥ ४१० ॥

वार्ता

—०—

जहां अगले की बात कौ स्लेष कर औरही अर्थ ठहरावनों तहां हु वक्रोक्ति अलंकार जैसें

कवित्त

—*—

खोलौ जू किंवार तुम कोही इति वेर हरि नांम हैं हमारो बसौ कानन पहार में। हौं हौं प्यारी माधौ तौ जु कोकिला के माधे भाग मोहन हौं प्यारी परौ मंत्र अभिचार में। रागी हौं रंगीलो तौ जु जाहु काहू दाता पास भोगी हौं छबीलो जाय बसौ जू पतार में। नायक हौं नागरी तो हांकौ क्यौं न टांडो जाय हौं तौ घनश्यांम बरसौ जू कोऊ खार में ॥ ४११ ॥

वार्त्ता

❁ | ❁

यह अविकारी श्लेष वक्रोक्ति को उदाहरन विकारी श्लेष वक्रोक्ती

सवैया

(०)

होय हैं हो मृग नैंनी यहां त्रिदशानन कौन यहैं विध ठांनी । वेगही वानर पाय हैं री विपदैं बनवास वसैं जु अयांनी । शुभ जुरैं तुव रांम रहैं न सुलच्छन संग महा अभिमांनी । ग्यारहौं अच्छर मेटि अदृच्छ प्रतच्छ कहैं विधि भावक बांनी ॥ ४१२ ॥

इतिदलपते

वंशीधरस्य

वार्ता

(०)

ये शब्द शक्तिके श्लेषतैं उदाहरन अर्थ शक्तिसौं

सवैया

❁✱❁

भिछुक गो कित कौं गिरजे सुतौ मांगन कौं बलि द्वार गयौरी । नांच नच्यौ कित हौ

भव भांम, कलिंद सुता तट नीके ठयौरी। भाजगयौ वृषपाल सुजांनत गोधन संग सदा सुकयौरी। सागर शैल सुतांन के आज पर स्यौं परिहास भयौरी ॥ ४१३ ॥

इतिदलपते

अथस्वभावोक्तिअलंकार

दोहा

स्वभावोक्ति सो जांनियैं बरनन जाति स्वभाव। हंस २ देखत फिरैं झुकत मुंहमोरत इतराव ॥ ४१४ ॥

सवैया

—०—

न्हाय तडाग की तीर सु उज्जल चीरशरीर धरैं सुभ जोती। लांबी लसैं लट चारु उरोज ज्यूं शंभुके सीस पैं नागनि सोती। पाय संकोरि नमाय कटी मुख नीचौ कियौ लटकैं नक मोती। भौंह मरोरत कोरत नैंन सु चोरत चित्त निचोरत धोती ॥ ४१५ ॥

अथ भाविकअलङ्कार

दोहा

भाविक भूत भविष्य कौं परतक्ष कहैं बनाय। वृंदावन मैं आज वह लीला देखी जाय ॥ ४१६ ॥

कवित्त

देखत सरूप प्रांन प्यारे कौ सकल अंग उमंगि उमंगि उंह भांत उमंगत हैं। वेई बन माल मोर चन्द्रका रसाल वेई वाही भांत ललचाय चाहसौं चहत हैं। ब्रज द्वार २ हरि द्वारका बतावत ही बात न कहत ऊधी लाज न गहत हैं। गायन चराय वेकौं तब बन जाते कांन्ह अब निस द्यौस नैंन आगैं ही रहत हैं॥ ४१७॥

अथउदात्तअलङ्कार

दोहा

—०—

है उदात्त संपत चरित श्लाघ्य चरित जित अंग॥ संगर शिव अर्जुन कियौ याके शिखर अभंग॥ ४१८॥

वार्ता

—※—

जहां अति समृद्धि कौ वर्नन करैं अथवा भले चरित्र सौं उपलच्छन दे प्रस्तुत बतावैं तहां उदात्त अलङ्कार॥ जैसें इन्द्र कील पर्वत के वर्नन मैं जाके शिखरपैं शिव अरु अर्जुन कौ जुद्ध भयौ ऐसैं भले चरित्र कौ उपलच्छन दे प्रस्तुत पर्वत बतायौ यह शुभ चरित्र

के उपलच्छन की उदाहरन समृद्धि की उदाहरन

कबित्त

—※—

कुंदन की भूम कोटकांगरे सुकंचन के अंचन दिवार द्वार विद्रुम अशेषके ॥ लसत पिरोजा के किंवार खंभ मांनक के हीरामय छात छाजे पन्ना छवि वेषके ॥ जटित जवाहर भरोखा पै सिर्यांनि तास २ आस पास मोती उडगन भेषके ॥ उन्नत सुमंदिर से सुंदर पुरंदरके मंदिर तैं सुंदर हैं मंदिरव्रजेषके ॥ ४१९ ॥

इति बंसी धरस्य

अथ अत्युक्ति अलंकार

दोहा

—(०)—

दांन सूर अत्युक्ति है वर्नन अतिशय रूप । जाचक तेरे दांन तैं भए कलप तरु भूप ॥ ४२० ॥

कवित्त

※※※

दिग्गज दुचित्त चित्त सोचत पुरंदर ह मेरे ह करी कौं कोउ भिच्छुक विलसै हैं । महा गज

दांन दीने बाजी बृंद चंद बली ताके दांन कोऊ बच जग हू मैं बस हैं। हाथ पर जैहैं जो उद्योत चंद जू के यह पैये कहीं फेर देखवे कों हू तरस हैं। गोय लै गनेश कों गिरीश कहैं गिरिजा सों गज के भरम लै भिखारिन बखस हैं ॥ ४२१ ॥

कवित्त

गाढे २ गढ गज धक्कन ढहावत न पावत प्रताप सम ताहि सक्क अक्क वै । चिंतामनि भनत गनत घने गुन गन सारदा गनेश शेष थक्कत अथक्क वै। नीरधि ज्यों महिमा गंभीर महा धीर बीर पावक प्रताप छीर छीरधि ज्यों पक्क वै। थप्पन उथप्पन समत्थ पातसाहन कों साहू नरनाह चहूं चक्कन को चक्कवै ॥ ४२२ ॥

वार्ता

समृद्धि को अतिशय वर्नन होय तहां उदात्त अलंकार अरु दांन सूरतादिक को अतिशय वर्नन है तहां अत्युक्ति अलंकार अतिशयोक्ति अत्युक्ति के इतनो भेद जो अत्युक्ति मैं दांन सूरतादिक गुन ही को बर्नन अरु अतिशयोक्ति मैं गुन दोष के बर्नन को। नियम नहीं।

अथ निरुक्ति अलंङ्कार

दोहा

सो निरुक्ति जब जोगसौं अर्थ कल्पना आंन। उद्धवकुबजा बस भए निर्गुन वहैं निदांन। ४२३।

वार्ता

—०—

जहां एक शब्द कौऔर ही व्युत्पत्ति ठहराय मुख्य अर्थ कौं छांड और ही अर्थ ठहरावैं तहां निरुक्ति अलंङ्कार जैसें उद्धव सौं गोपिन की बचन तहां विष्णु सत्व रज तमोगुन रहित यातैं निर्गुन ऐसें प्रसिद्ध हैं वाही निर्गुन शब्द कौं गोपिन कुबजा प्रसंग तैं विवेकहीनता ठहराई

सवैया

—०—

तो पद चारु निहारिकैं वारिज वारि मैं लाज बढाय डुबानो। देखि तो चाल बिहाल भयौ शिर डारत खेह गयंद लजांनो। तो कटि देखि कैं केहरि कूर करैं बन वास सदा बिलखानो। तो मुख संक धरैं बिधु रंक सु याही कलंक ससंक कहांनो। ४२४।

इतिवनश्री धरस्य

वार्ता

—o—

यहां ससा के लांछन तैं चंद्रमां ससांक कहा वत हैं ताहि नायका के मुख को संकतैं ससं कठहरायो

अथ प्रतिषेध अलंङ्कार

दोहा

सो प्रतिषेध निषेध जो अर्थ निषेध्यो जाय। तिच्छन बान बिनोद हैं कित वन चौपर चाय। ४२५

वार्ता

—o—

जहां एक वस्तु प्रसिद्ध ही प्रतिषिद्ध हैं ताहि कछु अभिप्राय के लिये फेर निषेध करनो सो प्रतिषेध जैसें जुद्ध सो चौपर नहीं यह सब कोई जांनत हैं तौऊ हे कितव कहैं हे जुवारी अर्थात हेसकुनी जुद्धचौपर नहीं ऐसें कह्यो सो या अभिप्राय तें कह्यो जो तिहारो मत चौपर ही मैं है परन्तु युद्ध मैं नहीं।

दोहा

—o—

रचे न विष अरु अगन तैं लोग हियैं दुख दैंन। दुर्जन ही के वचन तैं किये सुदुर्जन बैंन। ४२६।

अथ विधि अलंङ्कार

दोहा

अलंकार विधि सिद्ध जो अर्थ साधियैं फेर॥ कोयल हैं कोयल जबैं रितु मैं करिहैं टेर ॥४२७॥

वार्ता

—०—

जहां एक पदार्थ सिद्ध ही हैं ताहि कछु अभिप्राय के लियैं फेर साधनौ सो विधि जैसैं कोकिल सो सिद्ध कोकिल हैं है ताहि फेर कोकिल हैं कोकिल जबैं ऐसैं साधन कियौ सो वाकी अतिमधुर धुनि जतायवे कौं हैं

कवित्त

—०—

एरे गुनी गुन पाय चातुरी निपुन पाय कीजियैं न मैली मन काहू जो कछू करी॥ पौर नाहिं परदार गए कौ सुभाय यहैं मांन अपमांन काहू रे करी कजू करी॥ कूर एक कवि चल्यौ जात हैं सभा के बीच तौकौं तौ बटोक देवौ काहू पल दूकरी॥ द्वारैं गजराज बांधे कूकरी सभा के बीच कूकरी स कूकरी ए तू करी स तू करी। ४२८।

अथ हेतु अलङ्कार

दोहा

—०—

हेतु अलंकृत होय है कारज कारन संग। कारज कारन ए जवैं बसत ए कही अंग। ४२९। उदित भयौ शशि मांननौ मांन मिटावन मांन। मेरै रिद्धि सम्रद्धि हैं तेरी दीठ बखांन ॥ ४३० ॥

वार्ता

—०—

जहां कारन कारज के लियें कह्यौ होय तहां हेतु अलङ्कार जैसें चंद्रमा कारन मांन मेटन कारज के लियें कह्यौ

कबित्त

—०—

फैल रहे चहूं ओर चिकुर समूह घन बरषत सुमन सलिल बूंद भारी हैं। टूट परे मुकता सु राजत बलाक दल भूषन शबद मोर सोर अनु कारी हैं। पुलकित अंग फूले ललित कदंब लख दंतन के अंग इंदु बधू छबि धारी हैं। आनंदवितान भई लता उलहावन कौं प्यारी विपरीत रत पावस निहारी हैं ॥ ४३१ ॥

वार्ता

—८—

जहाँ कारन कौं कारज रूप ठहरावैं तहाँ उ हेतु अलङ्कार जैसें दीठ रिद्धि कौ कारन ताहि साक्षात रिद्ध ही ठहराई।

दोहा

—०—

कोज कोर क्ष संग्रहो कोजलाख हजार। मो संपति जदुपति सदा बिपत बिदारन हार। १३२।

इति श्रीमदखिल विद्वद्वृंद पादारविंद मकरंद मलिंद दलपतिराय विरचिते वंशीधर कवि कृतोप पुष्टावलंकार रत्नाकरे लंकार शत निरूपणो नाम द्वितीय स्तरंग: ॥ २ ॥

दोहा

—:—

करि प्रनाम तिन चरन कौं दीन्ह बुद्धि जिन देव। अलंकार औरैं कहूं प्रगट पंचदशभेव ॥ १ ॥

छप्पै

—⁐—

रसवत बहुरयो प्रेय बहुर उर्जस्वित लहियें।

समाहितहि पुनि जांन बहुरभा योदय कहियें । भावसंधि पुनिजांन बहुरहैं भाव सबलता । पुन प्रत्यक्ष अनुमांन और उपमांन प्रबलता । पुन शब्दरु अर्थापत्ति यह अनुपलब्धि संभव सहित । एतिह्यपंच दश जांन यह अलंकार सब सुकविचित ॥ २ ॥

अथरस्वत अलंकार

चौपाई

अलंकार रस्वत इम देख । रसकौअंग अवर रस लेख । कैरस अंग भाव कौ होय । यहविध जांनहु सब कविलोय ॥ ३ ॥

अथ रस्वत अलंकार कौ प्रसंपाय संक्षेप तैं रसकौ स्वरूप लिखियतुहैं

दोहा

आलंबन उद्दीपन सु द्वै विभाव कौ जात । दंपतिआदि बसंत शशि प्रमुख सुरीत गिनात ॥ ४ ॥ होय कछू जब अंग मैं चेष्टा सहज सुभाय । ताहि कहत अनुभाव सब कवि कोबिद बुधि पाय ॥ ५ ॥

कवित्त

—(०)—

आदि निरवेद १ ग्लानि १ संका १ औअसूया ४ मद ५ भ्रम ६ अरु आलस ७ यौंदीनता ८ बखानियैं। चिन्ता ९ मोह १० सुमरन ११ धृति १२ लाज १३ चपलाई १४ हरष १५ आवेग १६ त्रास १७ जडता १८ सुजानियैं। गरब १९ विषाद २० निद्रा २१ अपस्मार २२ औत्सुक्य २३ सुपन २४ रुबोध २५ मति २६ अमरष २७ ठांनियैं। व्याधि २८ विवहत्थ २९ मृत्यु ३० उग्रता ३१ वितर्क ३२ उनमाद ३३ व्यभचारी एते भाव पहिचांनियैं॥ ६॥

दोहा

—(०)—

रति रुहास पुन शोक कहि क्रोध बहुर उच्छाह। भयजुगुत्स विषमयरु समस्थाई भावजु चाह॥ ७॥ जहां विभाव अनुभाव अरु विभचारी ह्वैं संग। बाढत स्थाई भाव कौं होत तहां रस अंग॥ ८॥ हैं शृंगार अरु हास्यरस करुना रुद्र रु बीर। रस हैं भीत विभच्छ हैं अद्भुत शांत्त सुधीर॥ ९॥

वार्ता

—०—

जहां एक रस और रसकी अंगहोय अथवा

रसकाहू स्याई विभचारी भाव को अंग होय तहां रसवत अलंकार

कवित्त

—०—

रंगियतु श्रोणित सरस लपटाय रति स्वेद कनभीज अंग राग हौ लपेटतौ ॥ त्यौंहीं तौ तर फराय तोरि चित्त धीरज कौं अतही च पल जैसें नीवी कौं झपेटतौ ॥ देखौ यह आज विधहू को विपरीत तासु तापही बढावत हैं ताप तन मेटतौ ॥ पत्यसर भेच्यौ भुज भेटैं भुत्र आजमन मत्यसर भेटैं जो हमारो उर भेटतौ ॥ १० ॥

वार्ता

०—०

यहां रन मांझ भूरिश्रवाको हाथ कट्यौ हैं ताको वर्ननसौ यहां श्रृंगार रस करुना रस को अंग हैं ॥

सवैया

—०—

जल जोर महा घन घोर घटा ब्रज ऊपर कोप पुरंदरको ॥ कवि पुक्कर गोकुल गोप सवैं निरखैं मुख श्री मुरलीधर कौ ॥ धरतैं धरवौ धरनी धर को धरक्यौन हियौ धरनी धर कौ ॥ करलैं अनुकंकर कौ करको करको २ करुना करको ॥ ११ ॥

वार्ता

+ ÷ ÷

यहां अद्भुत रस प्रभु सौं जा कवि कीरति ता कौ अंग हैं ॥

अथ प्रेयअलंकार

चौपाई

(०)

भाव अंग जिहिं रस कौ होय ॥ भाव २ कौ
के अंग सोय ॥ अलंकार कहि प्रेय हितास ॥
वाहि कहत पुन भाव प्रकास ॥ १२ ॥

वार्ता

—०—

प्रेय अलंकारकौं कोउ भाव अलंकारहू कहत हैं ॥

सवैया

हौं कब वे अंगसौं अंगराग बठाय सुहाग के
पेम पगैंहौं ॥ हौंकब चंदकी चांदनी मैं मुख
चंद कौं चाहकैं तप भगैं हौं॥ हौंकब वे बडे
नैंन सौं नैंन मिलायकैं चैंन सौं रैंन जगैं हौं
॥ हौं कबवे मधुरी २ बतियां सुन कैं छतियां
सौं लगैं हौं ॥ १३

इतिवंशीधरस्य

वार्त्ता

—÷—

यहां चिन्ता व्यभिचारी भावसो शृंगार रस को अंग है

कवित्त

—०(*)०—

वारो वीर वेकों व्रज भीरें वज्र धर ग्रले बारद पठाए ग्रथा ताहि समझाय हौं। चिन्ता मनि अंगुरी के छोर गिरवर राखि गोपी ग्वाल गैयन के गनहीं बचायहौं। दूर कैं गुमान वरषा को महा मेघन को ह्वालौंमघवा कौं अवरोदन कराय हौं। वाही के हजार एक आंखन के आंसुन सौं सुन्दर पुरन्दर के मन्दिर वहाय हौं॥ १४॥

वार्ता

—०—

यहां गर्व संचारीभाव उत्साह स्थाई भावको अंग है

अथउर्जस्वितअलंकार

चौपाई

+ + +

अलंकार उर्जस्वितजांन। ताकिहुहिं

विध भेद प्रमांन । रसाभासकै भावा भास । भावरु सरसकौ अंग प्रकाश ॥ १५ ॥

दोहा

—०—

जहांसु अनुचित भाव हैं अनुचित रस जिहिं ठौर । भावा भासजु प्रथम हैं रसा भास हैं और ॥ १६ ॥

कवित्त

———

काट दल बैरिन के पाट महि मुंडनसौं कीनेयुद्ध थाट जिय शोषन अरीनके ॥ गाढे गाढे ठाहिगठ शहर लुटाय खेह खोद कैं उडाय दीनी खुरकी तुरीनके ॥ तिनहू की रांनी तजतैसी रजधांनी बन २ मैं भजत मांनी जूथजु मृगीनके । अंचत पुलिंद पद पुलकात अंग तहां बढत अनंग अंग पेखतरु नीनके ॥ १७ ॥

वार्ता

❋ । ❋

यहां श्रृंगार रसा भास सो राजा सौं जाकि कीरति ताकी अंग हैं ।

दोहा

—०—

आए सज २ प्रबल बल भरे गरब रनकाज।
तुव देखत अनु सफल भौ कहत धरैं चित लाज ॥ १८ ॥

वार्ता

❊✻❊

यहां राजा परधन्‍न को रतिभाव भावा भासो कवि कीरति को अंगहैं।

अथसमाहितअलंकार

चौपाई

—०—

होय भाव उपसम जब अंग ॥ कहत समाहित पाय प्रसंग ॥ १९ ॥

कवित्त

—०—

देखो कहा करैं मोसौं ऐसोही विचार चित्त मौन धर ठाढो रह्योरोक मुसक्यांन कौं ॥ तापैं वानैं सोच्यौ मोसौं बोलतन काहे सठ मन महिं रोसधर भर अंखियांन कौं। ऐसैंई परस मर औरैंई नजरहोत चातुरी को ताको तब कीनौ हैं विधांन कौं। ताहि समैं काहूमिस

बिहंस मैं दोनी जब तब तज धीर उन डारे अंसु आंन कौं ॥ २० ॥

वार्ता

यहां क्रोध की उपशांत सो शृंगार रसको अंग है।

अथ भावोदय अलंकार

चौपई

जहां भावकौ उदय जुलहैं। भाव उदय पुन तासौं कहैं ॥ २१ ॥

कवित्त

दामनीदमक सुरचापकी चमकश्यांम घटाकी घमक घन घोर चहु ओर तें। कोकिला कलापी कल कूजित हैं जित तित बहत समीर सीरी सीकर झकोर तें। सेना पति आवन कह्यौ ... मन भावन सुलाग्यौ. तरसावन विरह बर ...र तें। आयो सखी सावन मदन सरसावन सुलाग्यौ बरसावन सलिल घन घोर तें ॥ २२ ॥

वार्ता

यहां विषाद विभचारी भावकौ उदय सोवियोग शृंगार कौ अंग है

अथभावसंधिअलंकार

चौपाई

—❖—

भाव विरुद्ध जुरैं तिंहठौर। भाव संधि कहि कविसिर मौर॥ २३॥

दोहा

—०—

पिय बिछुरन की दुसह दुख हरष जातम्यौ सार। दुर्योधन लौं देखियतु तजत प्रांन यह बार॥ २४॥

वार्ता

—०—

यहां विषाद अरु हरष की संधि है सो वियोग शृंगार रसको अंगहै

अथभावसबलता अलंकार

चौपाई

—०—

भाव अनेकजु उपजैं आय। भाव सबलता कहत बनाय॥ २५॥

सवैया

—०—

चन्द कितैं कित छीर समुद्र सुयाहि लखें

मन नाहिं डरौंगी । वे मधुरी मधुरै मुसक्यांनकही किहिं रीति सौं धीर धरौंगी । कौन वहैं मुरली बनमाल धरैं विनकांत मिलैं न मरौंगी । ह्वै हैं कलंक अतंक कहा सखि हौं कब अंक निशंक भरौंगी ॥ २६ ॥

वार्ता

—०—

यहां वितर्क स्मृति धृति दीनता भ्रमशंका औत्सुक्य की सबलता हैं सो वियोग शृंगार को अंग हैं

अथप्रत्यक्षादिक आठ अलंकार कौ स्वरूप लिखयतु हैं

प्रत्यक्षअलंकार

चौपाई

—(०)—

इंद्रिय मन निज विषय जु लहैं ।
ताहि प्रत्यक्ष अलंकृत कहैं ॥ २७ ॥

कवित्त

—*—

तामस मैं भरे नैंन सुनत जनक बैंन कोप मृग राज ज्यौंगयंद घात करगो । राम धर नेह तोयो गरभ अछेह भर घटक पनच गो

मा टूट कें उतर गी । तनक भनक तब जान की के कान परी ठाढ़ी रही झांख पट नील सो उघर गी । चहूं ओर चांदनी मुबारक जू फैल गई मांनी राहु मुखतें छपाकर उछर गी ॥ २८ ॥

वार्ता

—०—

यहां श्रवन अरु नेत्र इनदोउन आपनो विषय शब्द अरु रूप लह्यौ यातें नेत्र प्रत्यक्ष भयो

अनुमांन अलंकार

चौपाई

—०—

कारन लहियैं लहिज बकाज । अनुमाना लंकृतइ हसाज ॥ २९ ॥

सवैया

—०—

मुत्तिय मालभई अति शीतल मंदभईपिय चंदकी जोहन । सौर चिरी चरनायुध चारु करें चहुं ओर सुनी मन मोहन । भोर भयौ अनुमांनतहों उठियें उठिग्वालन गायकों दोहन । बाल बिहाल भई तब लालसौं भाषत दीन दिवावत सौहन ॥ ३० ॥

उपमांन अलंकार

चौपाई

०ꣿ०

उपमां जवहीजैं चितलाय । उपमानाा लंकृतइहिं भाय ॥ २१ ॥

सवैया

(०)

श्यांम घटाअलकैं ललकैं बकपंत लसैं मुक्ता मुर वारी। कोकिल कंठगरा सन मोंहन भूमि हरी दरसैं हरिसारी । इंदुबधू महंदी करकी दुति दंतन दांमनिसी उजियारी । राजत आज कल्यांन कहैं रितु पावस सीनवजोबन नारी ॥ २२ ॥

शब्दअलंकार

चौपाई

शास्त्र लोक जो वचन प्रमांन । शब्द अलंकृत कहैं सुजांन ॥ २३ ॥

सवैया

—०—

शंकरसे मुनि ताहि रटैं चतुरानन आंनन च्यारतैंगावैं । सोहिय नैंकुही आवतही मत मूढ महा रसखांन कहावैं । जापर देव अदेव

भुयंगम वारत प्रांनन वारन लावैं। ताहि अहीर की छोहरियां छछिया भर छाछ कौं नाच नचावैं ॥ ३४ ॥

वार्ता

यहां शंकर से मुनिताहिरटैं इत्यादिक शास्त्र के वचन को प्रमांनता धरी है ॥

अर्थापति अलंकार

चौपाई

अलख वस्तु ठहरावैं जहां । उप पति तैं अर्था पति तहां ॥ ३५ ॥

दोहा

—०—

जद्यपि मध्यन देखियैं तज सुहैं निर धार ।
नतरक काके बल धरैं मृगलोचनि कुचभार ॥ ३६ ॥

अनुपलब्धि अलंकार

चौपाई

—०—

कछु जब वस्तु परैं नहिं जांन । अनुप लब्धि तब होय प्रमांन ॥ ३७ ॥

सवैया

❋*❋

भाषत हैं सजनी सबही जिन बाल पनैं संग केलि करी हैं। जोवन की दुत अंगन मांझ कहैं कवि रंग अनंग धरीहैं। मोहि अचंभ बडी चित हैंजु कितैं वह अद्भुत आन अरीहैं। बैंनन मैं नहिं सैंनन मैं नहिं नैंनन मैं नहिं जांन परी हैं ॥ ३८ ॥

संभव अलंकार

चौपाई

—०—

जहां बस्तु को संभव होय। संभव कहतसयांने लोय ॥ ३९ ॥

दोहा

—०—

अजन तोसम देखियतु तज सुजांनत होय। महि मंडल बहुरतनजुत कहत सयांने लोय ॥ ४० ॥

एतिह्य अलंकार

चौपाई

❋ | ❋

विनजानैं बक्ता जिंहबात। एतह्या लंकृत सुकहात ॥ ४१ ॥

दोहा

—०—

ऐहैं कंत विदेशतैं जिन जिय धरहु बिषाद ।
जीवत नर सो सुख लहत ऐसैं लोकप्रवाद ॥
॥ ४२ ॥

०*०

इति मदखिल विद्वद्वृंद पादार बिंद मकरंद मलिंद दलपतिराय विरचिते वंशीधर कवि कृतोप पुष्टा वलंकार रत्नाकरे रस प्रमांण निरूपणो नाम तृतीयस्तरंग : ॥ ३ ॥

दोहा

+ + +

जिन दिन कर के दर्शतैं भो अग्यान तमछेद ।
बरनो तूर्य तरंग मैं संसृष्टि शंकर भेद ॥ १ ॥

दोहा

अलंकार शब्दार्थतैं मिलैंजु केउआन । जुदे २ संसृष्टि है पय जिम शंकर मांन ॥ २ ॥ तिलतं दुलतरु बीज पुन दिवस सहस करन्याय । रात चौसनर सिंघ जिम मिलत परस पर आय ॥ ३ ॥ संसृष्टिजु प्रथमहिं कहैं अरु अंगांगी भाय । सम प्रधान संदेह एक बाचक प्रभिस बनाय ॥ ४ ॥

वार्ता

—(०)—

उपमादिक जैसौ अर्था लंकार अरु शब्दा लंकार कहे हैं तिनमांझतें केऊ अलंकार परस्पर मिलैं ताके दोय प्रकार एक अलंकार कौं दूसरे अलंकार की अपेक्षा न रहैं। अरु कोउ काहूकौ बाधक नहोय अपनेठौरजुदे २ प्रगट रहैं जैसें तिल अरु तंदुल मिलजाय तऊ अपने २ रूपसौं जुदे २ दीखैं तिहिं ठौर संसृष्टि कहियें अरु दूधजल ज्यौं परस्पर लीन होय तहां शंकर कहियें वाके च्यारभेद। अंगांगी भावशंकर १ सम प्रधान शंकर २ संदेह शंकर ३ एक वाचनु प्रवेश शंकर ॥ ४ ॥ अंगांगी भाव जैसें बीज अरु वृक्ष जैसें बीज वृक्षकौ कारन हैं तैसें एक अलंकार दूसरे अलंकार कौ अंग होय तहां अंगांगी भाव शंकर १ सम प्रधान जैसें दिवस अरु सूर्य दोनौं साथही प्रगटैं तैसें दुहूं अलङ्कार साथही भाषैं तहां सम प्रधान शंकर २ संदेह जैसें रात अरु द्यौस द्यौस होय तब रात न होय अरु रातहोय तब द्यौस न होय ऐसैं दोय अलंकार संभवैं तहां एक मिटाय दूसरो संभवैं अरु दूसरे कौं मिटाय पहलौ संभवैं ऐसैं अलंकार और अलंकार कौ बाध नकरैं तहां संदेह शंकर ३ एक वाचकानु प्रवेश जैसें नृसिंह स्वरूप

एक शरीर मैं नरकी अरु सिंहकी आकार ऐसें एकपद वाक्यमैं दोय अलंकार हैंाय तहां एक वाचकानु प्रवेश संकर ४ संसृष्टि के तीन भेद अर्थालंकार संसृष्टि १ शब्दा लंकार संसृष्टि २ उभया लंकार संसृष्टी ३ क्रमसैं

कवित्त

—०—

रैंनकी उनीदी राधे सोवत सकारो भएं झीनों पटतांन रही पायन लौं मुखतें ॥ सोसतें उलट बेंनी भालह्वैकें उरह्वैकें जानुह्वैकें छीयनसौं लागी सुधिरुख तें ॥ सुरत समररीत जोबनकी जेब जीत सिरोमन कहैं अलसाय रही सुखतें ॥ हरकों हराय मनों मैंन मधुकरन की धरी हैं उतार जिंह चंपेके धनुषतें ॥ ५ ॥

वार्ता

——

यहां पर्याय उत्प्रेक्षा की संसृष्टि है । दूजैंशब्दा लंकारकी संसृष्टि ।

कवित्त

—()—

पीकहीकी लीक उरलीक सी लगी हैं लाल लीकमिट मेरी तुम और लीक पागे हो। आर सीले देखो नेंकु आरसी भए हो। कित आरसो

लगत मुकरत मेरे आगेहै ॥ कपटी महा डर महा डरतें जानियत जाय गहै पाय जाके जा के पाय लागे है ॥ भीरहीतें भीरवन २ आए मो हि कौंन पतनी के पतनीके निशजागे है ॥ ६ ॥

वार्ता

—०—

यहां जमक छेकानुप्रासकी संसृष्टि है तोजें शब्द अर्थ अलंकार की संसृष्टी ॥

कवित्त

—०—

इन्द्र जिम जंभ परवारवसु अंभ पर रावन स दंभ पर रघु कुल राज हैं ॥ पौन वारि वाह पर शंभूरति नाह पर ज्यौं सहस्र बाहु पर रा महज राजहैं । दावा द्रुम दंडपर चीता मृग झुंडपर भूषन वितंड पर जैसें मृगराज हैं ॥ ते ज तम अंश पर कान्ह जिम कंसपर यौं मलेच्छ बंस पर शेर शिव राज हैं ॥ ७ ॥

वर्ता

—०—

यहां लाटानु प्रास उपमा की संसृष्टी हैं ।

इतिसंसृष्टिसमाप्तः

अथअंगांगी भावशंकर

कवित्त

—÷—

अंसु दसननि लीलैं लेत हैं कलेवर कौं मंत्र हू न मांनत सिखयौ पंच शरकौ । अलि गुंज रत फुंकरत मिस कुपित ह्वै कछौई चहत प्रांन प्रांन वपुवरकौ । कहैं दया देव जीलौं निकट न आवत ए तौलौं तुम काहे जप तौन नांम हरकौ । शिखरतैं निरख सुरेश आशा शिखरतैं मांनौं इन्दुफन हैं विरह विष धरको ॥ ८ ॥

वार्ता

यहां रूपक उत्प्रेक्षा कौ अंग हैं क्योंकि विरह को विषधरसौं रूपक कौनो न होतौ तौ चन्द्रमां कौं फनको उत्प्रेक्षा अवलंब बिनु बनतो नहीं

सवैया

—०—

उदयाचल गह्वरतैं निकस्यौ गह गाढ बनौ हियरोष अमंदजु । किरनैंनसतिच्छन चंचल चारु चपेट चुकैं नहिं आपने फंदजु । चहुं ओर चकोर करैं मिल सोर सुगावत हैं जन ज्यौं जस छंदजु । मनु मुत्तिय ए उड वृन्द हन्यौ तमतोम गयंद हि चंदमयंदजु ॥ ९ ॥

वार्ता

—(+)—

यहां रूपक उत्प्रेक्षाको अंग हैं जो तमको करीसौं अरु चंद्रको केसरीसौं रूपक कीनो न होय तो तारा वृन्दकों मोती को उत्प्रेक्षा बनै नहीं

कवित्त

—+—

गैंवर गरट्ट साज हैं वर सघन रथ पैदल के थट्ट चढ़ी फौज तुरकांनिकौ । भूषन भनत तासौं चंपत के सत्रु साल रच्यौ रन ख्याल ह्वै कैं ढाल हिंदवांने को । कैयक हजार इक वार मार डारे बैरी रंजक दगन मांझ अगन रिसांने को । शेर अफगन सेन सगर सुतन लागी कपिल सरापज्यौं तराप तोपखां नेको ॥ १०॥

वार्ता

—०—

यहां रूपक उपमा को अंग हैं जो शेर अफगनखां की सेनको सगर सुतन सौं रूपक न करते तो तोपखांना को तरापकों कपिल सराप को उपमा बनतो नहीं

इतिअंगांगीशंकरसमाप्त :

अथसमप्रधानशंकर

दोहा

—०—

निश फैलत चहुं वांचितैं विच अंबर उड जाल । दिशकौ विधुकर परस मनु टूटी मुत्तिय माल ॥ ११ ॥

वार्ता

—०—

यहां उड जाल कौं दिशाकी टूटी मोती माल कौ उत्प्रेचा करत तत्छन कर अंबरादिक शब्द के स्लेषसौं चंद्र अरु दिशाके दंपत भावकौ समासोक्ति कौं लियें ही उत्प्रेचा हैं

सवैया

—०—

बैठी कलाधर मौंन सुकौंन मैं केलिके भांन कौ खोल दरीचैं । चंग अवाज चकोर समाज करैं मन मोद धरैं महि वीचैं । अंबर नील लसैं तहां चन्दकी चारु छुटी चहुं धांरस सीचैं । इन्द्र दिशा धरनी धरपैं मनु फैलत लाल गुलाल मरीचैं ॥ १२ ॥

वार्त्ता

—०—

यहां मरीचन कौं गुलाल की उत्प्रेचा

सौं इन्द्र दिशा अरु धरनी धरादिक शब्द के बलसौं कोई कांमी पुरुष काहूको स्त्री श्यांम वस्त्र पहरैं ठाढ़ी रहैं ताके कुच पर गुलाल डारत हैं ऐसी समासोक्ति कौं लीने ही उत्प्रेक्षा हैं ताको अंग अंबरादिक शब्द को श्लेष अरु धरनीधर शब्द को रूपकातिशयोक्ति हैं

इतिसमप्रधानशंकरसमाप्त:

अथसंदेहशंकर

कवित्त

—०—

नील मनि दीपतैं जु होय धूम धार ताकी स्याही सौं सघन श्यांम चिहुर बनायकैं। जब लैं जमाललाल प्रगट प्रवाल बाल सार सौं अधर रंग भरैं चित्त लाय कैं। एहो प्रांन प्यारी तेरे आंनन अनूप रूप तूलनवत्यौंही छबि रचैं सरसाय कैं। सुख सासरोज सार सरस बनावैं जब चतुर चितेरो चंद चहरा चढ़ाय कैं॥ १३॥

वार्ता

—०—

इहां जो इतनी सामग्री होय जब नायका को चित्र बनैं इतनो आशय तौ संभावना

अलंकार अरु इतनी सामग्री मिलैंऊ नहीं वाको चित्र बनैऊ नहीं ऐसो कविको आशय होयतो मिथ्याध्यवसति अलंकार ऐसैं परस्पर मिटाय कैं सोसो अलङ्कार संभवैं यातैं संदेह संकर

कवित्त

—०—

फूलन बसीले जाके फलन रसीले छित छांह के नसीले पंथ पंथी सुखदाई हैं। विट पन कांमदार निपट निकामढार वड़े नाम दार पूखी अधिक उंचाई हैं। भूल्यो भ्रम सूआ अंतपायो फिर रूआहाख्यो खेल जिम जूआ जिय अग्नि लगाई हैं। जगमैं जनम जो पैं काहूकै न काम आवैं कहा सठसैं वरकै बढ़ेकी बड़ाई हैं ॥ १४ ॥

वार्ता

—०—

यहां कविके प्रस्तुत सैंवर वृत्तको वर्नन होय तो सारूप्य सौं अप्रस्तुत दुर्जन के वृत्तांत को प्रतीत होत हैं यातैं समासोक्ति अलं कार अथवा प्रस्तुत दुरजनही हैं ताको वृत्तांत जतायवे कौं अप्रस्तुत सैंवरको वृत्तांत धयो हैं तो अप्रस्तुत प्रशंसा अथवा पाससैंवरहूको वृक्ष हैं अरु दुर्जन हू निकट बैठो हैं तहां

सैंवरहु कौ वर्नन और दुर्जन हु कौ मरम प्रकाशन ए दोई प्रस्तुत यातैं प्रस्तुतांकुर एसैं यहां तीन हु अलंकार कौ संदेह शंकर हैं

इतिसंदेहशंकरसमाप्तः

अथएकवाचकानुप्रवेशशंकर

वार्ता

—०—

एक वाचकानु प्रवेश शंकर कौं केउ शब्दालंकार अर्थालंकार हो के संजोग सौं कहत हैं

सवैया

+०×

केतकि धूर धरैं सिर पूरन गुंजत मंजु सु कुंजन मैं। दांनझरैं मधुनीर समीर जंझीर सु आवत हैं छन मैं। मत्त कुव्यौ नव पंकज थांनतैं दर्प अखंड धरैं मन मैं। तोरकैं सोर भ शृंखल कौं यह भृंग मतंग फिरैं बन मैं॥ १५॥

वार्ता

—ஃ—

यहां छेकानुप्रास अरु रूपक कौ शंकर हैं जहां शब्दालंकार अरु अर्थालंकार जुदे २ होय तहां एक वाचकानुप्रवेश शंकर भंग

मतंग यह कर्म धारय समास करि एकही पद हैं ताही मैं छेकानुप्रास अरु रूपक दोनूं मिले यातैं एकवाचकानुप्रवेशशंकार अरु कुवलयानन्द के करतानैं तौ अर्थालंकार ह्न मैं ठहरायो है

दोहा

०—※—०

शोध श्रवत शशि मिल सलिल बाढत स्रोत तरंग । उदयैं इंदु सतीन को रीत न छांडत गंग ॥ १६ ॥

वार्ता

—※—

यहां समृद्धि के वर्नन तैं उदात अलंकार और अजोग्यकौं जोग्य यातैं संबंधातिशयोक्ति ए दोई अलंकार को शंकर है जिनहीं शब्दन कर उदात अलंकार होत है तिनहीं शब्दन संबंधातिशयोक्ति होत है कोउ कहैं दोउन की संसृष्टि है ताको समाधान संसृष्टि मैं तो अलंकार के सूचक शब्द जुदे २ होंय अरु यहां जिन शब्दन कर उदात को सूचक तिहीं कर अतिशयोक्ति को सूचन सो कोउ अंगांगी भाव शंकर कहैं सोभी नहीं क्योंकि कोउ काहू को अंग नांहीं क्योंकि सम प्रधान शंकर कहै सोउ नहीं क्योंकि सम प्रधान

शंकर मैं दोई अलंकार साथ भाषैं परन्तु दुहूंन के सूचक शब्द जुदे २ होंय अरु यहां तौ वेई शब्द दुहून के सूचक हैं कोउ संदेह शंकर कहैं सोउ नहीं क्योंकि दोई अलंकार मांझ तैं कोउ काहू को बाधक होय तौ संदेह शंकर संभवैं यातैं पहिले न्यारहु संसृष्टि शंकर अलंकार तैं एकवाचकानुप्रवेश शंकर न्यारो ई ठहर्यो जैसैं विहाग राग अरु केदारा राग को सुर एक मिलैं हैं तैसैं जिन २ अलंकार की छाया मिलैं ताको स्वरूप अलंकार शिखर यंत्र मैं लिखियतु हैं ।

इति एक वाचकानुप्रवेश
शंकर समाप्तः

वार्त्ता

—o(*)o—

कहूं शंकर को शंकर देखियतु हैं ।

सवैया

—(o)—

कवि खेलत फाग सु नारिन संग अनंग तरंग महा सरसैं । तहां तुट्टियमुत्तिय माल विशाल उरोजन तैं करकैं परसैं । गिरिभूमि गुलाल तैं लालभए सु तौ दारम जांन सुआ करसैं । लखि सो यह साहजिहां जग नाह, के दांनहिं की महिमा दरसैं ॥ १७ ॥

वार्त्ता

यहां कवि की समृद्धि कही यातें उदात्त-अलंकार उदात्त के आश्रय सौं मोती गुलाल करि लाल भए यह तद्गुन अलंकार और यही ललाई सूआ के भ्रम की समर्थक यातें काव्यलिंग अलंकार सो यहां एकही लाल शब्द करिकें तद्गुन अरु काव्यलिंग की सूचन हैं यातें दुहुन को एकवाचकानुप्रवेशशंकर ता करिकें दारम जान सूआ कर सैं इह भ्रांति अलंकार एकवाचकानुप्रवेशशंकर अरु भ्रांतिमान अलंकार इन दुहुंन मिलिकै उदात्त अलंकार की सुंदरता कीनी यातैं अंगांगीभाव शंकर हैं ऐसी कवि की संपत सोई कार्य अरु शाह जिहां की दांन महिमां सो कारन ए दोई धरे हैं। यातैं हेतु अलंकार अथवा प्रश्नोत्तर छतैं कविकी संपति करि शाहजिहां की संपत प्रस्तुत होय तौ कारज निबंधना अप्रस्तुतप्रशंसा अथवा दुहुंन की संपत प्रस्तुत होय तौ प्रस्तुतांकुर अलंकार ऐसैं इन तीनूं अलंकारन कौ संदेहशंकर कवि की संपति को वर्नन तहां देत अजोगहिं जोग या लच्छन तैं संबंधातिशयोक्ति अलंकार के अरु उदात्तअलंकार के एक वाचकानुप्रवेश शंकर अरु कवि संपत और राजा की दांन इन दोई कार्य कार्न करि कैं तौ हेत्व-

लंकार तासौं अद्भुत उदारता कौ वर्नन सोई अत्युक्ति अलंकार ऐसैं एक बाचकानु-प्रवेश शंकर वाके आश्रय सौं कवि कौ संपत रूप कार्य के द्वारा राज संपत रूप कारन प्रस्तुत होय तौ कारजनिबंधनाअप्रस्तुत प्रशंसा अथवा कवि संपत और राजा कौ संपत दोई प्रस्तुत होय तौ प्रस्तुतांकुर सो इहां अप्रस्तुत-प्रशंसा अरु प्रस्तुतांकुर के संदेह शंकर हैं सो राजा को संपति वर्नन उदात अलंकार व्यंग हैं ता करि एक बाचकानुप्रवेश शंकर, हैं या रीत सौं यहां तीन हू एकबाचकानुप्रवेश को सम प्रधान शंकर हैं । क्योंकि इन तीनहू शंकर मांझतैं कोउ काहू को अंग नाहीं या प्रकार यहां च्यारहु शंकरन को शंकर हैं उदात्त १ अतिशयोक्ति २ तद्गुन ३ काव्यलिंग ४ भ्रांत ५ हेतु ६ अप्रस्तुत प्रशंसा ७ प्रस्तुतांकुर ८ अत्युक्ति ९ ऐसैं नव अलंकार या सवैया मैं धरे हैं ऐसैं औरहू उदाहरन विचार लीजियौ ।

इति श्रीमदखिल विद्वद्वृंद पादार-विंद मकरंद मलिंद दलपतिराय विरचिते वंशीधर कवि कृतोपपुष्टाव-लंकार रत्नाकरे शंकर निरूपणो नाम चतुर्थः स्तरंगः ॥ ४ ॥

इति अलंकाररत्नाकर ग्रंथ संपूर्णम् ॥

मिश्रित अलङ्कार

लुप्तोपमा रूपक	सन्देह विकल्प	छेकापन्हुति व्याजोक्ति
निदर्शना रूपक	तुल्ययोगिता दीपक	परिकर काव्यलिंग
पर्यायोक्ति गूढ़ोत्तर	व्याजस्तुति अधिक	विषम विषाद
सम प्रहर्षण	अन्योन्य परिवृत्ति	पर्याय विशेष
समुच्चय कारकदीपक	संभावना मिथ्याध्यवसति	मीलित सामान्य
उनमीलित विशेष	गूढोत्तर गूढ़ोक्ति	चपलातिश० विभावना १
व्याघात १ विभावना ४ विषम २	समासोक्ति अप्रस्तुतप्रशंसा प्रस्तुतांकुर गूढ़ोक्ति	विभावना ३ विशेषोक्ति अवज्ञा अतद्गुन पूर्वरूप

शुद्धा शुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	७	वननं	वर्नंन
२०	१०	ओटि	ओठि
३१	१५	धमकी	धूमकी
३४	५	दूसासान	दूसासन
३४	१०	जुदपति	जदुपति
३८	१५	अरोपन	आरोपनं
४५	४	तेसनकी	वेसनकी
४६	१२	जानतरूप	जानतनरूप
६४	२	कहो २	कहि २
७३	१	लीहैंहैं	लीन्हैंहैं
७३	५	तैमैं	तैसैं
८२	१७	करत	कर
८२	१८	काहुपुरे	काहुवापुरे
८३	१४	गंजके	गुंजके
८४	१६	सुरासुर	सुरासुर
८८	६	बारी	चावरी
१०५	१	पवग	पवर्ग

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२१	१३	विरोधि	विरोधी
१३६	१८	जिनक	जिनकी
१४३	२	निर	नीर
१४५	१७	इतनो	इतनी
१५५	१६	कुंजको	कुंजको
१६२	२	और	औरैं
१६२	४	आपही	आपनी
१६८	६	कलि	केलि
१७४	३	दिहन	दुहन
१७३	१४	नहारी	निहारी
१८७	१५	तप	ताप
१९९	११	ठाहिगठ	ढाहिगढ
२०८	१२	बाचमु	बाचकामु

—०—

प्रकटहोकि

श्रीअधीश मेवाड़की आज्ञा
से यह पुस्तक रजिष्ट्री
कीगई
इस कारण कानून २०
सन् १८४७ ई० बमूजिब
साहित्य सभा की
आज्ञा के विना
कोई न छापे

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 23 January, 2019